के लौह पुरुष पंडित नरेन्द्र

ओ३म्

हैदराबाद के लौह-पुरुष
पंडित नरेन्द्र

*

सम्पादक मंडल :

लक्ष्मीनारायण गुप्त
मधुसूदन चतुर्वेदी
गुरुचरणदास सक्सेना
रामचन्द्रराव कल्याणी
ज्ञानचन्द्र वर्मा
सत्यनारायण गुप्त (चेलापुरा)
रामविलास मोदाणी
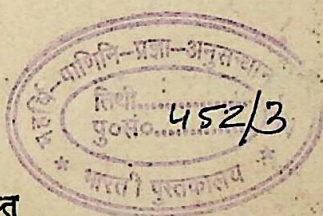
प्रकाशक :

छगनलाल विजयवर्गीय
संयोजक पं. नरेन्द्र अभिनन्दन समिति, हैदराबाद.

आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह
के शुभ अवसर पर

❋

प्रथम संस्कर : ११ मई, १९७५

❋

मूल्य : 10/- रुपये

❋

मुद्रक : मधु प्रिंटर्स, हैदराबाद (हिन्दी)
दीपक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद (हिन्दी व अंग्रेजी)
गोल्डन प्रेस, हैदराबाद (मुख पृष्ठ)

अनुक्रमणिका

पंडित नरेन्द्रजी : जीवन झांकी

जन्म १० अप्रैल, १९०७ को श्रीराम नवमी के शुभ दिन हैदराबाद नगर में

पिता का नाम : राय केशवप्रसाद सक्सेना

माता का नाम : श्री गुणवंती देवी

१९३१ स्वदेशी आंदोलन तथा आर्य समाज के कार्यों में भाग लेना आरंभ।

१९३२ से सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक उत्थान के कार्यों में योगदान तथा दलित वर्ग, आदिवासी एवं हरिजनोद्धार की गतिविधियों में सक्रिय।

१९३६ आर्य समाज सुलतान बाज़ार के मंत्री निर्वाचित।

१९३८ सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण राजनैतिक बंदी के रूप में ३ वर्ष की 'काला-पानी' की सज़ा। हैदराबाद राज्य के अंदमान मन्नानूर, जि. महबूबनगर में रखे गये।

१९४० आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के मंत्री निर्वाचित।

१९४४ इंटरनेशनल आर्यन लीग के उपाध्यक्ष बने।

१९४५ निज़ाम राज्य के द्रोही ठहराये गये। राजनैतिक सभाओं तथा आंदोलनों में भाग लेने, भाषण देने आदि पर प्रतिबंध। एक वर्ष का कारावास।

१९४६ हैदराबाद राज्य स्टेट कांग्रेस के मंत्री के रूप में कार्य किया। स्टेट कांग्रेस के ऐतिहासिक मुशीराबाद अधिवेशन के मंत्री।

१९४७ दि. ३१ जुलाई को बंदी बनाये गये तथा हैदराबाद सेंट्रल जेल में स्व. बी. रामकिशनराव, स्व. स्वामी रामानन्द तीर्थ आदि के साथ रखे गये।

१९४८ १४ महीने और ५ दिन के कारावास के पश्चात दि. १६–९–१९४८ को रिहा।

१९४९ निज़ाम राज्य की मुक्ति के बाद से हिन्दू मुसलमान साम्प्रदायिक एकता के कार्यों में व्यस्त। राज्य कांग्रेस कमिटि के सदस्य। आन्ध्र बी. प्राविंशियल कमिटि के अध्यक्ष। अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हैदराबाद अधिवेशन में राष्ट्रभाषा परिषद के स्वागताध्यक्ष।

१९५० आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के प्रधान निर्वाचित। हैदराबाद जिला कांग्रेस कमिटि के सन् १९५४ तक अध्यक्ष। हैदराबाद राज्य कांग्रेस कमिटि की कार्यकारिणी के सदस्य। गुमास्ता संघ के अध्यक्ष।

१९५२ हैदराबाद राज विधान सभा के सदस्य निर्वाचित।

१९५३ अ. भा. कांग्रेज कमिटि के नानलनगर, हैदराबाद अधिवेशन के स्वागत मंत्री।

१९५६ प्राच्य भाषा महाविद्यालय की स्थापना। संस्थापक अध्यक्ष।

१९६३ खादी एण्ड विलेज इंडस्ट्रीज़ बोर्ड, आन्ध्र प्रदेश के मेम्बर सेक्रेटरी सन् १९६५ तक।

१९६५ हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के अध्यक्ष निर्वाचित

१९६६ हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद की रजत जयती समारोह के स्वागताध्यक्ष। गौ रक्षा आंदोलन दिल्ली के सत्याग्रह में भाग लेने से एक महीने का कारावास।

१९६७ आं. प्र. हिन्दी सम्मेलन के स्वागत मंत्री।

१९६८ स्वागताध्यक्ष अष्टम आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद।

१९७१ आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह समिति, नई दिल्ली के सयोजक मनोनीत।

१९७३ आर्य महा सम्मेलन के सफल आयोजन हेतु एक महीने तक मारीशस में निवास।

हैदराबाद के लौह पुरुष
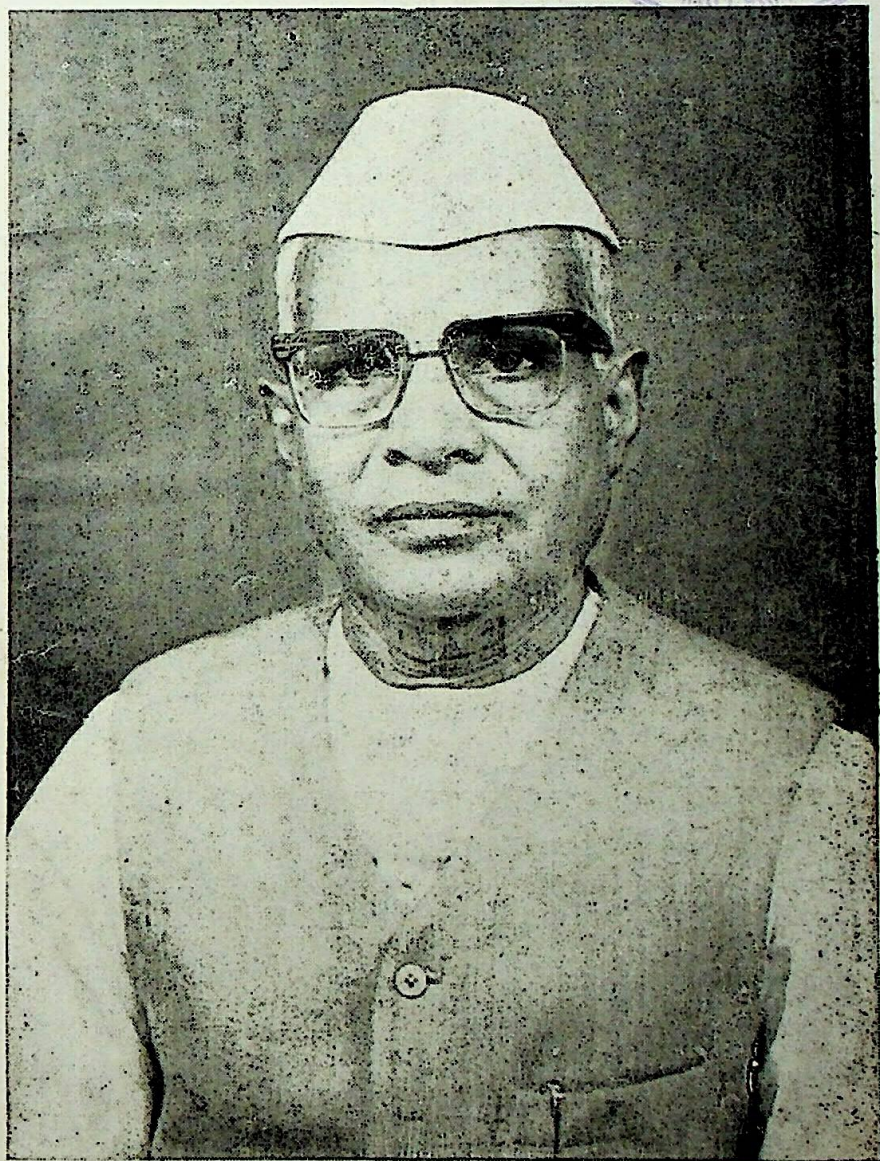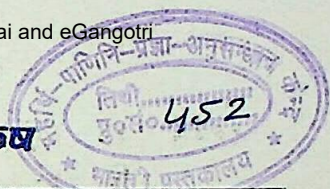
पं. नरेन्द्र जी
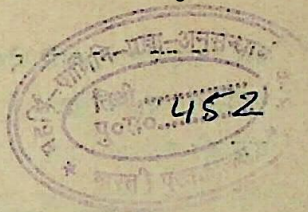
सम्पादक मंडल की ओर से

श्रद्धा के सुमन

प्रमुख स्वाधीनता सेनानी, नवयुवक हृदय सम्राट तथा हैदराबाद के लौह-पुरुष पं० नरेन्द्रजी अपने यशस्वी जीवन के ६८ वर्ष समाप्त कर मिति चैत्र शुक्ल ९ स. २०३२ (श्रीराम नवमी) को ६९ वें वर्ष में पदार्पण किये हैं। आपने लग-भग अर्ध शताब्दी से भी अधिक समय से अपने आपको जनता-जनार्दन की सेवा में समर्पित कर रखा है। ऐसे त्यागी व निष्काम सेवक के अभिनन्दन का आयोजन कर हम 'पूज्य-पूजा' के अपने कर्तव्य का ही पालन कर रहे हैं। वास्तव में यह कार्य तो हमें बहुत पहले ही करना चाहिए था।

पं० नरेन्द्रजी ने हिन्दू जाति (आर्य जाति) की गौरव-गरिमा को अपने प्राणों तक की बाजी लगाकर अक्षुण्ण बनाये रखने में योगदान दिया। ऐसे शूर-वीर का सत्कार कर हम अपने आपको गौरवशाली मान रहे हैं। निजाम के निरंकुश शासन में जनता का स्वात्माभिमान सो गया था, उत्साह-साहस क्षीण हो गया था। किसीने अपने आप को, निजाम के हाथों बेचा नहीं था, फिर भी सब निजाम के गुलाम से हो गये थे। ऐसी स्थति में पं० नरेन्द्रजी अकेले ही निर्भय होकर निरंकुशता से लोहा लेने के लिए आगे बढे और मन-वचन-कर्म से जनता को निर्भयता का मंत्र पढ़ाया। धीरे-धीरे लोगों के हृदय से निजाम का आतंक दूर होने लगा, उनकी आत्म-दुर्बलता नष्ट होने लगी, झुके हुए मस्तक उठने

लगे, लड़खड़ाने वाले पैर सम्भलने लगे और लोग स्वराज्य-विजय के लिए पं. नरेन्द्रजी के कुशल नेतृत्व में मर-मिटने के लिए कटिबद्ध हो गये।

'सर कटा सकता हूँ, लेकिन सर झुका नहीं सकता' वाली भावना के प्रतीक पं. नरेन्द्र जी के संबंध में महात्मा आनन्द स्वामीजी सरस्वती ने लिखा है कि वे 'जिन्दा शहीद' हैं। भारतीय संस्कृति सदैव से 'वीर-पूजा' की समर्थक रही है। प. नरेन्द्र जी का अभिनन्दन भी इसी का प्रतीक है।

पं. नरेन्द्र जी में एक विशेष गुण पाया जाता है कि–'नेकी कर दरिया में डाल' जिसे हम निष्काम सेवा की संज्ञा दे सकते हैं। इस गुण के कारण वे दीन–दुखियों, अनाथ व निर्बल लोगों की सहायता एवं सहयोग करने में कभी आगे पीछे नहीं देखते। आपने एक कर्मठ, दृढ़निश्चयी योद्धा के रूप में समाज तथा राष्ट्र की हर प्रकार की सेवा की है, जिसे सदा आदर की दृष्टि से देखा जायेगा।

राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यों को आप अलग अलग आयामों से पूर्ण करते रहे हैं। महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी के रूप में समाज में व्याप्त संकीर्णता को, जाति पांति के वैमनस्य को समाप्त करने में आपका बहुत बडा योगदान रहा है।

पं नरेन्द्रजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आप ओजस्वी वक्ता, लेखक, पत्रकार के रूप में भी जाने–माने जाते हैं। समाज को प्रगति तथा विकास की ओर अग्रसर करने वाली प्रत्यक प्रवृत्ति में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया है।

दक्षिण में आर्य समाज के प्राण, वीर स्वाधीनता सेनानी, हिन्दी के अनन्य सेवक, गो-रक्षण के हिमायती एवं खादी तथा हरिजनों के उद्धारक आदि अनेक रूपों में हम–आपके दर्शन करते हैं।

हैदराबाद राज्य विधान-सभा के सदस्य के रूप में भी आपने जनता की भावनाओं का सही प्रतिनिधित्व किया है। समय-समय पर उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु आप सदैव सजग, सचेत रह कर राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार को लोकतन्त्र में जन-जन की भावनाओं के अनुरूप कार्य करने की सलाह देते रहे हैं। गो-हत्या बन्दी तथा राजभाषा विधेयक को लेकर सरकार की नीतियों का विरोध प्रकट करने में आप किसी से पीछे नहीं रहे। एक निर्भीक, निडर कर्मयोगी की भांति सदा जूझते रहते हैं।

हैदराबाद नागरिकों की ओर से 'पं. नरेन्द्र, हैदराबाद के लौह पुरुष' नामक इस पुस्तक के प्रकाशित करने का उद्देश्य एक ओर प. नरेन्द्र जी का अभिनन्दन तथा सम्मान करना है तो दूसरी ओर वर्तमान युवा पीढी तथा भविष्य में आने वाली नई पौध को यह बतलाना है कि देश को स्वतन्त्रता कितनी महंगी पडी है इसके लिए कैसे-कैसे त्याग और बलिदान किए गए है, यह उसकी एक कडी मात्र है। पण्डित जी का जीवन 'एक खुली पुस्तक हैं' इससे कोई भी व्यक्ति न केवल शिक्षा ग्रहण करेगा अपितु राष्ट्र और समाज की सेवा के लिए प्रेरणा मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकेगा।

किसी विद्वान ने कहा है कि "जीवन एक कला है जो उत्तम प्रकार से जीवन यापन करता है वह एक बड़ा कलाकार है। इस माने में पंडित नरेन्द्र जी एक सफल व कुशल कलाकार हैं। उन्होंने अपने जीवन को ही सफल नहीं बनाया है अपितु अन्य लोगों को भी जीने की कला अपनें रहन सहन, सादगी, विनम्रता, साहस और धैर्य, के कर्मों द्वारा सिखाई है।

मधुर-भाषी, सरल स्वभाव, सौहार्द पूर्ण व्यवहार, निरभिमानी, और निःस्वार्थी होने के कारण लोग उनकी ओर अनायास ही आकर्षित हो जाते है।

हम सहृदय लेखकों का हृदय से आभार मानते हैं जिनके सहयोग के कारण ही इस पुस्तक को साकार रूप प्रदान किया जा सका। वैसे इस ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना पिछले दो–तीन वर्षों से चल रही थी परन्तु अनेक कारणों से इसे शीघ्र पूरा नहीं किया जा सका।

इस बीच सम्पादक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य आदरणीय श्री लक्ष्मीनारायणजी गुप्त का असामयिक निधन हो गया, उनकी बड़ी तीव्र इच्छा थी कि यह कार्य यथा शीघ्र पूर्ण हो जाए। परन्तु उनके जीवन काल में इस पुस्तक का प्रकाशन पूर्ण नहीं हो पाया, जिसका हम सभी को खेद है। श्री गुरुचरण दास सक्सेना ने इस कार्य को प्रारम्भ कर बहुत आगे बढ़ाया परन्तु उनका इन दिनों स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने के कारण वे इसकी पूर्ति में सक्रिय भाग नहीं ले सके। परमात्मा उनको स्वास्थ्य प्रदान करें।

इस पुस्तक के मुद्रण कार्य के लिए हम श्री रामपाल अट्टल, मधु प्रिन्टर्स, श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी, दीपक आर्ट प्रिन्टर्स तथा श्री रामस्वामी जी, गोल्डन प्रेस वालों के अत्यंत आभारी हैं।

इस पुस्तक में त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक ही है। हम विद्वान तथा सहृदय पाठकों से कर-बद्ध, विनम्रता पूर्वक क्षमा चाहेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि वे हमारी विवशता को समझेंगे। हम जिस रूप में इस ग्रन्थ को प्रस्तुत करना चाहते थे उस रूप में प्रस्तुत नहीं कर सके। साज–सज्जा, आकार–प्रकार सभी दृष्टि–कोणों से कमी का हम अनुभव करते हैं। आशा है सुविज्ञ पाठक इसे सहृदयता-पूर्वक ग्रहण करेंगे।

अंत में हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि पंडित नरेन्द्र जी को स्वास्थ्य दीर्घायु प्रदान करें। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ हम पुस्तक उन्हें समर्पित करते हैं।

स्वाधीनता सेनानी : पं नरेन्द्र जी
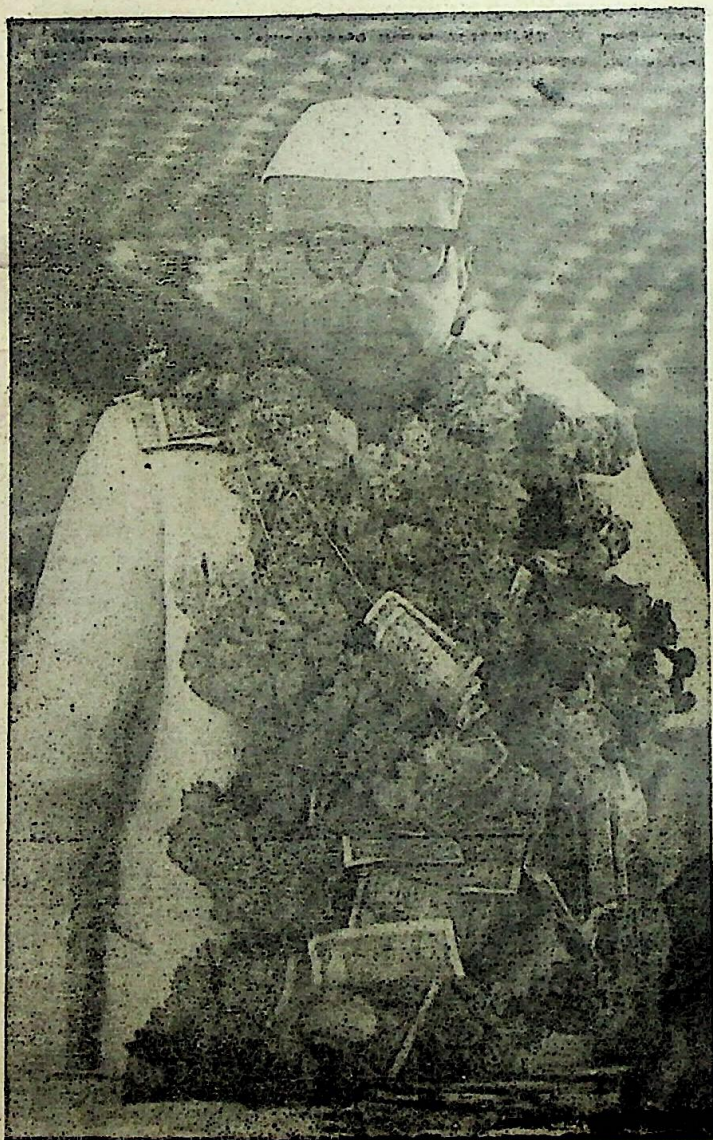
पं. नरेन्द्र जी 'षष्ठि पूर्ति' के अवसर पर पुष्पमालाओं से लदे हुए।

शुभकामनायें

—सेठ गोविन्ददास

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के संचालक रूप में पं. नरेन्द्र से मेरा वर्षों का परिचय और सम्बन्ध रहा है। अनेक बार वे मेरे सम्पर्क में आये और जब भी मैं हैदराबाद गया उनके काम को उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों को निकट से देखने का अवसर मिला। वैसे भाषा के क्षेत्र में उनके हिन्दी प्रेमी होने और इस क्षेत्र में उनकी निष्ठावान हिन्दी सेवा के कारण मेरा उनके प्रति आदर भाव तो था ही किन्तु जब उनके जीवन के अन्य सांस्कृतिक कार्यों के सम्बन्ध में मुझे जानकारी मिली तो मेरा यह आदरभाव और बढ़ गया। यद्यपि भाषा किसी भी देश की संस्कृति की एक कड़ी होती है, भाषा से ही संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है : और संस्कृति में ही भाषा के प्राणवान् तत्व समाविष्ठ रहते हैं और इसीलिए कोई भी मातृभाषा प्रेमी संस्कृति प्रेमी तो होगा ही। संस्कृति और भाषा को दो भिन्न नियमों के रूप मे अलग नहीं किया जा सकता और इसीलिए पं. नरेन्द्र देश के दक्षिणी आंचल में भाषा और संस्कृति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण धुरी के रूप में वर्षों से बड़ा उपयोगी काम करते रहे हैं।

वे इस क्षेत्र की समृद्धि के लिए आगे आने वाले दिनों में और अधिक उपयोगी कार्य करें इसके लिए मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

संसद सदस्य (लोक सभा)
३३, फ़िरोजशाह रोड
नई दिल्ली

ज़िन्दा शहीद

—महात्मा आनन्द स्वामीसरस्वती

श्री पण्डित नरेन्द्र जी को मैं चिरकाल से जानता हूँ। उनके हृदय में भगवान ने आर्य समाज के प्रति अगाध प्रेम भर रखा है। निज़ाम की रियासत हैदराबाद में जो जाग्रति पैदा हुई उसमें पण्डित जी का बहुत बड़ा भाग है। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, शारीरिक उन्नति में पण्डित नरेन्द्र जी सदा अग्रसर रहे। नाना प्रकार के कष्ट सहन किये और बिना निराश हुए कर्मठ योगी की तरह स्वामी दयानन्द के मिशन को पूरा करने में लगे रहे और बिना निजि स्वार्थ के उन्होंने सदा आर्य समाज के हित को अपने सामने रखा है। अपने कहलाने वालों से भी उन्होंने कष्ट सहन किये। मैं तो उनको "ज़िन्दा शहीद" के नाम से याद करता हूँ। उनके अन्दर बड़े महान् उत्सवों के प्रवन्ध करने की भी योग्यता है। यही नहीं अपितु उठे हुए पिछड़े हुए लोगों को गले लगाने की क्षमता है।

उनके हृदय में यह प्रवल इच्छा वनी रहती है कि वैदिक धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए योग्य उपदेशक तैयार किये जायें जो आज आर्यजगत् की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

मिलाप
नई दिल्ली

.....मूर्तिमान रूप

—स्वामी ओउमानन्द सरस्वती

पण्डित नरेन्द्र जी जैसी विभूति के गुणों और कार्य कलापों को दो-चार पंक्तियों में कैसे सिमेटा जा सकता है। ये तो वास्तव में जीवित शहीद हैं। जब से इन्होंने होश सम्भाला है तभी से अपना सर्वस्व आर्य समाज के लिए न्योछावर करने मे लगे हुए हैं। वस्तुतः ये योग्य गुरु के योग्य शिष्य हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में इन्होंने दिन रात एक करके जो महान् कार्य किया उससे इनकी महत्ता का आभास मिलता है।

भर्तृहरि ने कहा है :-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्यचोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

इस श्लोक का यदि मूर्तिमान् रूप देखना चाहें तो हम पं. नरेन्द्रजी को देख सकते हैं।

महाविद्यालय गुरुकुल
झज्जर (रोहतक)
हरियाणा प्रान्त

पं. नरेन्द्र– मेरी दृष्टि में

पं. भीष्मदेव शास्त्री
साहित्याचार्य

सन् १९३८ सौभाग्य से भाग्यनगर के प्रवास प्रेम परीक्षण का प्रथम क्षण सामने लाया और विलक्षणता यह हुई कि "प्रतिदिनमुदये नवं नवं" के अनुसार वह आज भी "अरुणतरुणवारिज नयन" ही बना हुआ है। दृष्टि सृष्टिवाद की वेदान्त प्रक्रिया की भांति, दृष्टि में व्यापकता आती गई जैसा कि स्वाभाविक है और इसीलिए मेरी दृष्टि में, इन शब्दों की सृष्टि संभव हुई। हैदराबाद आते ही मैंने नरेन्द्र जी को सुना, समझा, कदाचित् इतनी जल्दी इसलिए कि हम दोनों विरोधी पथ के पथिक थे, उन दिनों यह भ्रान्त धारणा अधिक बद्धमूल थी। मेरे आने के कुछ पूर्व, सनातनधर्म और आर्य समाज में शास्त्रार्थ की टक्कर हुई थी, मैंने लिखित वाहवाही के उभरते हुए अपनेपन के उभयत्र दर्शन किये थे यद्यपि मेरी वैयक्तिक धारणा इसके विपरीत थी। दोनों पक्ष वेदों को मानते हैं, ईश्वर को मानते हैं, दोनों भारतीयता को अपना प्राण मानते हैं, दोनों हिन्दुत्व को आर्यत्व से ओतप्रोत देखते सुनते और समझते हैं। "भरत खंडे आर्यावर्तैक देशे" का प्रातः सायं स्मरण करते हैं, इसीलिए आज वह भ्रान्ति संभ्रान्तचक्र में चंक्रमण करती हुई, शान्ति में विश्रान्ति ले रही है। यत्र तत्र विचार विभिन्नता का जो यत्किंचित् प्रतिभास प्रतिभासित होता है वह अनार्यों के मन में आर्यत्व-प्रतिष्ठापन के स्वाभाविक संघर्ष से समुद्भृत है वास्तविक नहीं। मैंने आर्य समाज के इस उदीयमान नेता में इस भावना को जागृत रूप में देखा है। अब तो, जब उदय प्रखरता में बदल चुका है तब अनैक्य, पार्थक्य या विचार वैषम्य का तिमिरतोम यदि कहीं कोने-ओने में था भी तो वह सर्वथा छिन्न-भिन्न हो चुका है। आज तब के नरेन्द्र 'पण्डित नरेन्द्र, बन गये हैं और "शर्मा" से भी ऊँचे उठकर वे पण्डित के वास्तविक अर्थ में ओतप्रोत हो चुके हैं, उनकी बुद्धि क्रमशः धी, मनीषा और पंडा बन चुकी है. "सदसद्विवेकवती बुद्धिः पंडा"

अच्छे बुरे का विवेक—केवल ज्ञान ही नहीं अपितु विवेचनशक्ति का सामञ्जस्य भी उनमें प्रादुर्भूत हो चुका है यही पंडा तो व्यक्ति को पण्डित बना देती है और व्यक्तित्व के रोम-रोम में पाण्डित्य भर देती है। देवोभूत्वादेवंयजेत्, देवता बनकर देवता की पूजा की जा सकती है दैत्य बनकर नहीं, पण्डित भी पाण्डित्य प्रकर्ष के अभाव में किसी पण्डित के पाण्डित्य के उत्कर्ष की थाह नहीं पा सकता इसीलिए प्रत्येक कर्त्तव्यपथ के पथिक का पण्डित होना आवश्यक है।

पण्डित नरेन्द्र में मैं दावे के साथ कहता हूँ कि अहंकार नहीं है अहंकार ही तो असत् है जो सत् की छाया में पनप उठता है अँधेरे की कल्पना प्रसूत प्रेतच्छाया की तरह। पण्डित, सद्रूप परमेश्वर के प्रकाश में इस असत् को कल्पित होते हुए भी देख लेता है समझ लेता है और उसे आसानी से ठुकरा देता है, आसानी से इसलिए कि वह कुछ है ही नहीं, कल्पना ने उसे पाला पोसा है और उसी ने उसे विस्तृत किया है। एक साधु पथिक के ये शब्द सुनिये और बारीकी से परखिये कि पण्डित नरेन्द्र के व्यक्तित्व ने मैं की एकरूपता में अहंकार की अनेकरूपता को कैसे समेट लिया है। साधक की सिद्धि में, सिद्धि प्राप्त करने की चाह ही बाधक रहा करती है। सारी लोक परलोक की कामनाएँ अहंकार मे ही होती हैं, अहंकार ही भोगी है और अहंकार ही योगी है वही मेरे तेरे की सीमा बढ़ाकर बंधन में पड़ता है। यह अहंकार ही मुक्त होना चाहता है, अहंकार ही सत्यस्वरूप सृष्टा से विमुख होकर—उन्हीं की सृष्टि में अपनी सृष्टि रचकर रागी और द्वेषी बनता है। अहंकार की सृष्टि ही उसका अपना आकार है विस्तृत मेरा पन ही उसकी विशालता का रूप है। "मैं यही तो हूँ" यही अहं का आकार है, यह सब मेरा है, इस ज्योतिर्विहीन स्वीकृति और निश्चिति के मूल में "मैं" रूपी केन्द्र विद्यमान है। मैं केवल एक है पर अहंकार अनेक हैं। जगत् में परस्पर के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक संघर्ष दुराग्रही अहंकार के कारण ही चल रहे हैं। मेरे आलोच्य व्यक्तित्व में, मैं तो है क्योंकि वह व्यावहारिक है पर अहंकार की अनेक रूपता सिमट गई है, सिकुड़ गई है। आध्यात्मिक जीवन को छूकर कभी-कभी अहंभाव आत्मप्रकाश के रंग में, अपने रंग-बिरंगे करिश्मे दिखाकर अत्यन्त दुराधर्ष बन जाता है पर वही, उसकी अन्तिम अवस्था भी है पेड़ पर चढ़ने वाला जब सबसे ऊँची तरुशाखा पर आरोहण की कामना लेकर बढ़ता है तब वह चढ़ने और गिरने का समन्वय करने लगता है इस कसौटी पर भी हमारे इस मित्र का व्यक्तित्व खरा निकलता है यह हमें विश्वास है। इसलिए कि वस्तुतः त्याग का क्रियात्मक स्वरूप सेवा और सेवा का विचारात्मक स्वरूप त्याग है। सेवा तथा त्याग, गति के दायें-बायें पैर के समान हैं। इन

दोनों के द्वारा ही उदार व्यक्तित्व अपने चरम लक्ष्य तक पहुँचता है कभी गिरता नहीं, जीवन की वर्तमान और भावी निर्बलतायें पग-पग में भयभीत करती हैं क्योंकि "परांचिखानि व्यतृष्णत् स्वयंभू:"इन्द्रियाँ बहिर्मुखी अधिक हैं अन्तर्मुखी कम, फिर भी सेवा और त्याग, की भावना इन निर्बलताओं और निर्बलता-मूलक आशकांओं को चूर-चूर कर देती है। कहाँ जायगा हमारा-मानव का अधिकृत-समुद्घोष "उत्थातव्यं जागृतव्यम्, उत्थान ही सेवा के लिए हैं और जागरण ही त्याग के लिए। तब फिर भय के लिए स्थान कहाँ ? लगभग तीस वर्ष का अनुभव मुझे विवश करता है ऐसा लिखने के लिए कि पण्डित नरेन्द्र में उदारता है और समता है, यह सच है कि इनका क्रमिक विकास हुआ हैं और ऐसा ही होता है। उदारता व्यक्तित्व को जगत से अभिन्न करती है और समता, देहातीत जीवन से जोड़ बिठाती है तब फिर जड़ता और अभाव बाकी ही नहीं रह जाते ऐसे व्यक्तित्व का पल-पल, क्षण-क्षण यह चाहने लगता है कि मेरा जीवन सभी के लिए उपयोगी हो जाय और उनकी मूक कर्मठता मुखरित हो उठती है जानकार के जनमानस में कि ऐसा ही हो रहा है, लक्ष्य धीरे-धीरे पास आ रहा है।

"दुर्लभं मानुषंजन्म" यह संस्कृत सूक्ति सत्य की कसौटी पर निरीखरी उतरती है इसलिए कि मानव देह में सारे साधन उपलब्ध हैं जिनसे प्रेय (लोकसुख) और श्रेय (आत्मानन्द) उपलब्ध होता है। इन उपलब्धियों के लिए बाह्य और आन्तरिक साधन मानव शरीर में मानों समन्वित कर दिये गये हैं। आवश्यकता होती है साधनों के सम्यक् खोज और उनके सदुपयोग की। इस सम्बन्ध में "सोम" के शब्द श्रवणीय और माननीय ही नहीं समाचरणीय भी हैं। मानव, साधनों के बल पर जिस दिशा में चाहे उन्नति कर सकता है, साधन उसके अन्दर भी है बाहर भी। वे कुछ दृश्य हैं तो कुछ अदृश्य भी। हाथ, पैर, नाक, कान आदि ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ दिखाई देती हैं पर भावना और कल्पना अदृश्य हैं। शरीर से बाहर प्रकृति के अनन्त अंक में अनन्तकाल से गतिशील सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारे दृश्य हैं पर प्रकाश की लहरें और ध्वनि की लहरें अदृश्य हैं। भौगोलिक क्रियाओं द्वारा समुद्र मंथन करने पर उपादान शक्तियाँ दृश्य भी बनती रही हैं और बन सकती हैं अनुभूति के अंचल में तो वे आती ही रहती हैं जैसे तीनों प्रकार के शरीर साधन रूप हैं वैसे ही बाहर की त्रिलोकी भी साधन रूप है, इनके अतिरिक्त कुछ साधन मानव कृत भी हैं। ये सभी साधन सब के लिए सुगम

और सुलभ हों ग्राह्य एवं व्यवहार्य हों ऐसी बात नहीं है पुण्य कर्म और पुरुषार्थ जब तक साथ नहीं देते अथवा महापुरुषों की कृपा या भगवदनुग्रह का सुयोग समुपलब्ध नहीं होता तबतक दूर या समीप रहने पर भी ये साधन मानव के सहायक नहीं बन पाते। मैंने सदा सर्वदा अनुभव किया है कि पण्डित नरेन्द्र ने, इन मानव सुलभ-साधनों का सदैव सदुपयोग किया है उनकी सादगी ने, उनकी विनम्रता ने, उनकी सहयोग प्राप्ति की भावना ने उन्हें साधन सुलभ कर दियें हैं। आडम्बर हीन, उनकी जीवनचर्या ने उनके कर्त्तव्यपथ की यदाकदा आपतित कठिनाइयों को काट दिया है। अपनी, समाज और राष्ट्र के प्रति, निष्ठा तथा सेवा भावना ने, उनके जीवन को ऐसी दृष्टि दी है जिस दृष्टि को दुःख दिखाई नहीं देते कठिनाइयों के कठोर कुटिल काँटे, जिस दृष्टि में खलते हुए, हँसने वाले फूल बन जाते हैं। इसीलिए उनका जीवन साहस भरे कार्यों से भरा पड़ा है। इतना सब होते हुए भी उन्हें प्रशंसा की भूख नहीं है और न नेतागिरी की, नगण्य कामना ही है। सर्वत्र यथा सम्भव सहयोग और सेवा का सम्बल लेकर यह सरल तरल व्यक्तित्व, अपने को और अपने मन को विश्व के ओर छोर से जोड़ रहा है वसुधैव कुटुम्बकम् की झलक में "कृणवन्तो विश्वामार्यम्" की स्वाभाविक दिव्यज्योति भर देने की भावना इस भव्य व्यक्तित्व के रोम-रोम में ओतप्रोत है। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं। तत्वं पूषन्नपावणु सत्यधर्माय दृष्टये के वैदिक प्रकाश में, "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" की भावना को साकार रूप देने वाला, पण्डित नरेन्द्र का व्यक्तित्व, ब्रह्मवर्चस्वी यशस्वी, तेजस्वी और सेवा-सर्वस्वी हो यह अकिंचन की भावना है।

गांधीबाजार, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

लोक प्रिय श्री नरेन्द्र जी

पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा

परहित सरिस धरम नहिं भाई
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

परहित बस जिनके मन माहीं
ताको जग दुर्लभ कछु नाही ।।

संसार में मनुष्य अपने स्वभाव, मिलनसारी, उदारता, सहिष्णुता, सहृदयता, समाजसेवा धर्मसेवा, राष्ट्रसेवा, जनसेवा की भावना और कार्य से लोकप्रियबनता है। श्री नरेन्द्र जी में जन्मजात समाज सेवा की भावना है। युवा अवस्था से ही समाचार पत्रों में अपने विचार व्यक्त करना और सार्वजनिक सेवा कार्य करना आरम्भ कर दिया था। अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पण कर दिया है। स्वतन्त्रता संग्राम में भी भाग लिया साथ ही साथ हिन्दू संगठन, गोरक्षा आन्दोलन में कमर कसकर सेवा करते रहे हैं। सनातन धर्म के कार्य में भी इनकी सहानुभूति रही है। उपरोक्त गुणों के कारण श्री भाई नरेन्द्र जी के लिए मेरे हृदय में स्थान हो गया है। मैं उनसे प्रेम करता हूँ, उनका आदर करता हूँ, मंगल कामना प्रकट करता हूँ।

संस्थापक : श्री सनातनधर्म सभा
नारायण भवन,
बेगमबाजार, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

रैयत के मेरे साथी

—एम. नरसिंगराव

पं. नरेन्द्रजी को मैं उस ज़माने से जानता हूँ जब उन्होंने अवामी ज़िन्दगी में हिस्सा लेना शुरू किया। पहले-पहल जब मैंने रैयत हफ़तावार जारी किया तब वह इस कौमी अख़बार में कुछ अर्से तक रह कर मेरा हाथ बँटाते रहे। उनके आदर्श रख-रखाव कर्तव्यपालन और संगठन—शक्ति ने मुझे बहुत मुतासिर किया। वह लिखते भी अच्छा हैं और बोलते भी अच्छा हैं। उनकी जोश व वलवले से भरी हुई तक़रीरों ने माजी के उस दौर में जब ज़बान खोलना भी एक सियासी जुर्म समझा जाता था बड़ी बे-बाकी के साथ सियासी व समाजी मसलों को अपने ख़ास अन्दाज़ में लोगों के आगे रखा और उनमें अमली हरारत पैदा की।

पं. नरेन्द्रजी का हैदराबाद में आर्य समाज की तहरीक को पखान चढ़ाने में ज़बरदस्त हिस्सा रहा। शहरी व धार्मिक अधिकारों की खातिर इन्हें बहुत सी मुश्किलात का सामना करना पड़ा। कई बार जेल हो आये और काले पानी की कड़ी सज़ा भी इन्हें मिली। आर्य समाज के साथ वह काँग्रेस की कौमी जमायत से बरसों वाबस्ता रहे और पुलिस-ऐक्शन से पहले व बाद की जदोजेहद में बढ़चढ़ के हिस्सा लिया। हम उस ज़माने में हमेशा यह महसूस किया करते थे कि पंडितजी की जवांहिम्मती ने लोगों के हौसले किस कदर बुलन्द कर दिये हैं और वह समय की समस्याओं को अच्छे ढंग से सुलझाने की बड़ी अच्छी सलाहियत रखते हैं। हैदराबाद की पिछली रियासत में समाजी व सियासी जागृति पैदा करने वालों में पण्डितजी का नाम एक मिसाली हैसियत रखता है।

मुझे अपने एक पुराने साथी श्री गुरुचरणदास सक्सेना से से यह जान करके खुशी हुई कि पंडितजी के हालाते जिंदगी और उनसे सम्बन्धित कुछ लेखों को पुस्तक के रूप में छाप रहे हैं। इस किताब से न सिर्फ मौजूदा

बल्कि आने वाली पौद को भी पं. नरेन्द्रजी के जीवन से बीते हुये दिनों के स्वतंत्रता संघर्ष की तारीख को समझने में मदद मिलेगी।

पं. नरेन्द्रजी अपनी ज़िन्दगी के पैंसठ वर्ष पूरे कर चुके हैं, मगर इस उम्र में भी उनकी चुस्ती फुर्ती, और जोश व वलवले में कमी नहीं हुई है। अपने मिशन को पूरा करने के लिए वह भारत देश के कोने-कोने में घूमते-फिरते हैं। समाज के दीन-दुखियों की सेवा के लिए उन्होंने अपने-आप को दान कर दिया है। भारत सेवक समाज, राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ और ऐसी कितनी ही रचनात्मक सस्थाओं में हम एक साथ काम कर चुके हैं।

पंडितजी की निष्काम सेवाओं की सभी लोग तारीफ करते हैं।

रतनदीप
हिमायत नगर, हैदराबाद–(आं. प्र.)

पं. नरेन्द्र जी

—रामकृष्ण धूत

पं. नरेन्द्रजी से मेरा परिचय तब आया, जब श्री चन्दूलालजी अग्रवाल आर्य ने इन्हें आर्य समाज के कार्य के लिए अपना सहयोगी बनाया। उन दिनों आर्य समाज ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का बड़े ही उत्साह के साथ प्रचार कर रहा था। वह दिन ऐसे थे कि सहज ही कार्य करने के लिए अग्रसर होना बड़ा ही कठिन था। स्व० चन्दूलालजी ने अपनी तीखी कसौटी पर नवयुवक नरेन्द्रजी को परखकर अपने साथ लिया। धीरे धीरे पं. नरेन्द्रजी चमक उठे।

मेरा सम्पर्क खादी प्रचार के समय आया। मैंने उनको अत्यन्त नम्र और बहुत ही आस्तिक विचारों का पाया। आर्य समाज के कार्य के साथ ही राजनैतिक दृष्टि से भी उनका कार्य अग्रसर होने लगा। ये बड़े अच्छे वक्ता और लिखे-पढ़े युवक थे, जबकि मैं एक साधारण व्यक्ति था। किन्तु मेरे प्रति इनका सदा ही स्नेह रहा। मैं आर्य समाजी नहीं हूँ फिर भी ये मुझे अत्यन्त प्यार एवं आदर की दृष्टि से देखते हैं। इनके कार्य की कुशलता का रहस्य यही है कि अपने साथी कार्यकर्ताओं को न केवल प्रेम की दृष्टि से देखते ह अपितु उन्हे आगे बढाने में कभी हिचकिचाते नहीं। स्व. चन्दूलालजी के निधन के उपरान्त पं. नरेन्द्रजी ने आर्य समाज के कार्य को बड़ी उत्तमता से वहन किया। निजाम की नादिरशाही सरकार व्यायमशालाओं, हवनादि के कार्यों को जो धर्म एवं विकास के कार्य हैं इन पर प्रतिबन्ध लगाकर हिन्दू समाज को अग्रसर होने में रोडे अटकाया करती थी किन्तु पं. नरेन्द्रजी और आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने निज़ाम की इस नीति का खुलकर विरोध किया परिणाम स्वरूप पं. नरेन्द्रजी को सर्व प्रथम १९३८ में मन्नानूर के घने जंगल में जो हैदराबाद का काला पानी कहलाता है, भेजकर वहां कई महीनों तक जेल की यातनायें दी। उस यातना से न घबराकर पं. नरेन्द्रजी एक सच्चे सत्याग्रही के रूप में प्रकट हुए। हिन्दू समाज में इन्हें "नवयुवक हृदय सम्राट" की उपाधि

से सम्बोधित करना प्रारम्भ किया। अविभाजित हैदराबाद स्टेट में राजनैतिक जाग्रति लाने में आर्य समाज का भारी हाथ रहा है और उसका एकमात्र श्रेय पं. नरेन्द्रजी के नेतृत्व को है।

राजस्थानी समाज के सुधार के कार्यों में इनका बड़ा सहयोग रहा है। पं. बन्सीलालजी व्यास को आर्य समाज के क्षेत्र में खीचने का श्रेय भी इन्हें ही है।

पं. नरेन्द्रजी के कारण राजस्थानी समाज में अनेकों युवकों में जागृति आई जिससे न केवल आर्य समाज का बल बढा अपितु राजस्थानी समाज में भी चेतना आई।

स्टेट कांग्रेस के कार्य में पण्डितजी का घनिष्ट सहयोग रहा और हम लोगों को उनसे प्रेरणा मिलती रही। वे बड़े सुलझे हुए विचारों के हैं, उनका त्याग सादगी मिलनसारी तथा नम्र स्वभाव अत्यन्त अनुकरणीय है। इनकी विशेषता यह है कि दलबन्दियों से अलग रहकर राष्ट्र के आन्दोलन में महात्मा गांधीजी के सिद्धान्तों पर चलते हैं। उनके भाषण बहुत ही ओजस्वी एवं वक्तृत्व शक्ति अत्यन्त प्रभावशाली है। हिन्दी और उर्दू दोनों पर समान अधिकार है।

संपादक 'जागृत राजस्थानी'
सर्वोदय
हार्डिकरबाग, हिमायत नगर,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

प्रभावी वक्ता और नेता

—दिगम्बरराव बिन्दु

सन् १९१९ या १९२० की बात है, जबकि मैं नया-नया ही हैदराबाद आ गया था और कुछ कवि, लेखक और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क में आ रहा था। एक दिन कुछ मित्रों के साथ शाहअलीबंडा के हरी बावली विभाग में, श्री रघुनाथराव 'दर्द' (श्री शेषराव पीलखाने) से मिलने गया था, तब वे मुझे एक अन्य सज्जन के पास ले गये, ताकि उनसे भी मेरी मुलाकात हो जाये। परस्पर परिचय तथा चाय-पान आदि के बाद वे सज्जन बोले, "और थोड़ी देर रुकिये, मैं एक करिश्मा बताना चाहता हूँ" उन्होंने एक छोटे बच्चे को बुला लिया, जिसकी आयु लगभग ८–९ वर्ष की ही होगी। बच्चे को दुलारते हुए उन्होंने उससे कहा, "बेटे आज इतने बड़े-बड़े लोग आये हैं, तो उन्हें अपना भाषण सुना दो ना", और हमारी तरफ देखते हुए बोले. "आप भाषण के लिये किसी भी विषय का सुझाव दे सकते हैं," हममें से किसी ने कहा" "ब्रह्मचर्य" विषय पर भाषण हो जाय"।

बच्चे ने तुरन्त ही भाषण शुरू किया। हम सबको ताज्जुब हुआ कि क़रीब-करीब दस मिनट तक उस बच्चे ने अपनी सरल, सीधी-सादी परन्तु प्रवाही भाषा में ब्रह्मचर्य सम्बन्धी अपने विचारों को प्रकट किया।

इस घटना के २५–३० वर्ष बाद, मुझे नरेन्द्रजी के भाषण सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। तब वे आर्य समाज के एक लोकप्रिय प्रचारक तथा नेता माने जा रहे थे और कांग्रेस आन्दोलन में भी प्रभावपूर्ण तरीके से हिस्सा लेते रहे थे। एक दिन जब मैंने उनकी प्रभावी वक्तृत्वशैली का मेरे मित्रों के सामने जिक्र किया तब किसी ने मुझे २५–३० वर्ष पूर्व के उस शिशु वक्ता की याद दिलाते हुए यह बताया कि उसी शिशु को लोग आज "नरेन्द्रजी" कहते हैं। यह सुन कर मेरे आनन्द और आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

सन् १९३८ में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ, जिसमें मैं भी सहभागी था। उस समय आर्य समाज ने भी हैदराबाद सरकार के विरुद्ध एक देशव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया। भारत के अन्य प्रान्तों से भी सत्याग्रहियों के जत्थों पर जत्थे आने लगे। इस आन्दोलन के सूत्रधारों में प्रमुख थे स्व. पं. विनायकरावजी विद्यालंकार तथा पं. नरेन्द्रजी। इसी जमाने में मेरे और पं. नरेन्द्रजी के ताल्लुकात अधिक घनिष्ट हो गये।

महात्मा गांधीजी के आदेशानुसार स्टेट कांग्रेस का सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया, किन्तु आर्य समाज का आन्दोलन अभी जारी था। गांधीजी की इच्छा थी कि आर्यसमाज के साथ भी हैदराबाद सरकार का समझौता हो जाय और इसी दिशा में वे कोशिश करते रहे। हम लोग अब जेलों से रिहा कर दिये गये थे। गुरुकुल ज्वालापुर के एक अध्यापक और एक मान्यवर तथा लोकप्रिय आर्यसमाजी कांग्रेस नेता पं. नरदेव शास्त्री इसी समय हैदराबाद में आये थे। पं. नरदेव शास्त्री का बचपन हैदराबाद राज्य के तुलजापुर (जि. उस्मानाबाद) ग्राम में ही गुजरा था। उनके पिता वहां के भवानी मन्दिर के मोहतमिम थे। आर्यसमाजी होने के कारण उन्होंने नरदेवजी को बचपन में ही गुरुकुल में भेज दिया था। उनकी शिक्षा वहीं की सम्पन्न हुई और वे बाद में वहीं कार्य करते रहे। हैदराबाद आने पर उनकी स्वाभाविक ही इच्छा हुई कि अपने पुराने रिश्तेदारों और मित्रों से भी सम्पर्क साध लें। मेरे एक घनिष्ठ मित्र श्री गोविन्दराव दीक्षित भी उनके बचपन के मित्र थे। दीक्षितजी के पिता तुलजापुर विद्यालय के हेडमास्टर थे। इसीलिये मेरा भी पं. नरदेव शास्त्री जी से अधिक गहरा परिचय हुआ और पंडित नरेन्द्र जी भी मेरे अधिक निकट सम्पर्क में आ गये।

पं. नरदेव शास्त्री जिस तरह आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता थे, उसी तरह कांग्रेस के भी कार्यकर्त्ता थे। उस समय के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं में, राजनीतिक दृष्टि से दो धाराएँ दिखाई देती थीं। कुछ कार्यकर्त्ता कांग्रेस के समर्थक थे, तो कुछ हिन्दूमहासभा के। पं. विनायकरावजी और पंडित नरेन्द्रजी सदैव कांग्रेस के ही समर्थक थे और कांग्रेस के सभी कार्यों में तहे दिल से हिस्सा लेते थे।

अन्जुमन इत्तेहाद्-उल-मुसलमीन के सदर नवाब बहादुरयारजंग एक अत्यन्त प्रभावी वक्ता के रूप में सुपरिचित थे। उनके तोल के एकमेव प्रभावी

वक्ता के रूप में लोगों ने पंडित नरेन्द्रजी को ही पाया, और इसीलिये वे "नवयुवक हृदय सम्राट" भी कहलाने लगे। पुलिस ऐक्शन के पश्चात् कांग्रेस संगठन में पं. नरेन्द्रजी ने काफ़ी नुमाया-हिस्सा लिया और १९४२ के पहले ही चुनाव में उन्होंने कई सदस्यों की प्रचार कार्य द्वारा बड़ी सहायता की। इस चुनाव में वे स्वयं भी लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य चुने गये। उस समय स्टेट कांग्रेस का अध्यक्ष होने के नाते मैं अपने चुनाव-क्षेत्र में केवल दो-तीन दिन के लिये ही जा सका। मेरे अनेक मित्रों के साथ-साथ पडित नरेन्द्रजी के प्रचार-कार्य के कारण मैं यशस्वी हो सका। मेरे चुनाव-क्षेत्र के लोगों में आर्यसमाज का काफ़ी प्रभाव था और नरेन्द्रजी जैसे प्रचारक ही उन लोगों को कांग्रेस के समर्थक बनाने में सफल हो सकते थे।

अपने अन्य कामों के साथ खादी के कार्य में भी उनकी गहरी दिल-चस्पी रही। १९५७ के बाद आंध्र प्रदेश राज्य के शासन ने उन्हें आंध्र प्रदेश खादी बोर्ड का सेक्रेट्री नियुक्त किया था। कई वर्ष तक वे इस पद का काम सम्हालते रहे।

पं. नरेन्द्रजी की ६७ वीं सालगिरह मनायी गयी, उनको इस अवस्था में भी काम करते हुए देखता हूँ तो मुझे, उनमें आज भी वही जोश, काम की लगन और काम को निभाने की वही जिम्मेदाराना प्रवृत्ति दिकाई देती है, जिससे मैं सुपरिचित हूँ।

११/डी, हैदराबाद ऐस्टेट,
नेपियनसीरोड, बंबई
(महाराष्ट्र)

स्टेट कांग्रेस और नरेन्द्र जी

–जनार्दनराव देसाई

हैदराबाद के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में कौन व्यक्ति ऐसा है जो पं. नरेन्द्र जी से परिचित नहीं ? पंडित जी का नाम तो निष्काम सेवा तथा निरंतर संघर्ष के लिए अनुकरणीय माना जाता है और पंडित जी के व्यक्तित्व से हैदराबाद के भूतपूर्व राज्य का राजनीतिक इतिहास जुड़ा हुआ है। निज़ाम के शासन काल में जब लोग दोहरी गुलामी की जंजीरों में जकडे हुए थे और खुले आम आगे आने में हिचकिचाते थे, छोटे कद का यह व्यक्ति अल्पायु से ही रण-क्षेत्र में कूद पड़ा और आर्य समाज के रंगमंच से संघर्ष में लग गया। उन दिनों आर्य समाज का काम करना कुछ साधारण बात नहीं थी। राज्य शासन की दृष्टि में समाज सरकार के लिए ख़तरा बनी हुई थी। गराती निशान (५३) के द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध वास्तव में जनता विशेष-कर हिन्दुओं में बढ़ रही जागृति को रोकने के लिये थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध सत्याग्रह की भूमिका पं. नरेन्द्र जी के कारण ही तैयार हो सकी।

स्टेट कांग्रेस की स्थापना तथा उसके राजनीतिक संघर्ष में आर्य बन्धुओं से बडा बल मिला। पोलिस ऐक्शन के पश्चात् कांग्रेस दो दलों में बंट गई थी। पंडित नरेन्द्र जी स्वामी रामानन्द तीर्थ के ग्रूप के साथ थे। इस ग्रूप के मंत्री श्री गोविन्द दास शराफ़ थे। देसाई ग्रूप जो मेरी अध्यक्षता में काम कर रहा था उसके मंत्री श्री बुर्गुल रामकृष्ण रावजी थे। महान् नेता लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रयत्नों से जब स्टेट कांग्रेस के दोनों ग्रूप एक हो गये तब पंडित जी ने अपनी सारी शक्ति कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने में लगा दी। स्टेट के कोने-कोने में नरेन्द्र जी कांग्रेस का संदेश ले गये।

वे पहले से कांग्रेस के समर्थक थे। उन कठिन दिनों में भी जब राज्य में लोग कांग्रेस का नाम लेते डरते थे और कांग्रेस अवैध घोषित कर दी गई थी, आप कांग्रेस के साथ रहे।

१९४६ में पं. नरेन्द्रजी स्टेट कांग्रेस के मंत्री थे। मुशीरावाद में जो स्टेट का अधिवेशन हुआ, उसके भी आप मंत्री रहे। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व यह वर्ष भारत के लिए बडा कठिन था, कारण मुस्लिम सांप्रदायिकता खुले आम पाकिस्तान का समर्थन कर रही थी। निज़ाम इत्तेहादुल मुसलमीन के सहारे "स्वतंत्र हैदराबाद" का स्वप्न देख रहे थे। काँग्रेस के विरुद्ध षडयंत्र रचे जा रहे थे। १९४७ में भारत कोस्वतंत्रता की घोषणा के साथ ही 'रज़ाकारी आंदोलन' तीव्र गति से बढ़ने लगा, और हैदराबाद की भारत प्रेमी जनता ने बहुत कष्ट सहन किए। ऐसे में कांग्रेस के लिए काम करना बड़े साहस की बात थी। पंडित नरेन्द्रजी को बहुत कष्ट झेलने पड़े। १९३८ में निज़ाम के शाही फ़रमान से "काले पानी" का दण्ड मिला। कई बार जेल गये। १९४७ में जो दण्ड मिला तो पूरे १४ माह बाद सितम्बर ४८ में पुलिस ऐक्शन के पश्चात् स्वामी रामानन्दतीर्थ के साथ जेल से छूटे।

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की कार्यकारिणी के प्रारंभ से सदस्य थे। पुलिस ऐक्शन के बाद प्रांतीय कांग्रेस कमेटी, आंध्र बी. तथा नगर कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। १९५४ में कांग्रेस महा सभा का अधिवेशन पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हैदराबाद के नानल नगर में हुआ तो पंडित नरेन्द्रजी स्वागत समिति के महामन्त्री चुने गये। नानल नगर के अधिवेशन की एक घटना अब तक याद है। कांग्रेस का खुला अधिवेशन हो रहा था। विदेश-नीति तथा महत्वपूर्ण विषयों पर नेतागण प्रकाश डाल रहे थे। इतने में विशाल जन समूह के एक कोने में किसी कारण गडबड मची। स्वामी जी आदि स्थानीय नेताओं ने लोगों से शांत रहने की अपील की, पर गडबड रुकी नहीं, इतने में पंडित नरेन्द्रजी दौडे-दौडे माईक पर आये और अपनी स्वाभाविक घनगरज के साथ शांति बनाये रखने की बात कही तो एक दम सन्नाटा छा गया। कांग्रेस अध्यक्ष, प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने इस दिन के भाषण में इस घटना का वर्णन करते हुए कहा "मुझे खुशी होती है कि हमारी कांग्रेस में एक छोटे से कद का आदमी ऐसा भी है जो इतनी भारी भीड पर नियंत्रण रख सकता है।" वास्तव में पंडित नरेन्द्रजी बड़े से बड़े

जलसों, जुलूसों का आयोजन बहुत चतुर्ता के साथ करते और उन पर पूरा कन्ट्रोल रखते हैं। (६७) वर्ष की इस आयु में भी पंडितजी जवान दिखाई देते हैं। उनका पांव एक जगह टिकता नहीं। आज हैदराबाद में हैं तो कल बंबई में, परसों देहली में। शायद ही भारतवर्ष का कोई कोना ऐसा छूटा हों, जहां पंडित नरेन्द्रजी न गये हों। अभी हाल ही में पिछले अगस्त में मोरिशस में जो आर्य कान्फ्रेंस हुई, उसकी सफलता के लिए पंडितजी दिन-रात जुटे रहे। बोलते भी खूब हैं और जब बोलने लग जाते हैं तो ऐसा लगता है कि गंगा रुकने का नाम नहीं लेती।

मैनेजिंग ट्रस्टी,
गांधी भवन ट्रस्ट,
स्टेशन नामपल्ली रोड,
हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

—

पं. नरेन्द्र जी का व्यक्तित्व

-विनायकराव विद्यालंकार

जब मैं अपने स्मृतिभंडार की खोज करता हूँ, जो कि दुर्भाग्यवश बहुत ही दुर्बल है, मुझे इस बात का धुँदलासा भी ख्याल नहीं है कि मेरा और पं. नरेन्द्र जी का सर्व प्रथम परिचय कब किस प्रकार और किस मामले में हुआ था. क्षितिज पर उगते हुए तारों को विद्वान् ज्योतिर्विदों के अतिरिक्त सामान्य व्यक्ति आमतौर पर निरिक्षण नहीं करते हैं। उनको तो उन तारों का आभास उसी समय होने लगता है, जब वे आकाश में काफी ऊँचाई पर उठ चुके होते हैं। पंडित जी से मेरा परिचय कुछ इसी प्रकार का है। पंडित जी आर्यसमाज के क्षेत्र में काम करते-करते अपने अदम्य उत्साह अप्रतिबद्ध व्याख्यानशक्ति और प्रभावी लेखन-कला के आधार पर पर्याप्त उच्च स्थान प्राप्त कर चुके थे। आर्यजगत् में काम करने वाला कोई भी ऊँचे-से-ऊँचा व्यक्ति उनकी अवहेलना करके अपने काम को आगे बढ़ाने का साहस नहीं कर सकता था। ऐसा समय था जब कि एक घटना हुई और उसने मेरे स्मृति-पटल पर एक चित्र छोड दिया है, जिसे मैं कभी भी नहीं मिटा सकता। उस घटना के कारण पंडित जी के संबंध से मेरे हृदय में जिन विचारों का बीजा-रोपण हुआ था, वह निरंतर बढता और फलता ही रहेगा। वह घटना पंडित जी के व्यक्तित्व को बहुत ही विशद तौर पर जनता के सामने रख देती है।

हैदराबाद से सम्बन्धित आर्यसमाज के इतिहास में गुलबर्गा-काण्ड एक विशेष स्थान रखता है। यह सम्भवत: सन् १९४५ की घटना है। रात के बारह बजे उस समय के सरकारी कर्मचारियों ने कतिपय आर्यप्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को बुलवा कर बुरी तरह पुलीस के द्वारा दण्डों से पिटवाया था। सब-के-सब गंभीर तौर पर आहत हुए थे, जिनमें से मैं भी एक था।

फिर मेरे आघात इतने संगीन नहीं थे कि मैं चलने–फिरने से मजबूर हो जाता। मैं चल–फिर सकता था और औषधालय में हम सब के आ जाने पर इस बात की देख–भाल भी कर सकता था कि मेरे साथियों का उपचार ठीक तौर से हो रहा है या नहीं। पण्डित नरेन्द्र जी की टाँग की हड्डी टूट गई थी। उसका उपचार शीघ्राति–शीघ्र किया जाना अत्यन्त आवश्यक था। उन्हें जब डाक्टर आपरेशन रूम तक ले जाना चाह रहे थे पण्डित जी ने मुझे बुला कर कहा कि "श्री हीरालालजी को (जो कि उन दिनों आर्यप्रतिनिधि सभा में क्लर्क थे) पुलीस ने बहुत बुरी तरह पीटा है। कहा नहीं जाता वे जीवित भी हैं या नहीं। पहले उनका पता लगवाइए और उनका इलाज प्रारम्भ करवाइए। मैं अपने कष्टों को अभी सहन कर सकता हूँ। परन्तु उनकी स्थिति इतनी गम्भीर है कि उपचार में देरी अनर्थ का कारण हो सकती है।" इन शब्दों के साथ उन्होंने श्री हीरालाल जी के समाचार के मिलने तक स्वतः को आपरेशन रूम में लिवा जाने से सर्वथा इन्कार कर दिया। इसके उपरान्त औषधालय में इधर–उधर दौड–धूप की गई। औषधालय के कोने में हीरालाल का शरीर बेहोश हालत में एक गठडी के तौर पर पडा हुआ था। यदि पण्डित जी सामयिक सूचना न करते तो यह कहना कठिन है कि प्रातः तक भी उस ओर किसी का ध्यान जाता या नहीं। उसका क्या परिणाम होता यह तो स्पष्ट ही है। बहरहाल पण्डित जी को यह ज्ञात हो गया कि श्री हीरालाल का उपचार प्रारम्भ हो गया है तभी वे इस बात पर राजी हुए कि अब उनका उपचार शुरू किया जाए।

यह एक घटना है जिसमें बनावट की गुन्जाइश नहीं थी। पण्डित जी के उपरोक्त उद्‌गार स्वाभाविक थे। इसलिए मैं कहता हूँ कि इसमें पण्डित जी का व्यक्तित्त्व प्रतिबिम्बित होता है। कठिन–से–कठिन विपत्ति के समय पर भी वे अपने स्वार्थ को बाजू रख कर अपने सहकारियों के सुख व समाधान का पहिले ख्याल करते हैं। यही कारण है कि उनके अन्दर लोक–संग्रह का अनुपम गुण दिखाई पडता है। पण्डित जी उन सौभाग्यशाली नेताओं में से हैं, जिन्हें कार्यकर्ताओं का अभाव कभी अनुभूत नहीं हुआ है। नहीं तो मैंने अनेकों को कहते सुना है कि क्या किया जाय, बातें बनाने के लिये तो बहुत जमा हो जाते हैं किन्तु जब काम का समय आता है तो सब भुर्र हो जाते हैं। यहाँ एक व्यक्ति है जिसे आप दिन के किसी समय अपने निवास स्थान पर या उसके बाहर कहीं पर भी देखिये तो आपको दृष्टिगोचर होगा

कि उन्हें कुछ-न-कुछ लोग घेरे हुए हैं जो कि जहाँ एक तरफ उनसे सहानुभूति की आशा रखते हैं तो दूसरी तरफ उनके संकेत-मात्र पर कहीं भी दौड़-धूप करने और उनके कहे काम को बजा लाने के लिये तय्यार रहते हैं। बात यह है कि सार्वजनिक कामों में भी जब तक कार्यकर्ता की आत्मा तृप्त नहीं होती कार्यकर्ता को काम बजा लाने के लिये उत्साह नहीं होता। पण्डित जी में अपने सहकारियों को उन पर आये हुए आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सकटों से जहाँ तक हो सके मुक्ति दिला कर उनकी आत्मा को तृप्ति दिलाने में और उनमें अगले काम के लिये स्फूर्ति उत्पन्न करने का अनोखा गुण है। यही कारण है कि यदि कहीं सभा बुलानी हो, उत्सव रचना हो या जुलूस खडा करना हो तो पण्डित जी इस काम को किसी के मुकाबले में कम खर्च में अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं।

उपरोक्त निस्पृह वृत्ति का ही परिणाम है कि पण्डित जी में नेतृत्व का पूर्ण स्वरूप निखर उठा है। मैं नेताओं को तीन श्रेणियों में विभक्त करता हूँ। एक मंच पर के नेता (Plateform leaders), दूसरा कार्य-क्षेत्र के नेता (Field workers) और तीसरे कार्यालय के नेता (Organisational Heads)। पहले प्रकार के नेता जब मंच पर आते हैं तो अपनी वाक्पटुता से जनता में हर प्रकार का क्षोभमय वातावरण उत्पन्न कर देते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि जनता उभरती हुई बाढ की तरह किनारों को काटती हुई जिधर वे चाहते हैं बढती चली जाएगी। मंच पर से उतरने के साथ ही उनकी नेतागिरी उसी समय तक रहती है जब तक श्रोतागणों की कतारों में से हो कर वे अपनी मोटर तक नहीं पहुंच जाते। एक समय वे मोटर में बैठ गए कि फिर वे दूसरी सभा तक उठते नहीं। दूसरे कार्य-क्षेत्र के नेता होते हैं। वे मंच पर कभी नहीं आते। किसी भी सभा सोसाइटी, कान्फ्रेन्स या आन्दोलन का जो विभाग उनके सुपुर्द किया जाता है वे उसको पूर्ण करने में लगे रहते हैं। कोई चन्दा जमा करने के काम में लगा रहता है, कोई भण्डारे की व्यवस्था करता है और कोई स्वयं सेवकों को जमा करता है। ये लोग अपने कामों में आनन्द अनुभव करते हैं और उनमें जुटे रहते हैं। तीसरे संस्थाओं में अधिकार के स्थानों पर बैठ कर संस्थाओं को संगठित और सुदृढ बनाने में तत्पर रहते हैं। पण्डित जी उन विरलों में से हैं, जिनमें यह तीन गुण पूर्णता को पहुँच चुके हैं। आप बड़े प्रभावशाली वक्ता हैं। हिन्दी व उर्दू दोनों भाषाओं पर आपको प्रभुत्त्व हासिल है। आपकी उर्दू सलीस व हिन्दी सरल है। आपके भाषण प्रताड-

नात्मक व आयोजनात्मक रहते हैं। वाक्यों का चढाव व उतार ऐसा रहता है, जैसा कि समुद्र हिलोरें खा रहा हो। बीच-बीच में समुद्र की तरंग जिस प्रकार किनारे पर पहुँच कर कल्लोल के साथ बिखर जाती है, इसी प्रकार आपके व्याख्यानों में ऐसे स्थान अनेक आते हैं कि आपके वाक्य श्रोतागणों के कानों के साथ स्पर्श करते ही सारा-का-सारा श्रोतृसमुदाय करतलध्वनि कर उल्लसित हो जाता है।

मंच पर से उतरते ही वे जब कान्फरेन्स या समिति के प्रबंध को अपने हाथ में लेते हैं तो वे सर्वथा दूसरे नरेन्द्र के स्वरूप में होते हैं। कान्फ्रेन्स का चन्दा भी वही जमा करते हैं। पिण्डाल का नक्शा भी स्वतः बनाते हैं, उसे खडा भी करते हैं, और अंत में उसके प्रोग्राम को बनाना और उसके अनुसार काम चलाना भी उन्हीं का काम है। इसके लिए परमेश्वर ने उन्हें अनथक परिश्रम की शक्ति दी है। कार्य-क्षेत्र में जब वे पड जाते हैं तो उनके अनेक मित्र दंग रह जाते हैं कि आखिर यह व्यक्ति कब भोजन करता है और कब आराम करता है और बिना भोजन व बिना आराम के यन्त्रवद कैसे काम करते चला जाता है। उनके मित्रों ने उन्हें बुखार व अस्वस्थता की हालत में भी उसी प्रकार से काम करते हुए देखा है। जैसे कि सामान्य अवस्था में। ऐसा देख कर उनके मुख से धन्यता और साधुवाद निकले बिना नहीं रह सकते। जब वे जुलूसों का नेतृत्व करते हैं, फिर वे चाहें आर्यसमाज के हों अथवा कांग्रेस के इस कदर तेजी के साथ इधर-से-उधर फिरते हैं कि प्रतिक्षण उनकी उपस्थिति प्रत्येक स्थान पर प्रतीत होती रहती है। कार्य-क्षेत्र में उन्हें निरन्तर बहती हुई नदी की उपमा दी जा सकती है। जैसे नदी कभी जंगलों में से कभी नगरों के दो विभागों से और कभी पर्वतों की तराइयों में से बहती रहती है। ठीक इसी प्रकार पण्डित जी कभी धार्मिक कभी सांस्कृतिक कभी सामाजिक व कभी राजनैतिक मैदानों में कार्यरत दिखाई देते हैं। उनको किसी ने कभी चुपचाप हाथ पर हाथ रखे बैठे हुए नहीं देखा है। यह एक अनथक परिश्रम का स्रोत है जो अपने जल से अपने कार्यक्षेत्र को हर समय हरा-भरा रखता है।

संस्था जिसको बनाने और पोसने में उन्होंने अपना तन-मन और धन लगाया है, उसको संगठित रखने में भी उनका हस्तकौशल अनुपम है। संस्थाओं को बाह्य-आक्रमणों से बचाना और अतिरिक्त विद्रोहों से दूर रखना

एक बड़े कुशल सेनानी का ही काम होता है। —इस बारे में पण्डित जी का कार्य-क्षेत्र आर्यसमाज ही रहा है। यद्यपि कुछ काल के लिए वे सीटि-कांग्रेस कमेटी के प्रधान व मंत्री भी रह चुके हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा को संगठित व सशक्त करने के लिए उन्होंने बडे-बडे काम किये हैं। हैदराबाद की रजा-कार गवर्नमेण्ट के काल में उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़े। परन्तु इनको निर्भिकता के साथ सहते हुए पण्डित जी ने आर्यसमाज के संगठन को शिथिल नहीं होने दिया और समाज-प्रेमियों के साहस को बनाए रखा। आर्यप्रतिनिधि सभा के इतिहास में समय-समय पर आन्तरिक आँधियाँ भी पर्याप्त मात्रा में आती रहीं परन्तु पण्डित जी ने कभी उनका मुकाबला करके कभी उनकी उपेक्षा करके व कभी आँधी की धारा के रूख को बदल कर उन्होंने प्रतिनिधि सभा को सुरक्षित रखने में बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। यहाँ इससे अधिक कहा नहीं जा सकता।

अन्त में मुझे इतना ही कहना है कि सार्वजनिक नभोमण्डल के क्षेत्र में यह नक्षत्र ऊपर ही ऊपर उठ रहा है।

जामबाग,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

अभिनन्दन के दो पुष्प

–सुशीलादेवी विद्यालंकृता

नवयुवक हृदय–सम्राट् कहूँ या आर्य–जगत् के प्राण कहूँ, निज़ामशाही के काल कहूँ या अन्याय और अनीति के शत्रु कहूँ, आदित्य ब्रह्मचारी आनन्द कन्द भगवान् दयानन्द के योग्य अनुयायी कहूँ या स्वत: भी आदित्य ब्रह्मचर्य के उदात्त आलोक से आलोकित निष्काम, निर्लेप, निरहंकारी स्पृहणीय व्यक्तित्त्व से विभूषित ओजस्वी ब्राह्मण कहूँ ! कद में छोटे पर यश, काया में दीर्घ, धीर, वीर, व्याख्यान केसरी, जनता के अभाव अभियोगों के सच्चे साथी, कर्मठ लोकनायक यह हैं, स्वनाम धन्य श्री पं. नरेन्द्र जी !, बचपन से ही स्वदेश–प्रेम और स्वदेशाभिमान के भावों से भरा हृदय पाया है। आपका जीवन त्याग और तपस्या की शानदार मिसाल है। क्यों न हो ?

आर्यवीरों की है यह बान। त्याग, तपस्याएँ बलिदान

आपका जन्म १९०७ ई. चैत्र शुक्ल १० रामनवमी को हुआ। रामनवमी का अपना ही विशेष महत्व है। शायद इस दिन जन्म होने वालों का जीवन कठिन परीक्षाओं का जीवन ही हुआ करता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को भी राजपुत्र होते हुए भी जीवन में सदा अग्नि परीक्षाओं का सामना करना पडा। पहले विश्वामित्र जी के साथ अपनी किशोरावस्था, ताटका शंभु–निशुँभ आदि विकट राक्षसों का सामना करते हुए गुजारनी पडी। फ़िर माता कैकेयी की आज्ञानुसार अपना यौवन १४ वर्ष के वनवास के रूप में रावणी अत्याओं और अत्याचारों का सामना करने में व्यतीत करने पडे। कष्ट–कष्ट नहीं वरदान ही थे, क्योंकि इन कष्टों की अग्नि में तप कर ही उनका जीवन कुन्दन बन सका और संसार उनके मर्यादा पुरुषोत्तम को पा कर धन्य हो सका। कष्ट पडने पर ही मनुष्य की

परख होती है। आज लाखों वरस बीतने पर भी संपूर्ण भारत और भारत ही नहीं भारत की सीमाओं को लाँघ कर देश–देशान्तरों में अखिल गुण–धाम श्रीराम की कीर्ति कथा गायी जाती है। श्री पूज्य पंडित जी का जन्म भी रामनवमी के शुभ दिन पर हुआ। आपका जीवन भी अग्नि–परीक्षाओं की लम्बी कहानी है। पहले निज़ामशाही से लोहा लेने में ही आपकी आयु का अधिकांश भाग व्यतीत हुआ। हैदराबाद को रज़ाकारी अत्याचारों से मुक्त कराने में पूज्य पंडित जी का सर्व प्रमुख भाग रहा है। अब भी जहाँ कहीं अन्याय, अनीति गोचर होती है, वहीं उनका सामना करते हुए श्री पंडित जी दिखाई देते हैं। आम चुनाव में सीटी कांग्रेस कमेटी हैदराबाद के अधिकारी बन आपने अन्य प्रतिपक्षियों के दांत खट्टे किए और १०० फीसदी (शत–प्रतिशत) सफलता कांग्रेस को दिलाने का श्रेय प्राप्त किया। जीवन में अनेकों वार जेल यात्रा की; अनेकों वार चोटें खाई, ज़ख्मी हुए पर सत्य के रास्ते से कभी न डिगे। कष्ट उन्हें कभी पस्त हिम्मत न कर सके।

आपने उपदेशक विद्यालय लाहौर में शिक्षा प्राप्त की। आर्यसमाजी टकसालों में घड़े गये सिक्के अपनी चमक नहीं खोते। उनकी अद्भुत वक्तत्व शक्ति आर्यसमाज की ही देन है। आर्यसमाज को गर्व है कि उसने देश को पण्डित नरेन्द्र जी जैसे मंजे हुए तपे तपाये नेता प्रदान किये हैं। बहादुरयार जंग जो कुटिल चालें चल रहें थे, हजार हरिजनों को मुसलमान बना लिया था। श्री पंडित जी ने उनके ज़हरीले भाषणों का यथायोग्य उत्तर दिया और हरिजनों को फिर हिन्दू धर्म में लौटा लाये। निजाम सरकार की आप पर सदा कुदृष्टि रही। आपके भाषणों पर प्रतिबन्ध लगाये गये; आपको हैदराबाद का कालापानी मन्नानूर भेजा गया। आर्यसत्याग्रह में आपने अद्भुत कार्य कुशलता से आन्दोलन का संचालन किया।

क्या–क्या कहा जाये ! क्या–क्या लिखा जाये ! पंडित जी सदा से हमारे इतने निकट हैं कि उनकी खूबियाँ हम परख ही नहीं सकते। उनकी परख को दूर रहने वाले दूसरे ज्यादा अच्छी कर सकते हैं। फिर अपनों की ही क्या बढ़ाई की जाए। वे सदा से हमारे परिवार के बन्धुवत् घनिष्ट सम्बन्धी रहे हैं। उनका सरल हृदय बरबस ही सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। भगवान् करे उनकी कीर्तिकौमुदी दिग–दिगान्त में व्याप्त हो सके। आपकी राणा प्रताप–सी देशभक्ति, वीर शिवा की–सी निर्भीकता,

पंजाब–केसरी की–सी वक्तृत्वशक्ति, वंदा वैरागी की–सी कष्ट सहिष्णुता देश को उन्नति–पथ पर आरूढ़ कराने में और भी ज्यादा सहायक सिद्ध हो। देश, जाति, समाज, विशेषत: आर्यसमाज की सेवा के लिए भगवान् आपको दीर्घायु करें।

आर्यसमाज का मिशन अधूरा है। अभी 'कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' के ऋषि के स्वप्न को पूरा करना है। उसे आप जैसे कर्मवीर और धुन के धनी के सिवाय और कौन पूरा कर सकता है।

१५, झीरा कम्पाउण्ड,
सिकन्द्राबाद (आंध्र प्रदेश)

—

दक्षिण में आर्यसमाज के प्राण

—घनश्यामसिंह गुप्त
(मध्य प्रदेश विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष)

श्री पं. नरेन्द्र जी से मेरा सम्पर्क कई वर्षों से रहा है। अतः मैं उनके विषय में कुछ अवश्य कह सकता हूँ। आर्य समाज का जो हैदराबाद में सत्याग्रह हुआ। उसमें उस वीर आत्मा की पूरी परख हुई। अनियन्त्रित और अत्याचारी शासन के विरुद्ध आर्य समाज को जो सफलता मिली और जिसकी प्रशंसा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वयं की थी, उस सफलता के पर्याप्त हिस्सेदार पं. नरेन्द्र जी हैं। मुझे स्मरण है कि जब हैदराबाद शासन ने आर्य समाज के साथ समझौता का सन्देशा भेजा उस समय पं. नरेन्द्र जी को जेल से मुक्त वे नहीं करना चाहते थे। पं. नरेन्द्र जी को अपने शासन के लिए वे सबसे खतरनाक समझते थे। और सब सत्याग्रहियों की रिहाई तो वे करना चाहते थे परन्तु पं. नरेन्द्र जी की रिहाई बिलकुल नहीं करना चाहते थे। आर्य समाज की ओर से मैं भी इस बात पर अडा हुआ था कि पं. नरेन्द्र जी की मुक्ति पर यदि हैदराबाद शासन तैयार नहीं तो समझौता के लिए कोई स्थान नहीं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पं. नरेन्द्र जी का मूल्य हैदराबाद शासन की नजरों में और आर्य समाज की नजरों में क्या था। पं. नरेन्द्र जी, दक्षिण में आर्य समाज के प्राण हैं।

दुर्ग (मध्य प्रदेश)

त्याग और सेवा का आदर्श

—प्रोफेसर शेरसिंह

पं. नरेन्द्र जी जिस निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा कर रहे हैं वह हम सब के लिए एक आदर्श है। मुझे उम्मीद है उनके त्याग और सेवा से प्रेरणा ली जायगी और दिखाये मार्ग पर चलने का सकल्प लिया जायगा।

भारत सरकार के राज्यमंत्री, नई दिल्ली.

...उत्साह तथा निष्ठा उनके गुण हैं

—क्षेमचन्द्र सुमन

पं. नरेन्द्र जी की कर्मठता अध्यवसायिता तथा लगन हम सब के लिए अनुकरणीय है। मैंने उन्हें यद्यपि दूर–दूर से ही देखा है, किन्तु फिर भी इतना तो निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि वे कैसे भी कठिन तथा असाध्य कार्य को अपने ऊपर लेकर उसकी सफलता के लिए प्राणपण से जुट जाते हैं। युवकोचित उत्साह तथा निष्ठा उनके गुण हैं, जो हमें सदा–सर्वदा प्रेरणा देते रहेंगे।

'अजय निवास'
दिलशाद कालोनी,
शाहदरा, दिल्ली.

नानलनगर (हैदराबाद) अधिवेशन में कांग्रेसाध्यक्ष पं. नेहरू का स्वागत करते हुए पं. नरेन्द्र जी, स्वामी रामानन्द तीर्थ आदि के साथ।
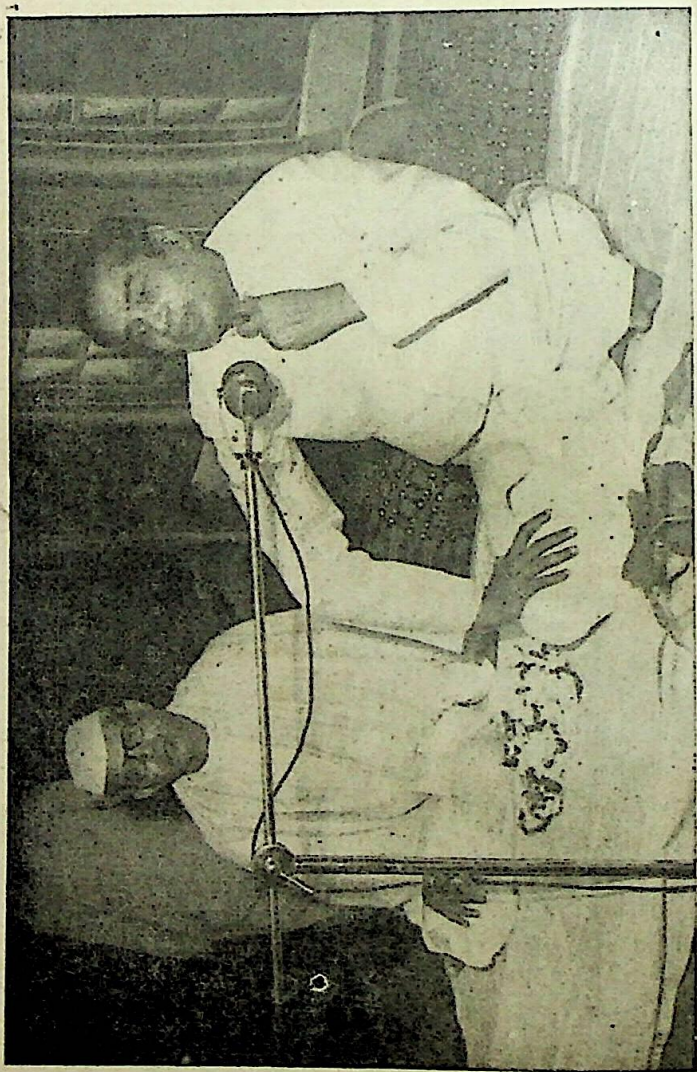
पं. नरेन्द्र जी डॉ. बी. गोपाल रेड्डी (उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल के साथ)

क्रांति की एक सजीव प्रतिमा : पण्डित नरेन्द्र

--प्रकाशवीर शास्त्री

१९३९ के हैदराबाद सत्याग्रह में जो नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता के लिये आर्य समाज ने छेडा था, मुझे भी एक सत्याग्रही के रूप में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। गुलबर्गा की सेन्ट्रल जेल में जहाँ सात महीने के लगभग मैं रहा, जब हैदराबाद रियासत के नेताओं की चर्चा चलती थी तो बार-बार पण्डित नरेन्द्रजी का प्रकरण आता था। उस समय तक मैंने उन्हें देखा नहीं था केवल कानों से ही उनकी कीर्ति गाथा सुनी थी। राज्य के लोग जब उनका युवक हृदय सम्राट और क्रान्तिकारी नेता के रूप में स्मरण करते थे तो इच्छा होती थी जल्दी ही इस वीर नेता के दर्शन कहीं हों। जेलों में सत्याग्रहियों की अदला-बदली भी होती रहती थी। सोंचा शायद इसी परिवर्तन में कहीं उनसे मिलना हो जाय। पर जब यह पता चला मनानूर की जिस जेल में पण्डितजी बन्द है वह हैदराबाद का कालापानी है। कठोर से कठोर यातना जिसको देनी होती है उसे मनानूर की काल क़ोठरी में रखा जाता है। इससे यह तो निश्चय हो ही गया पण्डित नरेन्द्रजी को देखना या मिलना जल्दी संभव नहीं है।

हैदराबाद का यह सत्याग्रह जब समाप्त होने लगा तब निज़ाम के सामने चौदह शर्तें रखी गई। यदि वह इन्हें स्वीकार कर लेते हैं तो सत्याग्रह बन्द कर दिया जायगा। निज़ाम की नई और पुरानी सब जेलें भर चुकी थीं और राशन-पानी भी कम हो चला था। सर अकबर हैदरी और दूसरे निज़ाम के सहायक सब इन प्रयत्नों में लगे थे - किसी तरह इन लोगों से पिंड छुटे। गांधीजी तक को बीच में डाल कर सत्याग्रह बन्द करने के प्रयास चल रहे थे। जब चौदह शर्तें निज़ाम के सामने आई तो उसने तेरह उनमें से

मान लीं। लेकिन एक नहीं मानी। वह चौदहवीं शर्त यह थी - पण्डित नरेन्द्रजी को ससम्मान मुक्त किया जाय। निजाम का कहना था - यह व्यक्ति बाहर आया तो फिर आग फैल जायगी। पर आर्य सत्याग्रह के नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त ने भी स्पष्ट कह दिया - यदि पण्डितजी रिहा न होते तो सत्याग्रह जारी रहेगा। उधर निज़ाम हैदराबाद और उनके साथी यह सोच रहे थे - तेरह बातें तो मान ही ली हैं एक न भी मानी तो क्या आर्य समाजी अड़ेंगे? इसी खींचातान में सत्याग्राह और एक मास खिंच गया। अन्त में हैदराबाद रियासत को झुकना पडा और पण्डित जी भी अन्य सत्याग्रहियों के साथ रिहा कर दिये गये।

हैदराबाद सत्याग्रह के सातों डिक्टेटरों का और उन हजारों सत्याग्रहियों का देश भर में भारी स्वागत हुआ जिनकी आठ मास की तपस्या ने एक अत्याचारी शासक से घुटने टिकवाये थे। पर जनता के मुंह पर जगह-जगह एक ही आवाज़ थी - पण्डित नरेन्द्र कौन से हैं? पूछना स्वाभाविक ही था - आखिर वह चमत्कारी व्यक्तित्व किसका है जिसके लिए तेरह शर्तें एक ओर रखी ज़ा सकती हैं और उनकी रिहाई दूसरी ओर। बात सुनने में वडी मामूली सी लगती है पर इस जिन्दा शहीद के शरीर की टूटी हुई एक-एक हड्डी देखकर पता लगेगा क्या है - पण्डित नरेन्द्रजी। तीन बार तो मज़हबी जनून में अन्धे मुसलमान इन्हें मरा समझकर छोड गये। पर 'जाको राखे साइयां मार सके ना कोय। देश और समाज को तो उनसे अभी बहुत लाभ उठाना था, फिर उन्हें मारने के कुचक्र सफल कैसे हो सकते थे।

सुभाष बाबू के लिए कभी किसी ने लिखा था - "जेलों में ही बीते जिसके होली - दीपावली - दशहरा"। वह ही बात पण्डितजी पर भी लागू होती है। लाहौर के दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय से अपनी शिक्षा समाप्त कर जब से वह हैदराबाद लौटे तभी से निज़ाम के जेलखानों को उनसे कुछ मुहब्बत सी हो गई थी। मां-बाप और बहिन की मृत्यु के समाचार भी जेल में ही उन्हें सुनाये गये। विवाह का कभी प्रसंग यों नहीं आया कौन एक नया बन्धन और गले में बांधे। अब तो पैंसठ वर्षीय इस श्वेत वस्त्रधारी साधु के मां-बाप, भाई-बहन जो भी कुछ हैं वह सब आर्यसमाज और ऋषि के सिद्धान्त ही हैं।

आचार्य नरदेव शास्त्री जी को यह देखा था उनके पास जो कुछ भी आया वह उसी दिन बंट जाता था। एक बार तो कम्बल के ऊपर धान की पुआल डालकर जब उन्हें प्रातः चार बजे सोते किसी ने देखा और पूछा आपकी रज़ाई कहाँ गई ? तो बोले कल सर्दी में ठिठुरता एक गरीब किसान आया था उसे दे दी। गरीब और गरीबी के नाम पर आंसू गिराने वाले आज कितने ऐसे हैं जिनमें गरीबों के लिए यह दर्द हो। पर पण्डित नरेन्द्रजी में वह दर्द और अहसास दोनों मिलेंगे।

कितने असहाय छात्र थे पढ़ लिखकर आज उनकी कृपा से अपने पैरों पर खडे हैं। पण्डितजी पर जो भी कहीं से कुछ भी आया वह आज आया और कल गया। वेद का वह सिद्धान्त शायद जीवन में उन्होंने प्रत्यक्ष उतार लिया है - दो तो इस तरह दो जो दायें हाथ का दिया बायें हाथ को भी पता न चले। किसी विधवा की लडकी का विवाह है तो वह उनके दरबार में हाजीर है, किसी छात्र के पास फीस के पैसे नहीं है तो वह वहाँ खडा है किसी के पास किताबें नहीं हैं तो वह उनसे अधिकारपूर्वक मांग रहा है। किसी को आर्य प्रतिनिधि सभा से दिया, किसी को अपनी जेब से दिया और दोनों जगह न हुआ तो किसी को किसी से कह कर दिलवा दिया। एक बार पण्डितजी हैदराबाद में विधान सभा के सदस्य हो गये और इसी तरह कुछ दिन आन्ध्र प्रदेश खादी कमीशन के सदस्य भी रहे। दोनों ही जगहों से उन्हें जो भी वेतन या दैनिक भत्ता अथवा यात्रा भत्ता मिला वह भी सब मियां जी की दाढ़ी की तरह तबीजों में ही बंट गया। वह स्वयं आज भी ज्यों के त्यों स्वामी फक्कडानन्द ही हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी मैंने देखा है जब स्वयं उनके अपने शरीर पर भी फटे हुए ही कपडे रहते हैं। किसी ने व्यवस्था कर दी तो ठीक है अन्यथा स्वयं तो वह किसी से कहने को रहे।

हैदराबाद में हुए आर्य सम्मेलनों और मथुरा दीक्षा शताब्दी तथा मेरठ में हुई उत्तर प्रदेशीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह को निकट से जिन्होंने देखा है वह उनकी कार्यक्षमता से जरूर परिचित होंगे। दिन-रात खडे रहकर जिस तरह उन्होंने इन समारोहों को सफल बनाया वह दूसरे किसी एक व्यक्ति के बूते का काम नहीं था। इसीलिए शायद १९७५ में होने जा रहे ऐतिहासिक आर्य समाज शताब्दी समारोह का भी प्रमुख दायित्व उन्हीं के कन्धों पर रखा गया है। उनको कोई भी दायित्व सौंप कर निश्चिन्त हो

जाय तब उनकी प्रतिभा का पता लगता है। पर जब उनको काम सौंप कर कोई अपनी मीन-मेख उसमें लगाता है तो वह तिलमिला जाते हैं। पर कुछ लोगों को आदत होती है जो दूसरे के काम में भी अपनी टांग अटकाये बिना नहीं रहते।

युवक प्रारम्भ से ही उन्हें बहुत प्यार करते हैं। उन्हें भी युवकों से सहज स्नेह है। युवा शक्ति को सही दिशा और उनकी अवस्था के अनुरूप काम यदि मिल जाय तो आज हमारे समाज को जो उनसे शिकायत है वह शायद सुनने को न मिले। उनका गरम खून कुछ काम चाहता है और वह काम भी गरम ही हो तो अधिक अच्छा रह सकता है। यह आवश्यक नहीं काम राजनीतिक ही हो, सामाजिक भी हो सकता है। हैदराबाद के निज़ाम पर बम फेंकने से लेकर रिज़वी के रजाकारों का सामना करने के लिए जो युवक अपने प्राण हथेली पर रख कर आये उन्हें पण्डित नरेन्द्रजी का सक्रिय आशीर्वाद प्राप्त था। हैदराबाद के भारत में विलय के बाद भी वह उन युवकों को नई दिशा देना चाहते थे। पर निज़ाम का सूर्य अस्त होते ही कुछ ऐसी आपाधापी मची जो किसी ने उधर ध्यान ही नहीं दिया। बड़े-बड़े जिम्मेदार नेता और अधिकारी ही जब लावारिस माल की तरह सालारजंग और निजाम की लूट में लगे थे तब भला इस ओर किसका ध्यान जाता। राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय स्वाभिमान दोनों का अभाव ही देश में इसलिए हो गया क्योंकि युवापीढी को विश्वास में लेकर उन्हें अपेक्षित दायित्व नहीं सौंपे गये। गांधी के त्याग-तप और बलिदान को जितना सत्ताधारी गांधीवादियों ने धूल में मिलाया उतना दूसरों ने नष्ट नहीं किया।

आर्यसमाज जिसने कभी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया था वह भी आज किंकर्तव्य विमूढ़ सा हो गया है। अपने सभाइयों का एक वर्ग पहले भी आर्य समाज में था जो ब्रिटिश हकूमत के विरोध में सुनना या बोलना भी अपराध मानता था। पर ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी जो थोडी-बहुत थी भी वह पंजाब या उसके आस-पास ही रही। स्वाधीन भारत में तो उसके भी समाप्त होने की पूरी सम्भावना थी। लेकिन आज के राजनीतिक वातावरण को देखकर तो लगता है - अन्याय को सहन करने की हवा दबने की बजाय और बढ़ रही है। अन्याय से छाती खोलकर लडने का हौसला बहुत कम देखने को मिलेगा।

समाज में जो आज भ्रष्टाचार, बेईमानी और रिश्वत के कीटाणु फैलते जा रहे हैं उसके अन्य कारणों में एक कारण यह भी है - अन्याय को सहन करने का स्वभाव लोगों का बनता जा रहा है। सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में स्वामी जी ने मनुष्य की अपनी सर्वथा नई व्याख्या करते हुए लिखा है जो अन्याय को मिटाने में प्राणों तक की बाजी लगा दें मैं उसे सच्चा मनुष्य मानता हूँ। पर कितने हैं जो आज उनकी इस व्याख्या को जीवन में स्थान दे रहे हैं। अब तो मन कहता है फिर कोई भगतसिंह और राजगुरु आगे आयें और एक बार जमकर इन स्वार्थी तत्वों से लोहा लें। अन्यथा वीर प्रसविनी यह धरती इसी तरह अपने हाल पर तरस खाती रहेगी।

समय के साथ आर्य समाज अपनी कार्यपद्धति में कुछ आवश्यक परिवर्तन करे। सप्ताह में एक बार सत्संग कर लिया, वर्ष में एक बार उत्सव कर लिया और चुनाव कर लिया यह प्रक्रिया अब बहुत पुरानी हो गई है। नई पीढ़ी इधर क्यों नहीं आ रही, दलित और पीडित क्यों समाज से निराश हो गये, सामाजिक चेतना का अग्रदूत संगठन क्यों प्रभाव शून्य हो गया ऐसे अनेकों प्रश्न हैं जो आज के आर्य समाज से उत्तर चाहते हैं। समाज की जिन बुराइयों को दूर करने आर्य समाज चला था कहीं स्वयं ही तो आज उनका शिकार नहीं हो गया ? पण्डित नरेन्द्रजी जैसे निर्भीक और तपस्वी व्यक्ति ही इसका कुछ समाधान खोज सकते हैं। परमात्मा उन्हें दीर्घायु और सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करे जो समय के साथ आर्य समाज को उनका नेतृत्व नई दिशा प्रदान कर सकें।

संसद सदस्य,
(राज्य सभा),
केनिंगलेन, नई दिल्ली-१

विचित्र कार्य क्षमता

–पं. शिवकुमार शास्त्री

अब से लगभग २५ वर्ष पूर्व सन् ४९ की बात है–में आ. स. सुल्तान बाजार, हैदराबाद दक्षिण के उत्सव पर गया। उस समय दक्षिण के तीन आर्य नेताओं की चारित्रक वैयक्तित्व विशेषताओं ने मुझे विशेष रूप से आकृष्ट किया। ये तीन महानुभाव श्री पं. विनायक राव जी विद्यालंकार, श्री पं. नरेन्द्र जी और श्री पं. वंशीलाल जी व्यास थे। श्री राव साहिब में कुल-विद्या की ख्याति के साथ सरलता और सौजन्य ने मिलकर उनके व्यक्तित्व को आकर्षक और मोहक बना दिया था। उदगीर के उत्सव के तीन दिनों में हमारे साथ खूब घुल मिलकर और हँस-खेल कर रहे। श्री व्यास जी के विषय में पहले तो उनकी भूषा ही उनको जानने के लिए प्रेरित करती थी। किन्तु इसके पश्चात् उनकी कार्यक्षमता, दृढता और स्फूर्ति तो अच्छे-अच्छे युवकों को प्रतिस्पर्धा के लिए चुनौती देती थी। श्री व्यास जी का तो अब इस संसार में नाम ही शेष है। तीसरे महानुभाव श्री पं. नरेन्द्र जी हैं। पहले ही पहले जब मैंने श्री पं. नरेन्द्र जी को देखा तो उन्हें देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। आश्चर्य का कारण यह था कि श्री पं. नरेन्द्र जी की कार्य-पटुता साहस और त्याग की अनेक बातें मैं पहले से ही सुन चुका था। और उस गुणगरिमा के आधार पर मेरे मन के चित्रकार ने एक कल्पित नरेन्द्र का चित्र मन में तैयार कर दिया था। अब जब कि वास्तविक नरेन्द्र मेरे सामने थे––मेरे मन के कल्पित नरेन्द्र की वास्तविक नरेन्द्र की संगति नहीं बैठ रही थी। मेरे मन के नरेन्द्र एक विशाल कार्य, ऊर्ज और बल के मूर्तरूप थे किन्तु वास्तविक नरेन्द्र उस चित्र से बिलकुल विपरीत। छोटा-सा कद पैनी आँखें अपेक्षाकृत बडे कान और घूमती हुई चाल। मैंने इस महानुभाव के शारीरिक वैभव को देखकर जब उत्सव में प्रबन्ध के जादू देखा तो स्तब्ध रह गया। क्या स्फूर्ति और निपुणता थी––मन में आया इस स्फूर्ति के होते हुए क्या आवश्यकता थी लम्बे शरीर का बोझ लादने की।

पर इससे अधिक श्री पं. जी की गुणगरिमा को अत्यन्त निकट से देखने का अवसर पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में मिला। इस पावन समय को मैं जीवन का एक अविस्मरणीय अध्याय समझता हूँ।

श्री पं. नरेन्द्र जी के दुबले-पतले शरीर में एक विचित्र कार्यक्षमता है। सत्याग्रह के दिनों में नित्य की डाक को सँभाल कर उत्तर देना एक समस्या थी। किन्तु श्री पं. जी एक बार आसन लगा कर जब तक नित्य की डाक का उत्तर तैयार न कर लेते थे तब तक अपनी कुर्सी से हिलते न थे। ज्योंही डाक निपटी तो फिर किसी न किसी सभा में भाषण देना और आगन्तुक जत्थों का स्वागत करना होता था वहाँ भागते। उस सभा को समाप्त करके कार्यालय में ११ बजे रात को पहुँच कर भोजन करने लगते तो ट्रंक-काल का तांता प्रारम्भ होता। भोजन के बीच में से उठकर दो-दो बार फोन सुनते और रात के लगभग १ बजे तक यह सिलसिला चलता रहता और दो घंटे के बाद तीन बजे से फिर 'कालों' की बुलबुलाहट प्रारम्भ होती और ८ बजे तक चलती रहती। यह क्रम चार-छ: दिन का नहीं महीनों रहा। हम लोग श्रान्त शिथिल हो जाते थे, पर पं. जी थे जो थकने का नाम न लेते थे। "सुश्रान्तोऽपि वेहद्वारंभिक" को श्री पं. जी के जीवन में पूरा घटते देखा।

व्यवस्था और अनुशासन प्रियता भी श्री पं. जी के जीवन की अनुकरणीय विशेषता है। काम समय पर और सुन्दरता से होना चाहिए। इन दोनों में शिथिलता करने वाला व्यक्ति श्री पं. जी की भर्त्सना से नहीं बच सकता, हमने आन्दोलनों के दिनों में देखा कि जो इस साँचे में अपने आप को नहीं ढाल सके—उनको कार्यालय छोडना पडा।

इनके अतिरिक्त श्री पं. जी के जीवन में दो अनुपम गुण परदु:ख कातरता और उदारता देखे। किसी भी शक्ति की चारित्रिक महत्ता का मापदण्ड यह नहीं है कि वह अपने समकक्ष और अपने से कई व्यक्तियों के साथ किस प्रकार बरताता है ? अपितु व्यक्ति की महत्ता इससे जानी जाती है कि वह अपने से छोटे और अपने आधीन व्यक्तियों के साथ कितनी सहानुभूति और आत्मीयता रखता है। ये दोनों दैवी गुण श्री पं. जी को सहज रूप में प्राप्त है। वे किसी के दु:ख को देखकर व्याकुल हो जाते हैं और उसे दूर करने के जिम्मे पूरी शक्ति लगा देते हैं। सत्याग्रह के दिनों में ही कार्यालय के दो सेवकों पर कुछ आपत्तियाँ आयीं। एक का नवजात शिशु-संसार छोड कर चला गया और दूसरा कुछ-कुछ समय के पश्चात् रोगी हो जाता था।

इन दोनों के साथ श्री पं. जी का जो स्नेहपूर्ण उदार व्यवहार हमने देखा वह कोई पिता ही अपने पुत्र पर कर सकता है।

श्री पं. जी का सर्वस्व आर्यसमाज ही है। सब नाते और रिश्ते आर्य समाज के सभासद हैं। अपने जीवन में सभा भवन और आर्यसमाज का विशाल मन्दिर किस तत्परता और लग्न से तैयार कराया है वह सहृदय व्यक्ति सहज ही अनुभव कर सकता है। निस्सन्देह ऐसे व्यक्ति जो २४ घंटे समाज के लिए ही कमर कसे रहते हैं। वे आर्यसमाज के गौरव हैं और आर्यसमाज इन्हीं महानुभावों के तप.पूत आचारों से अनुप्राणित हो रही है।

संसद सदस्य (लोक सभा)
नई दिल्ली

कर्मवीर श्री पं. नरेन्द्र जी

— रामगोपाल शालवाले

श्रीयुत पं. नरेन्द्र जी आर्यजगत् के एक विशिष्ट आर्य नेता हैं जिनका समस्त जीवन और जीवन का एक-एक क्षण आर्य समाज पर अर्पित है।

हैदराबाद राज्य में तत्कालीन प्रबल निज़ाम-शाही से टक्कर लेकर जिन बलिदानी आर्यवीरों ने राज्य में आर्यसमाज को निर्बल होने से बचाया और जिन्होंने अपने खून-पसीने से आर्य समाज को एक महती शक्ति बनाने और उसे गौरवपूर्ण स्थान दिलाने का श्रेय प्राप्त किया उनमें युवक-हृदय सम्राट श्री नरेन्द्र जी को ऊँचा स्थान प्राप्त है।

निज़ामशाही की दृष्टि में इनसे अधिक खतरनाक व्यक्ति शायद ही अन्य कोई रहा हो। कौनसा बडे से बडा अपमान था जो इन्होंने न सहा हो,

कौनसी बडी से बडी शारीरिक यातना थी जो उसके हाथों इन्होंने सहन न की हो, कौनसा बडे से बडा प्रलोभन था जो इन्हें पथभ्रष्ट करने के लिए प्रस्तुत न किया गया हो, दयानन्द के इस वीर सैनिक ने कालेपानी का दण्ड भुगता, एकान्त कारावास की भीषण यातनाएँ सहन की, पुलिस के दण्डों की मार सही, अपमान के कडवे घूँट पिए परन्तु अपने मार्ग से विचलित न हुआ। इन परीक्षणों में से वह तो कुन्दन बनकर निकला परन्तु निज़ामशाही की गहरी जडें हिल गई।

हैदराबाद आर्य समाज के सफल ऐतिहासिक धर्मयुद्ध की प्रशस्त भूमिका के मुख्यतम प्रेरक तत्व श्री नरेन्द्र जी जैसे आर्यवीरों का तप, त्याग और बलिदान ही था। सत्याग्रह की समाप्ति के बाद से यही जीवित शहीद उस राज्य में आर्य समाज की नौका का कुशल नाविक बना हुआ है और आर्य समाज की जीवन-ज्योति को अक्षुण्य बनाए रख रहा है। वह वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के प्रधान के रूप में आन्ध्र प्रदेश में तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में आर्य समाज का सफल नेतृत्व करते रहे हैं।

मान्य पण्डित जी हृदय और मस्तिष्क के विशिष्ट गुणों के मालिक, प्रौढ़ वक्ता और कुशल कार्यकर्त्ता हैं। पंजाब के भाषा स्वातन्त्र्य आन्दोलन और सत्याग्रह यज्ञ के ब्रह्मा पंडित जी ही थे जिसके विशाल और अहिंसात्मक स्वरूप की प्रजा और प्रशासन दोनों ने ही मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। उनकी संघठन-शक्ति, कार्य-कुशलता और अनथक परिश्रम-शीलता को हमें सभा के कार्यालय में ही निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन्हें देखकर हम उनके सहकर्मी अवाक रह जाते थे। दयानन्द दीक्षा-शताब्दी मथुरा सन् १९६० का प्रबन्ध भार उनके ही कंधों पर रहा था।

हैदराबाद में १९५४ और १९६८ में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के दो अधिवेशन हो चुके हैं। दोनों ही पंडित जी की प्रबन्ध-पटुता और उनके प्रभाव के मूर्तिमान रहे।

पण्डित जी ने देश के स्वातन्त्रय संग्राम में भी सक्रिय भाग लिया था वह कई बार जेल भी गए। हैदराबाद राज्य के भारतीय संघ में विलीनी-करण में उनका मूल्यवान योग रहा। वे हैदराबाद की धारा-सभा के भी सदस्य रहे। इस पर भी आर्य समाज से एक क्षण के लिए भी वियुक्त न

हुए और अब तो उनकी चिन्ता और शानदार प्रगतियों का एकमात्र केन्द्रविन्दु आर्य समाज ही है जिसकी सेवा का उन्होंने प्रारम्भ से ही व्रत लिया हुआ है।

श्री पण्डित जी का मूक अभिनन्दन सहस्त्रों ही नहीं लाखों हृदय करते हैं। उस अभिनन्दन स्त्रोत में से यहाँ कुछ ही कण कागज पर छित-राए जा सके हैं।

उपाध्यक्ष,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
बी. ३/४, मन्दिर माल, कृष्ण नगर,
दिल्ली

आन्दोलनों व सम्मेलनों के संचालक

—ओ३म्प्रकाश त्यागी

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित वैदिक धर्म की गहराई में उतरने वाले युक्तियों के द्वारा उसका प्रतिपादन करने वाले तथा उनके ग्रन्थों पर टीका व उसका विवेचन करने वाले महानुभावों की आर्य समाज में कमी नहीं है, परन्तु ऐसी विभूतियाँ केवल उंगलियों पर गिनने लायक ही है जिन्होंने महर्षि के सन्देश के प्रचार व प्रसार के लिये अपने सर्वस्व की आहुति दे दी है और जो उठते-बैठते, खाते-पीते आर्य समाज को प्रगति देकर इसे गौर्वान्वित करने के निमित्त सतत् चिन्तन करते हैं। ऐसे ही इने-गिने व्यक्तियों में माननीय भाई पं. नरेन्द्र जी का स्थान है।

श्री पं. नरेन्द्र जी पैदायशी नेता हैं। कुर्सी पर बैठकर नेतृत्व करने के वह आदी नहीं। संकट के समय अपने अनुयायिओं को मृत्यु के मुँह में धकेलने के बजाय वह स्वयं उसके लिये आगे बढ़ने में गौरव अनुभव करते हैं। यही कारण है कि हैदराबाद राज्य की निज़ामशाही व रज़ाकार अत्याचार के सन्मुख उन्होंने सीना तानकर राज्य की जनता को क्रान्तिकारी जीवन प्रदान किया था।

श्री पं. नरेन्द्र जी के लिये आर्य समाज सर्वोपरिय है। बहुधा लोग लोभ, भय या अन्य भौतिक प्रलोभनों के समय अपने लक्ष्य से विचलित हो जाते हैं, परन्तु श्री पण्डित जी ने आर्य समाज के हित को सदैव अन्य हितों से ऊपर रखा है। अपना परिवार, मित्रवर्ग तथा अन्य संस्थायें उनकी अपनी होते हुए भी उन्हें कभी अपने मार्ग से विचलित न कर सके।

जीवन में स्वच्छता, नियमितता तथा अनुशासन के श्री पण्डित जी पक्षपाती हैं। जिस क्षेत्र व स्थान में श्री पण्डित जी प्रवेश करते हैं वहाँ उत्तमगुण स्वत: दृष्टिगोचर होने लगते हैं। यही कारण है कि अखिल भारतीय आन्दोलनों व सम्मेलनों के संचालकों के रूप में सदैव सर्व सम्मति से उन्हीं को याद किया जाता रहा है।

व्यवहारिकता श्री पण्डित जी की अपनी निराली विशेषता है। अपनी बात को दूसरों के दिल-दिमाग तक पहुँचाने तथा शत्रु को मित्र बनाने की कला उनकी अपनी है। उनकी व्यवहारिकता के पीछे उनकी विशाल गम्भीरता, विनम्रता तथा मधुरता उनके उत्तमगुण को चार चाँद लगा देते हैं।

श्री पण्डित जी व्यवहार में जितने विनम्र एवं मधुर हैं उतने ही सिद्धान्त पर अडने में कट्टर व दृढ़ हैं। सिद्धान्त भेद होने पर उनका स्वरूप ही बदल जाता है। इस प्रकार श्री पण्डित जी विनम्रता, मधुरता, कट्टरता व दृढ़ता का साक्षात् समन्वय हैं।

श्री पं. नरेन्द्र जी जैसे महापुरुष का मुझे सदैव प्रेम व सहाय प्राप्त होता रहा है इसे मैं अपना गौरव ही अनुभव करता हूँ।

संसद सदस्य (लोक सभा)
१५, केनिंगलेन,
कर्जनरोड,
नई दिल्ली

"नरेन्द्र" एक आवाज़

—कमल प्रसाद 'कमल'

वह आवाज़, होश ने जिसको सुनकर
आँखें खोलीं
वह आवाज़ जोश की लहरें–
जिसको सुनकर डोलीं
वह आवाज, उतर कानों से
जो कि दिलों में गरजे
वह आवाज़ मौत की घाटी–
जिसको सुनकर लरजे
वह आवाज़, आत्मा को झकझोरे–
जिसकी गुंजन
तलवारों के साये में जो करे
अभय – मन नर्तन।
देश, धर्म के लिये बाँध ली
जिसने सर पर कफ़नी
महाकाल की छाया में भी–
टेक न छोड़ी अपनी।
वह आवाज़ मरघटों में भी
जिसने अलख जगाई
वह "नरेन्द्र" का रूप लिये–
जलती दुनिया में आई।
फैली यह आवाज़, घरों में,
जलते विरानों में,

देश प्रेम जागा, लाखों अलबेलों
मस्तानों में ।
इसमें थी मादकता मधु की–
तेजी तूफ़ानों की–
इस से मिली, अनेक पगों को–
दृढ़ता चट्टानों की ।
आया वह दिन, जब दुनियां ने
यह अचरज भी देखा–
बनी यही आवाज़–
सुनहली भाग्य नगर कीरेखा ।

संपादक 'आन्ध्र प्रदेश'
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग,
हैदराबाद

हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम

–हरिनामसिंह 'प्रवासी'

हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम
हे आर्य वीर तुमको सलाम।

इतिहास तुम्हारे पग डग से
दक्षिण पथ का है लिखा गया

हो त्याग, तपस्या जीवन में
यह जन-जन को है सिखा गया

तेरे डग की चंचलता ने
कब जाना कैसा है विराम ?
हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम
हे आर्य वीर तुमको सलाम।
तेरे हुँकारों से यौवन,
अंगडाई ले धहर उठा,
तुम ने ललकारा वृद्धों को,
तो, यौवन उनमें मुखर उठा।
तेरे हुँकारों, ललकारों से
थर्राया, अत्याचारी निज़ाम
हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम
हे आर्य वीर तुमको सलाम।
दुखियों के दुःख को देख, निरख
तेरे दृग नम हो जाते हैं
पीड़ित को देता हँसी-खुशी
ग़म उनके कम हो जाते हैं।
'कृण्वन्तो विश्व मार्यम' का सन्देश लिए
फिरता रहता है नगर ग्राम
हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम
हे आर्य वीर तुमको सलाम !
तुमको न वयस की सीमा भी
डरते - डरते छू पाई है
वह कोसों दूर खडी तुमसे–
वय सरसठ में तरूणाई है।

ऋषि दयानन्द का अलख जगा
वेदों के पिलाता अमर जाम
हे आर्य पुत्र तुमको प्रणाम–
हे आर्य वीर तुमको सलाम।

सह-संपादक 'हिन्दी मिलाप'
उदासीन काटेज,
हुसैनीअलम, हैदराबाद-आं. प्र.

सौन्दर्य एवं कला के उपासक पण्डितजी

—अनिलादेवी 'काव्यतीर्थ'

जीवन में संघर्ष भरे हों, संघर्षों में हो जब प्राण,
तब उन प्राणों में होता है, नव-जीवन का निर्माण।

कैलाश के धवल शृंग की नाई एक महान् एवं आदर्श दृश्य के रूप में श्रद्धेय पण्डित जी हमारे समक्ष उपस्थित हैं। सिर से पैर तक खादी के धवल वस्त्रों से सज्जित, त्याग, तपस्या की साक्षात् प्रतिभा को देखते ही अन्तरात्मा में स्वाभाविक श्रद्धा के भाव उमड़ने लगते हैं।

अत्यन्त सरल एवं सौम्य प्रकृति पंडित जी अपनी प्रतिभा को लेकर जिधर भी गये आंधी की तरह गये, और आसमान पर छा गये। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक कोई भी क्षेत्र तो ऐसा नहीं जो आपकी कर्त्तव्य-परायणता से वंचित रहा हो। दक्षिण प्रदेश के कोने-कोने में पंडित जी की सेवा प्रतिध्वनि गूँज रही है।

हैदराबाद के अतीत पर आंख उठाकर देखते हैं, तो रोमांच हो आता है। कितने भीषण संकट एवं संघर्षों से लडते-भिडते आर्यों ने अपने मार्ग को प्रशस्त किया है। पंडित जी उन महान् आत्माओं में से हैं, जिन्होंने स्वयं असीम यातना को सहा है। कभी कठोर सश्रम कारावास में हैं, कभी आहत होकर अस्पताल में पडे हैं। कभी प्रतिबन्ध लगने पर भी भाषणों की झडी लगा रहे हैं, कभी राष्ट्रभाषा के प्रचार में लगे हैं। कहीं शुद्धि का सुदर्शन चक्र चला रहे हैं, कहीं गोवध को अवैध घोषित करने की योजना बना रहे हें। कहीं किसी जुलूस का नेतृत्व कर रहे हैं, और कहीं राजनीति के प्रांगण में अपने ज़ोर दिखा रहे हें। कितना अद्भुत व्यक्तित्व है!

मानव मात्र से स्नेह तथा उसकी सेवा को ही जीवन का उद्देश्य बना कर पंडित जी कार्यभार वहन किये जा रहे हैं। वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति के लिए पंडित जी अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर भी अविराम क्रियाशील रहते हैं। संसार की कोई शक्ति इन्हें अपने लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकती न केवल आर्यजगत् में अपितु राजनीति में भी आपका अपना विशिष्ट स्थान है।

गत निर्वाचन के समय भोपाल में कांग्रेस की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए धुआंधार भाषण दिये जा रहे हैं। अनेक स्थानों पर बोलते-बोलते छाती में दर्द होने लगा। खून के वमन शुरू हो गये, परन्तु यह तो पंडित जी के वाणी का प्रभाव है, जो रुकने का नाम भी नहीं लेता। बोलते हैं, तब ऐसा लगता है, मानो जनता में नशा चढ़ा। विशाल जनसमूह के साथ इस तरह खिलवाड करते हैं, जैसे हवा डालियों को हिलाती, पत्तों से खेलती और फूलों में एक सिहर उत्पन्न कर, एक प्राण फूँककर चली जाती है।

एक बार लोकसभा और विधान सभा की टिकिट मिलने पर भी स्वयं न रखकर औरों को दे दी। लोगों ने तो टिकट के लिए अनेक प्रयत्न किये, दिल्ली तक दौड लगाई, और यह पंडित जी हैं, जिन्हें कोई स्पृहा नहीं। हाई कमांड ने आदेश दिया कि अपको विधान सभा की सदस्यता बनाये रखना है, तथापि आपने नम्रतापूर्वक निषेध कर दिया। इस प्रकार इन्हें जनमत की अपेक्षा नहीं जनमत को उनकी आवश्यकता है।

वैसे पंडित जी की गुणगाथा को सुनने का अवसर तो समय-समय पर मिल ही जाता था परन्तु दर्शनों का पुण्य लाभ तो दिसम्बर सन् ६५ में हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती के अवसर पर ही हुआ। बडे से बडा और छोटे से छोटा कार्य भी पंडित जी स्वयं वहन कर रहे थे। कितने महान् और कितने निराभिमानी ! विशाल जन-समूह में कहीं-कहीं से ऐसे भी शब्द कुछ सुनायी पड रहे थे, यह आर्य समाज का उत्सव नहीं, यह तो "नरेन्द्र-मेला" है।

प्रायः यह कहा जाता है कि आर्य समाज के उत्सवों पर कला के नाम को हरा पत्ता भी नहीं होता परन्तु जिन्होंने हैदराबाद में आर्य समाज के उत्सव देखे हैं उन्हें ज्ञात होगा कि कितनी सुन्दर सजावट की जाती है।

रजत-जयन्ती होने वाली थी, उसके अगले दिन मैं एक ओर कुछ महिलाओं से वार्तालाप कर रही थी, वहीं मैंने देखा कि पंडित जी कितनी तन्मयता और लगन से मंच का शृंगार कर रहे थे। यहाँ तक कि किसी कर्मचारी से उन्होंने कहा कि "कौन से रंग का फूल और कली कहाँ लगेगी वह मुझे पूछ कर लगाना।" इससे प्रतीत होता है कि पंडित जी केवल कर्मठ कार्यकर्त्ता ही नहीं सौंदर्य एवं कला के उपासक भी हैं।

पंडित जी दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में मेरे पतिदेव पं. ज्ञानेन्द्र जी सिद्धान्त भूषण जो हैदराबाद सत्याग्रह के समय सप्तम सर्वाधिकारी थे उनके सहाध्यायी रह चुके हैं। स्व. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी गर्व के साथ कहा करते थे: 'मेरे शिष्यों में यश की दृष्टि से प्रथम स्थान "नरेन्द्र" का है।'

बंबई (महाराष्ट्र)

ज्ञान-ज्योति जगानेवाले

—श्रीमती लक्ष्मीदेवी

नवयुवक हृदय सम्राट श्री पं. नरेन्द्रजी ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा, कार्यशीलता, संलग्नता, आत्मविश्वास से हैदराबाद प्रदेश में जो ज्ञान-ज्योति जगाई है, वह कभी बुझ नहीं सकती है।

महर्षि दयानन्द के चरण दक्षिण प्रदेश में न पहुँच सके, इसलिए कई वर्षों तक वहाँ पर आर्य समाज की प्रगति रुकी रही। परन्तु पं. नरेन्द्रजी ने इस कमी को अनुभव किया, और दक्षिण प्रदेशों में आर्य समाज के प्रचार कार्य में सतत प्रयत्नशील हैं। अपनी आयु के ५० वर्ष आपने महर्षि के

उद्देश्यों को पूर्ण करने में और मनुष्य जाति को मानवता का पाठ पढ़ाने में व्यतीत कर दिये। यदि आपको दक्षिण भारत का प्राण कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

रात-दिन परिश्रम करने पर भी आप श्रान्तकलान्त नहीं होते हैं। आपका कार्य क्षेत्र सीमित या संकुचित नहीं है अपितु विस्तृत है। आप प्रत्येक क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं। हैदराबाद आपकी सेवाओं को कभी भूल नहीं सकता। आप केवल आर्य समाजी कार्यकर्त्ता ही नही हैं, कांग्रेस के कार्य-क्षेत्र में भी आपका सर्वमान्य प्रमुख स्थान है। भारत के सभी बड़े-बड़े स्थानों में जहाँ निर्वाचन हुआ, कांग्रेस के साथ साथ अन्य दलों को भी कुछ सफलता अवश्य मिली, परन्तु हैदराबाद में जहाँ कांग्रेस निर्वाचन समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी रहे, समस्त सीटों पर कांग्रेस की विजय हुई।

आपने एक कुशल शिल्पी की भांति समाज को कांट-छांट कर उसको एक नवीन रूप प्रदान किया है। आपने अपनी निस्वार्थ सेवाओं, पूर्ण ब्रह्म-चर्य, आदर्श चरित्र, त्याग और तप के द्वारा हिन्दु जाति के सामने यह आदर्श रखा है, कि हम अपने अतीत गौरव की किस प्रकार रक्षा कर सकते हैं, और किस तन्मयता से देश के पुनर्निर्माण में अपना जीवन अर्पित कर सकते हैं, "जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्यच, स जातो येन जातेन याति वेशः समुन्नतिम्।" इस संसार में अनेकों प्राणि जीवन को धारण करते हैं, और अपनी जीवन लीलाओं को समाप्त कर इस संसार से विदा हो जाते हैं। परन्तु जीवन वही जीवन है, जो अपने देश, जाति, समाज और कुल को उज्ज्वल कर सकें।

आप जैसे कर्मठ वीरों की ही भारत को आवश्यकता है। अभी आर्य समाज आपकी सेवाओं से तृप्त नहीं हुआ है, आप जैसे क्रियाशील महापुरुष ही महर्षि के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं।

गुरुकुल हाथरस,
(उत्तर प्रदेश)

आर्यवीर नरेन्द्रजी

—श्रीमती सीता युद्धवीर

१९४९ में हैदराबाद आयी। इसी वर्ष १६ नवम्बर को यहाँ से मिलाप निकलना आरम्भ हुवा। पंडित नरेन्द्रजी से प्रथम बार यहीं भेंट हुयी जब आप आर्य समाज मन्दिर में रहते थे। इतने सीधे-साधे, सरल स्वभाव के मनुष्य को देखकर अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता कि इन्होंने इतने बडे बलिदान दिये हैं। आर्य समाज से हटकर यहाँ के राजनीतिक क्षेत्र में जो कार्य पंडितजी ने पोलिस ऐक्शन से पहले और बाद किए हैं उनको आज के कांग्रेसी नेताओं को याद दिलाने वाली बात है। उनके आदर्श को सामने रखना चाहिये। आर्य समाज के ऐसे नेताओं के बलिदान से ही हैदराबाद में कांग्रेस की बुनियाद मज़बूत हो सकी। यही लोग जो आर्य समाज में थे कांग्रेस में भी काम करते रहे।

पंडित नरेन्द्रजी जैसे लोग तो आजकल खोजने पर भी न मिलेंगे। दुनिया का काम करें और अपने लिये कुछ न सवारें, ऐसे लोग तो इस संसार में विर्ले ही मिलेंगे। पंडितजी की अखिल भारतीय नेताओं में गणना होती है। एक कर्मठ आर्यवीर हैं। उनके काम की धुन को देखकर दुःख भी होता है कि न खाने का होश और न आराम की चिन्ता। ऐसें समाज सेवा में लगे हुए व्यक्तियों के लिए आर्य समाज को इस प्रकार का प्रबन्ध करना चाहिए कि उनका स्वास्थ्य भी बना रहे और आयु भी दीर्घ हो। दूसरे मठ-मंदिरों में वहाँ के महन्तों एवं कार्यकर्ताओं के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ रहती हैं किन्तु आर्य समाज में इसकी कमी रहती है।

पंडित नरेन्द्रजी ने जो कार्य हैदराबाद, समस्त भारत और मोरिशस में किए हैं इसके लिए सदियों तक याद रहेंगे। समाज के इतिहास का नरेन्द्रजी एक स्थाई एवं अमिट अंग बन चुके हैं।

'मिलाप'
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

सेनापति सरदार

—पं. मदनमोहन विद्यासागर

जैसे विश्वब्रह्माण्ड में हमारा पृथ्वीलोक एक छोटा-सा जगत् है, वैसे ही भारतीय जगती में आर्य समाज जगत् है। आज इस आर्य समाज 'बहु-श्रुत' एक नाम है, 'बहु चर्चित' नहीं। वह नाम है, 'पण्डित नरेन्द्र'। भारत भर की आर्य समाजों में इस समय जो नाम प्रायः आर्य सभासदों में बोले-सुने जाते हैं, उनमें, 'पण्डित नरेन्द्र' यह नाम भी है।

मैंने पहले यह नाम सन् १९३८ या सन् १९३९ में सुना था। उस समय हैदराबाद में आर्य सत्याग्रह चलाये जाने की बात हो रही थी। निज़ाम राज्य के जनविरोधी कार्यों की चर्चा आने पर प्रायः निज़ाम राज्य के काला-पानी अर्थात् 'मनानूर' में नज़र बन्द पण्डित नरेन्द्र का नाम बार बार आता था। उसी समय उनके साथ 'आर्य युवक हृदय सम्राट' शब्द प्रयोग भी रूढ़ होने लगा था।

उसके पश्चात् वरंगल (तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश) आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर प्रथम बार उन्हें देखा। वह छोटा सा क़द, सामान्य सा चेहरा, उस समय की प्रशंसित राष्ट्रीय वेशभूषा पर ओज भरी वाणी और देख समझ लेने वाली आंखें।

धीरे-धीरे पता चला कि क्यों यह नाटे सा क़द का व्यक्ति उस समय निज़ाम स्टेट में भयानक चर्चा का विषय बना हुआ है। जहाँ कई व्यक्तियों के समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के पीछे उनका उच्च कुल या धन या विद्या कारण होते हैं या फिर सरकार द्वारा समर्थित किसी 'दल' का समर्थन होता है, वहाँ पण्डित नरेन्द्र के पीछे तो ऐसा कुछ भी नहीं था। फिर भी निज़ाम स्टेट में जिधर आओ, जिस क्षेत्र में जाओ, पण्डितजी का नाम प्रमुखता से बोला सुना जाता था।

यह स्थिति उन्होंने प्राप्त की थी, महज़ त्याग, तपस्या, सूझबूझ युक्त समझदारी और अपनी कार्य करने की अद्‌भूत क्षमता के कारण।

निज़ाम की रियासत मुख्यत: दक्षिण भारत के आन्ध्र भाग के तेलुगू भाषी तथा कन्नड व मराठी भाषी हिन्दुजनों की मुस्लिम शासक द्वारा अधिकृत व शासित रियासत थी। राज्य के सब अधिकार प्राय: मुस्लिमों के हाथ में थे, जो सामान्य प्रजा के अधिकारों का हनन करते थे, मत परिवर्तन करके इस रियासत को विशुद्ध मुस्लिम क्षेत्र बनाने का लक्ष्य रखते थे। सामान्य प्रजा शासक वर्ग के अत्याचारों से बुरी तरह पीड़ित थी। धार्मिक राजनैतिक व सामाजिक तथा वाक-स्वातन्त्र्य नहीं था। इतना ही नहीं हिन्दु ओहदेदार व बडे-बडे जमींदार तुर्की टोपी पहनना गौरव समझते थे।

उस समय आर्य समाज ने यहाँ वेद धर्म का प्रचार कार्य प्रारम्भ किया जिससे जनता जागृत हो गई और शासकों के शब्दों में 'राज विद्रोह' तथा ऐतिहासिकों की दृष्टि में 'जन क्रान्ति' की आग लग गई।

इनका प्रमुख संचालन या इसे फैलाने का मुख्य कार्य अमरजीवी बंशी भाई वकील के परिवार को है, जिनके छोटे भाई श्यामलाल इस आग की भेंट ही चढ़ गये। श्री बंशी भाई के परिवार का मतलब उनके रक्त सम्बन्धियों से ही नहीं है, यह उस मित्र मण्डली या 'आर्यों की सेना' या 'दयानन्द के वीर सैनिकों' का नाम है, जो तन-मन-धन की आग से धर्म का प्रचार कर, पीडित-ग्रस्त सोतों को जगा रहे थे। उसी वीर सेना के एक सेनापति 'पण्डित नरेन्द्र हैं' : जिन्हें उन दिनों 'आर्य युवक हृदय सम्राट' नाम से पुकारा जाता था। निज़ाम रियासत को पीडित शोषण से निकाल राजनैतिक स्वातन्त्र्य का मार्ग दिखाने वाले 'दयानन्द की टोली' के एक सरदार पण्डित नरेन्द्र हैं। हुकुमत के दमनचक्र में पीस जाते संत्रस्त मानवों को भय से निकालने में पण्डित नरेन्द्र की जोशीली वक्ताओं और निर्भय आचरण ने बहुत बड़ा काम किया है। वर्तमान शासक जिस वर्ग की खुशामद कर अपनी गद्दीयाँ जमाये रखना चाहता है, बंशीभाई वकील और पण्डित नरेन्द्र के नेतृत्व में उस समय यहाँ की जनता उसी शासक वर्ग का वैधानिक विरोध कर अपना अस्तित्व स्थिर रखने का संघर्ष कर रही थी। वस्तुत: उस समय जनता का मनोबल भयानक दमन के बावजूद कायम रखने में पण्डित नरेन्द्र का बहुत बड़ा हाथ है। आपने उसके लिये जेल की यातनायें सहीं, लाठियाँ खाईं, गृहस्थ जीवन

से भी अपने को वत्रिवत रखा। गुलवर्गा में शासक वर्ग ने इस जन आन्दोलन की टाँग ही तोड़ देने का निश्चय कर पण्डित नरेन्द्र की टांगों पर ज़ालिमाना प्रहार किया। शासन पण्डित नरेन्द्र की गति को रोकना चाहता था, परन्तु गति 'प्रगति' में परिवर्तित हो गई, उन प्रहारों ने, मैं सोंचता हूँ उनकी चाल को काटने के स्थान पर तीव्रता दे दी।

और आज पण्डित नरेन्द्र अखिल आर्य जगत् में सबसे ज्यादा जातिमान प्रमुख व्यक्ति हैं। उनमें हाथ में लिये कार्य को संचालित करने की अदम्य शक्ति है, अत्यन्त उत्साह है। उनमें संगठन करने की अद्‌भुत योग्यता है। १९७७ में सम्पन्न किये जाने वाले 'आर्य महासम्मेलन' के वे संयोजक हैं, यह बडे भारी उत्तरदायित्व का काम है।

प्रेम मन्दिर,
नारायणगुड़ा, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

———

आला पाये के मुक़र्रिर

—डा. सय्यद मोहिउद्दीन क़ादरीज़ोर

पं. नरेन्द्रजी हैदराबाद के उन बडे लोगों में से हैं जिन्होंने इस मुल्क की सियासी व समाजी व कलचरल तारीक़ के बनाने में अजीमुशान ख़िदमात अंजाम दीं। सियासी बेदारी और तहेज़ीबी विरसे की हिफ़ाज़त की अलम-बरदारी के लिए उन्होंने मुल्क के नवजवानों में एक ऐसी तड़प और ज़िन्दगी पैदा कर दी जो इनके नाम और काम को हमेशा ज़िन्दा रखेगी।

वह शुरू ही से तरक्कीपिज़ीर और शुगुफ्ता रूजहानात के हामिल रहे हैं और एक ऐसे दौर में भी अपनी जद्दोजेहद ज़ारी रखी जबकि इनकी क़दरों मंजिलित की कोई तवको न थी। वह क़दरदानी और शोहरत के लिये काम नहीं करते बल्कि महज़ काम की ख़ातीर और अवामी बहबुदि के जज़्बे के तहत मसरूफे अमल रहे हैं।

पं. नरेन्द्रजी एक आलापाये के मुक़र्रिर भी हैं और हैदराबाद में बहादुरयारजंग के बाद अगर किसी की उर्दू तक़रीरें मक़बूलेआम समझी गयीं वह नरेन्द्रजी ही हैं। इनको उर्दूअदब और ख़िताबत व बलाग़त पर उबूर हासिल है और वह इस ज़बान को हिन्दु-मुस्लिम कलचर का एक मुशतरिका विरसा समझते रहे हैं। हैदराबाद ने अपने बड़े आदमियों की ख़ातिर ख़ा क़द्र नहीं की। हालात की तबदिली के बाद तवको है कि इसकी यह ख़ामी भी दूर हो जायगी।

संस्थापक,
इदारये अदबियाते उर्दू
हैदराबाद.

बढ़ाये क़दम आपने फ़ातहाना

–सतीशचन्द्र अस्थाना
'शबाब'

नरेन्द्र आपका सुनता रहा हूँ
रहा आके जबसे दयारे दकन में।

ब अल्फ़ाज़े दीगर वह एक फूल है तू
महक जिसकी फैली है सारे चमन में।

हमारी रिहाई की थी फ़िक्र तुझको
के जकड़े पड़े थे निज़ामे कोहन में।

सज़ायें मिलीं एक से एक बढ़कर
रहे जाके तुम दो बरस अंडमन में।

ये है कारनामा तुम्हारा सियासी
कहीं इससे बढ़कर हैं ख़िदमाते दिनी।

लक़ब जो है पंडित का बतला रहा है
किया कस्बे इल्म आपने फ़ाजिलाना।

किया कैसे हिन्दी का प्रचार तूने
बना पहले तीरे सितम का निशाना।

जो देखा, सुना और समझा तो पाया
ख़यालात हैं आपके बाग़ियाना।

बहुत से ख़ुयूद ऐसे हैं हिन्दुओं में
के हंसते रहे हम पर अहले ज़माना।

कछुत और अछुत अब भी हममें मिलेंगे
अरे शर्मनाक इस क़दर है फ़साना।

पं नरेन्द्र जी कांग्रेसाध्यक्ष स्व. डी संजीवय्या के साथ ।

पं नरेन्द्र जीं, स्व. डॉ. बी. रामकिशन राव, श्रीं शफी खुरैशी एवं श्री वासुदेव जी नाईक के साथ।

ख़राबी की इसलाह करता चला जा
तेरा साथ देने लगा है ज़माना।

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे
बढ़ाये क़दम आपने फ़ातेहाना।

दोआ है के रास आये रफ़तारे दौराँ
रहे शमें जू तेरे दमसें फ़िरोज़ाँ

बशीर बाग़,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

नवयुवक हृदय सम्राट

–हरिलाल वाघरे

समाज का यह कर्त्तव्य है कि जो व्यक्ति लगन से उसकी सेवा करता है उसके जीवन से आगे आने वाले मनुष्यों के लिये कुछ स्मृतियाँ लेखों के स्वरूप में प्रकाशित करके रख दें कि जिससे आगे आने वाले, संतानों अथवा युवकों का जीवन बने और उस आदर्श पर चलकर न केवल अपनी प्रगति करें अपितु समाज को प्रगति की ओर ले जावें। पं. नरेन्द्रजी का जीवन भी हमको यही मार्गदर्शन कराता है।

पं. नरेन्द्रजी का मुझसे घनिष्ठ सम्बन्ध आधी शताब्दी का है। यह अच्छे और प्रगतिशील कायस्थ परिवार से हैं और बडे ही लगन के। जैसा कि आज से पचास वर्ष पहले समाज का हाल था और जैसे उस समय की समाज की स्थिति थी उसको ध्यान में रखें तो आज जो पंडितजी को हम पाते हैं उसकी कल्पना नहीं हो सकती। गुरुदत्त भवन में वैदिक शिक्षा गृहण

करने लगे। यदि वह यहाँ के सामाजिक बन्धनों में फंसे रहते तो वह अधिक से अधिक एक प्रगतिशील वकील या डाक्टर होते या विद्या ग्रहण करने किसी जगह ऊँची जगह पहुँचकर वर्षों पहले वज़ीफे पर रिटायर होते और समाज उनको भूल भी जाता जैसे मनुष्य जीवन में होता आया है। पर उनमें समाज सेवा की लगन ऐसी थी कि वह पारिवारिक बन्धनों से निकलकर समाज सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाए और लाहौर में वैदिक विद्या ग्रहण करने गए। वहाँ उनका सम्पर्क महात्मा हंसराज जी, आचार्य रामदेव जी एवं कर्मनिष्ठ आर्य समाजी विद्वानों से हुआ और उनके जीवन की ज्योति जाग उठी।

लाहौर से जब लौटे तो उनके जीवन में बड़ा भारी परिवर्तन हो चुका था और वह पारिवारिक जातियता के बन्धनों से निर्वत होकर मानव समाज के हो चुके थे। हैदराबाद में वापिस आने के बाद से जो-जो कार्य उन्होंने किया है उसमें उनके मानव समाज के प्रति प्रेम और सेवा की लगन की झलकियाँ उनके जीवन में मिलती हैं।

पंडित जी में संगठन शक्ति बहुत है जिसके कारण आर्य समाज में बडी प्रगति हुई। इनकी समाज सेवा और संगठन शक्ति का दक्षिण के नवयुवकों पर इतना बड़ा प्रभाव पड़ा कि नवयुवक उनके इशारे पर इकट्ठे हो जाते और आन्दोलन करते। इसी कारण वह नवयुवक हृदय सम्राट कहलाने लगे और इसी नाम से जिस सभा में वह जाते उनका स्वागत होता था।

जब रज़ाकारों के अत्याचार उस समय की छोटे विचारों वाले राज्य अधिकारियों की पालिसी से हैदराबाद राज्य में असन्तुष्ठ फैला तो उससे निपटने के लिये महात्मा गाँधी के बताये हुवे हथियार का प्रयोग आर्य समाज ने और कांग्रेस ने किया। पंडित जी ने भारतवर्ष का भ्रमण करके जो सत्याग्रह का प्रबन्ध किया वह चिरस्मर्णीय रहेगा। भारत के हर प्रांत से सैंकडों-हज़ारों की संख्या में लोग आकर पूरी शान्तता के साथ सत्याग्रह किया। यह मानना पडेगा कि पंडित जी ने आर्य समाज के द्वारा पूरे हैदराबाद के राज्य में जागृति उत्पन्न की और यहाँ के नागरिकों में एकता की भावना कार्यान्वित हुई। हमारी भारत सरकार को पुलिस ऐक्शन के लिये तैयार होना पड़ा। कांग्रेस के ध्येय को आगे बढ़ाने में पंडित जी का भी बड़ा योगदान है।

पुलिस कार्यवाही के बाद भी पंडित जी का योगदान राजनीति के क्षेत्र में काफी रहा जिसे भुलाया नहीं जा सकता कि जिसके कारण आर्य समाज के कार्य को अवश्य धक्का लगा ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि पंडित जी तो सुरक्षित रहे क्योंकि उनमें त्याग की भावना कूट-कूटकर भरी थी पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में से जो राजनीति के चक्कर में फंसे उनमें से अधिकतर स्वार्थता के चक्कर में गये और सत्ता प्राप्त करने के पीछे पड़ गये जिससे आर्य समाज के कार्य को बडी हानि पहुँची ऐसा मेरा विश्वास है। पंडितजी पर मोह और सत्ता का जादू न चल पाया क्योंकि उनका जीवन त्यागमय था। एक समय जब उनको विधान सभा का टिकट मिला तो वह अपने से योग्य के हित में त्याग दिये।

आज भी फिर से पण्डित जी आर्य समाज के कार्य में अधिक समय देने लगे हैं बल्कि पूरा समय उसी कार्य में लगा रहे हैं। १९७५ में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की शताब्दी (आर्य समाज स्थापना शताब्दी) मनाने जा रहे हैं। पण्डित जी पूरा समय इसमें लगा रहे हैं। इस लगन से लाभ उठाकर समाज को चाहियें कि उनको फिर से समाज के कार्य में खींच लें ताकि मानव जीवन में जो शीथलता आ गई है फिर से जाग उठे।

ऐडवोकेट
हिमायत नगर,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

——

क्रान्तिकारी जीवन

(कायस्थ समाज से आर्य समाज तक)

—गुरुचरणदास सक्सेना

हैदराबाद के भूतपूर्व राज्य में कायस्थ बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। दो-ढ़ाई सौ वर्ष पहले यह लोग उत्तर भारत से दक्षिणांचल आये।

चित्रगुप्त वंशी बारह भाइयों मैं यहाँ माथुरों की संख्या अधिक है। सक्सेना दूसरे नम्बर पर आते हैं। श्रीवास्तव, भटनागर, अस्थाना, गौड, निगम आदि इनसे कम संख्या में हैं। आन्ध्र की राजधानी में इस समय इनकी कुल-संख्या सात हजार के लगभग है। सरकारी पदों पर इनको मान-सम्मान मिलता रहा। अपनी विद्वत्ता, चतुरता एवं कार्यकुशलता के कारण राज्य के शासकों के ये सदैव विश्वासपात्र बने रहे और इनकी योग्यता से बहुत लाभ पहुँचे। सरकारी दरबारी भाषा, फ़ारसी, उर्दू में इस जाति को दक्षता प्राप्त रही।

आज से (८५) वर्ष पूर्व १८८८ के प्रारम्भ मास जनवरी में कायस्थ महासभा की स्थापना हुई। राजा राजमान, राजा शिवराज धर्मवंत इसके संरक्षक एवं प्रथम अध्यक्ष थे। माथुरों का यह श्रेष्ठ घराना 'मालवालों' के नाम से प्रसिद्ध है। वे बडे दानी-धर्मात्मा राजा थे। हैदराबाद के राज्य के कायस्थ समाज को संगठित करने में महासभा के अतिरिक्त आगे चलकर कायस्थ असोसिएशन, कायस्थ क्लब एवं यंगमेन्स कायस्थ यूनियन कई वर्ष तक काम करते रहे। अब आन्ध्र प्रदेश कायस्थ सभा काम कर रही है।

हैदराबाद राज्य के आर्य समाज में राय कुंवर बहादुर और लाला गयाप्रसाद मुख्य स्थान रखते हैं। समाज के प्रारंभिक काल में जो कार्य

इन्होंने किए उससे समस्त हिन्दू जाति को बल मिला। रायकुंवर बहादुर के प्रयत्नों से ही निज़ाम की सरकारी सेना में समानता के आधार पर दलित लोग भर्ती किये जाने लगे। लाला गयाप्रसादजी ने इन्फ़लुएन्जा व प्लेग की भयंकर बाढ़ को रोकने में जिस साहस से काम किया तथा पीडितों की सहायता की उसको लोग आज तक याद करते हैं। ये दोनों कायस्थ श्रीवास्तव थे। कायस्थ बिरादरी में आर्यसमाज को परिचित कराने में मुन्शी भैरवप्रसादजी (सक्सेना) एवं उनके परिवार ने बहुत काम किया। लाला ललिताप्रसादजी एवं कैप्टन सूर्यप्रतापजी श्रीवास्तव ने भी आर्यसमाज की श्रद्धा पूर्वक सेवा की। श्री पं. नरेन्द्रजी ने तो आर्य समाज को अपना जीवन ही अर्पण कर दिया। उनकी सेवायें खुली पुस्तक के समान समस्त देश के आगे रखी हैं जिसको हर कोई पढ़ सकता है।

श्री पं. नरेन्द्रजी के पिता राय केशवप्रसादजी "शम्भूराजा" के नाम से बिरादरी में प्रसिद्ध थे। इनके दादा का नाम राय कानचन्द, प्रपिता का नाम राय रंजनलाल था। यह परिवार महुशम्साबाद से आया। माता गुणवन्ती देवी, राय बंसीधरजी की सुपुत्री थीं। बंशीधरजी के पिता राय सुन्दरलाल मद्रास के रईस नवाब वालाजाह की शादी खाने के मोहतमिम थे। यह परिवार मुज्जफ़र नगर से आया। केशव प्रसादजी एवं गुणवन्ती देवी दोनों पति-पत्नि कट्टर सनातनी थे। साधु स्वभाव रखने वाले धर्मात्मा थे। इस परिवार को जागीर पेंशन मिलती थी। नरेन्द्रजी के दो भाई थे और चार बहनें। बडे भाई राजेंद्रप्रसादजी निज़ाम प्राइवेट स्टेट (सर्फ़ खास) के कोर्ट आफ़ वार्डज़ में लेखाकार थे। छोटे भाई योगेंद्र प्रसाद जिसको प्यार से घर वाले "मुन्शी" कहते थे दस वर्ष की अल्प आयु में ही स्वर्ग सिधार गये। चतुरदेवी, कृष्णादेवी, विष्णुदेवी, बसंतीदेवी तथा हरदेवी पाँचों बड़ी बहनों में अब केवल सबसे छोटी जीवित हैं। निज़ाम राज्य में आर्य समाज के इस्लाहात आन्दोलन की सफ़लता के पश्चात जो विधान सभा बनी उसमें कृष्णादेवीजी के पति राय रामचन्द्र सहाय एडवोकेट, करीमनगर क्षेत्र से बहुमत से सदस्य चुनकर आये। राज्य के कायस्थों में प्रथम एम.एल.ए. थे।

श्री पं. नरेन्द्रजी, की प्रारम्भिक शिक्षा कायस्थ पाठशाला तत्पश्चात् धर्मवन्त हाईस्कूल में हुई। अपने साथी विद्यार्थियों में नरेन्द्रजी पढ़ने-लिखने में, खेल-कूद में और धूम शरारतों में आगे ही रहे। बचपन से स्वभाव

मृदुल तथा कोमल है, किन्तु कर्त्तव्य पालन एवं धर्मपरायण की बात आ जाती है तो कठोर वन जाते हैं। आप पर अपने मामा राय ठाकुर प्रसादजी का बहुत प्रभाव पडा जो वैदिक सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था रखते थे। टेम्प्रेससलीगादि समाज सुधार के कार्यों में भाग लिया करते थे। हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी के विद्वान थे और अच्छे कवि भी। उपनाम "नज्म" था। प्रधान मंत्री, महाराजा किशन प्रसाद यमोनुसलतनत के पेशकारी स्टेट के मंत्री थे। नरेन्द्रजी अपनी मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, फारसी के अच्छे ज्ञाता हैं। भगवान के घर से निष्काम समाज सेवा व त्याग का आदर्श जीवन लिखालाये हैं। अल्पायु, से ही आप काम में लग गये। अपनी वस्ती में राजा राय-रायां की देवडी के निकट जगदीश सभा के नाम से एक अच्छा पुस्तकालय एवं वाचनालय स्थापित किया था। जिससे सभी वर्ग लाभ उठाते रहे। उसके वार्षिकोत्सव शानदार होते थे। जगदीश सभा की स्थापना का समय वही था, जब हैदरावाद राज्य में आंध्र महा सभा काम कर रही थी और आंध्र पितामह माडपति हनुमंतरावजी का "लायब्रेरी मूमेन्ट" राज्य के तेलंगाना मराठवाडा तथा कर्नाटक क्षेत्रों में चल पडा था। यह तहरीक जन जागृति में बहुत काम आयी। कायस्थ यूनियन में भी एक पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना की गई थी।

आर्य समाज में आने से पूर्व पं. नरेन्द्रजी राय नरेन्द्र प्रसाद सक्सेना के नाम से जाने जाते थे। १९२६ में नरेन्द्रजी ने यंगमेन्स सक्सेना यूनियन की स्थापना की पर कुछ ही दिनों में कायस्थ समाज के बारह भाइयों को संगठित करने एवं समय के अनुसार सुधार के हेतु यंगमेन्स कायस्थ यूनियन नाम दिया गया। इसके प्रथम मंत्री नरेन्द्रजी ही सर्वसम्मति से चुने गये। कायस्थ यूनियन के द्वारा साप्ताहिक "युवा विचार" गोष्ठियों का आयोजन किया जिसमें धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर वाद-विवाद होते थे। एक वालन्टियरकोर तथा व्यायमशाला भी स्थापित किया गया। वालन्टियरकोर आगे जाकर "श्री चित्रगुप्त रोवर्स टूप" के नाम से स्काउटिंग का अंग बन गया जो कई वर्षों तक काम करता रहा। कायस्थ यूनियन की ओर से स्थापित श्री शक्ति कन्या पाठशाला अब तक चलती है। कायस्थ समाज में चित्रगुप्त वंशी बारह भाइयों में परस्पर रोटी व्यवहार था न बेटी व्यवहार। प्रोफेसर कृष्णचंद्र राय सक्सेना ने जो उस्मानिया विश्व-विद्यालय में इतिहास पढ़ाते थे, राजा प्रतापगीरजी की कोठी में

"कच्चाडिनर" का आयोजन कर आपस में खान-पान के क्रम को चलाया। इसी प्रकार सक्सेनाजी ने माथुर घराने में अपना विवाह करके बेटी व्यवहार की प्रथा आरम्भ कर दी। आप खादी धारी थे और कांग्रेस के समर्थक। अपने निवास स्थान "रिषिकेश" में कायस्थों की सभा किया करते थे। कायस्थ सभा के मंत्री रहे और इन्हीं के प्रयत्नों से हैदराबाद में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा का ३८ वाँ अधिवेशन हो सका जिसके अध्यक्ष संतोष (कलकत्ता) के महाराजा मनमथनारायण चौधरी चुने गये थे। इस अधिवेशन की विशेषता यह थी कि इसका आरंभ राष्ट्रीय गीत "वन्देमातरम्" से किया गया। "वन्देमातरम्" पर राज्य में रोक लगा दी गई थी। किसी सभा या सुसाइटी में इसका पहले चलन न था। हिन्दू विद्यार्थियों ने "वन्देमातरम्" के लिए कई दिनों तक आन्दोलन चलाया। पं. नरेन्द्रजी इस आन्दोलन के साथ थे। आर्य समाज में काम कर रहे थे। राज्य के वायुमंडल में उनका नाम गूंज रहा था। नरेन्द्रजी ने कायस्थ समाज सुधार के कार्यों में समय समय पर पूरा सहयोग दिया। १९३४ में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के नागपुर अधिवेशन में सम्मिलित होकर चित्रगुप्त वंशी बारह भाइयों के परस्पर संगठन को दृढ़कर समस्त हिन्दू समाज के धारे में मिला-देने की बात कही। नागपुर अधिवेशन के अध्यक्ष डा. सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव थे जो पहले उत्तर प्रदेश के शिक्षा एवं उद्योग विभाग के मंत्री थे और बाद में वायसराय एक्ज़ीक्यूटिव कौंसल के सदस्य रह चुके थे।

१९४३ में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा का अधिवेशन लखनऊ के कैसरबाग़ में हुवा। इसके अध्यक्ष हैदराबाद के निर्माण मंत्री राजा धरमकरण (माथुर) थे। इस अवसर पर जब निज़ाम को धन्यवाद देने का प्रस्ताव राजा साहब के किसी सम्बन्धी हैदराबादी प्रतिनिधि की ओर से रखा गया तो उत्तर प्रदेश आदि कई प्रान्तों के कई प्रतिनिधियों ने इसका कडा विरोध किया और बताया कि निज़ाम शासन ने पं. नरेन्द्रजी पर कैसे कैसे अत्याचार किये और सभी हिन्दुओं को वहाँ किस प्रकार सताया जाता है।

नरेन्द्रजी ने अपनी ओर से कायस्थ समाज के किये दो चाँदी के पदक रखे थे जो यंगमेन्स कायस्थ यूनियन के वार्षिक उत्सव में दिये जाते थे। राय मुरलीधर, राजा फ़तह़ नवाज़वत के नाम का पदक वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को और दूसरा पदक राजा महबूब राज के नाम पर औद्योगिक कला में प्रथम आने वाली महिला को दिया जाता

था। राजा महबूबराज सक्सेना कायस्थ थे। लगभग ५० वर्ष पूर्व उन्होंने अपने निवास स्थान बंसीराजा देवडी में (Handloom) का एक कारख़ाना कायम किया था। राज्य में स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनी के संस्थापक भी वही थे। सबसे पहले अपने जागीरी क्षेत्र केशवगिरि में श्री केशव स्वामी के वार्षिक रथोत्सव के समय स्वदेशी माल की प्रदर्शनी का प्रबन्ध किया था जिसको देखकर तत्कालीन प्रधान मंत्री महाराजा किशन प्रसाद जी ने अपनी जागीर अलवाल में श्री वेंकटेश मंदिर के रथोत्सव के समय ऐसी ही स्वदेशी प्रदर्शनी के आयोजन का भार राजाजी को सौंपा था। अलवाल में इस प्रदर्शनी को देखकर निज़ाम महोदय ने राज्य स्तर पर औद्योगिक प्रदर्शनी के वार्षिक आयोजन का आदेश जारी किया। उस्मानिया विश्वविद्यालय के स्नातकों की संस्था ने नुमायश सोसायटी बनाकर इस काम को अपने हाथ में लिया और "नुमायशे मसनुआते मुलकी" के नाम से पब्लिकगार्डन, बागेआम में प्रदर्शनी आरम्भ की। हैदराबाद में प्रति वर्ष आयोजित अखिल भारतीय औद्योगिक प्रदर्शनी इसी का विशाल प्रगतिशील रूप है।

—सातवें निज़ाम नवाब मीर उस्मानअली खां बहादुर के शासन काल में राय मुरलीधर राजा फ़तह नवाज़वंत राज्य के राजस्व (रेविन्यू) विभाग तथा सर्फेखास निज़ाम के प्रायवेट स्टेट के कई वर्षों तक मन्त्री रहे। मन्त्री महोदय के आदर्श एवं आचरण से निज़ाम बहुत प्रभावित थे। देसी राज्य के व्यक्तिगत शासन काल में जब राजा के विरुद्ध कोई कुछ कह नहीं सकता था, राय मुरलीधरजी ने निज़ाम को राजनीति का पाठ याद दिलाया और लिखा :– "यह राज्य जीता हुवा नहीं है न तर्के में आया है। इतिहास को पढ़िये, सुबेदारी के ख़रीते, मुग़ल बादशाहों के फ़रमान देखिये तो आपको अपनी हैसियत का पता चल जायगा। यह जमा किया हुवा धन आपका भयंकर शत्रु है। इसको ख़र्चकर डालिये। अपने व्यवहार को बदलिये. लोगों को मत सताइये –– इतिहास साक्षी है कि जहाँ कहीं भी शासन में अधिकारों की सुरक्षा में ढील आयी विद्रोह उत्पन्न हुवा और शासन तबाह हो गये......"। बात यह थी कि निज़ाम के दरबार में बुद्धि से कोरे अत्यन्त स्वार्थी चापलूसी जमा हो गये थे जिसके कारण वे अपने अच्छे इमानदार अफ़सरों, अमीरों तथा जागीरदारों को हटाने मिटाने पर तुल गये थे। नज़राने के नाम से मनमाना रुपया बटोर रहे थे। कोई सरकारी काम समय पर न हो पाता था। लोग परेशान थे। इसी दुर्दशा के कारण अंग्रेज़ सरकार

को राज्य के कार्यों में सीधे हस्तक्षेप करना पडा, उसने महत्वपूर्ण स्थानों पर अपने आफ़िसर नियुक्त कर दिये। रेजिडेन्ट से परामर्श के बिना निज़ाम मंत्री मंडल में परिवर्तन न कर सकते थे। राय मुरलीधर ने निज़ाम को अपना पत्र भेजकर यह भी लिख दिया था: "मैंने अपना सामान आगरा भेज दिया है और कुछ सप्ताह के भीतर चला जा रहा हूँ। मेरी बातें भली न लगती हों तो इस पत्र को अन्तिम त्यागपत्र समझा जाये।" निज़ाम विद्वान थे और चतुर शासक भी। राय साहब की बातों को मान लेते थे। वे अंतिम समय तक मंत्री बने रहे। अब तक लोग गरीबों की, अनाथों की सहायता के लिए मुरलीधर जी की याद करते हैं। कायस्थों के सामाजिक कार्यों में बराबर दिलचस्पी लेते थे। यंगमेन्स कायस्थ युनियन के संरक्षक थे।

सातवें निज़ाम के शासन काल में पं. नरेन्द्र जी दूसरे व्यक्ति थे जिन्होंने हैदराबाद की "खुदमुख्तारी" और मुस्लिम राज्य की निराधार कल्पना का अपने भाषणों में खंडन किया और इस विषय पर अपने खोज-पूर्वक लेख को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया। पंडितजी ने सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों पर लगायी गयी रुकावटों का डटकर मुकाबिला किया। स्वभाव की विशेषता यह है कि अच्छे कामों की भी प्रशंसा करते हैं। निज़ाम ने उस्मानिया विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसका माध्यम एक देसी भाषा उर्दू रहा। मृत्यु दण्ड को आजीवन कारावास के दण्ड में बदलने तथा मज़-दूरों से विना पैसा दिये 'वेगार' लेने की जागीरदारी प्रथा को बन्द करने के आदेश दिये। ईद पर गाय की कुर्बानी को बन्द करने का फ़रमान ज़ारी किया। नये भवनों, बडी सडकों, सागरों आदि का निर्माण किया। पण्डितजी की विशेषता यह भी है कि सांप्रदायिक स्तर पर किसी का विरोध नहीं करते। पोलिसएक्शन के पश्चात् कितने ही मुसलमानों की सहायता की। राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिये काम अब भी करते हैं।

पं. नरेन्द्रजी जिस प्रकार अपने भाषणों से जादू जगाते हैं इसी तरह अपने लेखों से भी प्रभावित करते हैं। इतिहास और साहित्य में बडी रुचि है। अध्ययन करते रहते हैं। कई पुस्तकें लिखी हैं।

आर्यसमाज के प्रचार में जुट-जाने तथा धार्मिक अधिकारों को प्राप्त करने के संघर्ष में भाग लेने के कारण पं. नरेन्द्रजी को अपने स्व. पिता की

जागीर पेन्शन का भार नहीं मिल सका। निज़ाम के अर्थमंत्री नवाब फ़क़रयार जंग ने नरेन्द्रजी को बुलाकर समझाया - मनाया और कहा कि यदि वह माफी नामा लिखकर दे दें तो पेन्शन उनके नाम जारी कर दी जायगी। किन्तु नरेन्द्रजी ने इन्कार कर दिया। पंडितजी कभी किसी के आगे झुके नहीं। पं. नरेन्द्रजी का जीवन सदैव क्रान्तिकारी रहा।

(लेखक एवं पत्रकार)
'विद्यामन्दिर'
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

आर्य समाज से कांग्रेस तक

(कुछ यादें कुछ बातें)

—रामचन्द्रराव कल्याणी

सन् १९३५-३६ की बात है पंडित नरेन्द्रजी नारायणपेठ आये। उन दिनों मैं शिक्षा प्राप्त कर रहा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं और मेरे साथी विद्यार्थी पंडितजी के भाषणों से बहुत प्रभावित हुए थे। इन भाषणों में राष्ट्रनायकों की बातें सुनकर नवयुवकों के मन में समाज सेवा की लगन उत्पन्न होना स्वाभाविक थी।

१९४४-४५ में हैदराबाद आ गया। सिटी कालेज में पढ़ रहा था उस समय मेरे रहने की व्यवस्था हास्टिल में की गई। हैदराबाद नगर में आ जाने से मुझे पंडितजी के निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला और आगे चलकर समाज सेवा क्षेत्र में पंडितजी से मेरा सम्बन्ध बना रहा।

आर्य समाज में काम करते हुए पण्डितजी की अद्‌भुत कार्यशक्ति व लगन को देखकर में अत्यन्त प्रभावित हुवा। पंडितजी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे स्वयं काम करके साथियों के आगे उदाहरण रखते हैं और जिस काम को लेवें पूरा करके छोडते हैं। सम्मेलन होने वाला है पंडितजी हाथ में कुदाल लिए सफ़ाई का काम कर रहे हैं। रंग-मंच बन रहा है तो पंडितजी उसको सुन्दर रूप देने में लगे हुए हैं। सभा आरम्भ हो रही है और स्टेज पर उनकी घन-गरज लोगों में जोश पैदा करने लगी। लोगों को चुनने और उनसे काम लेने में भी पंडितजी को कमाल है और सबसे कठिन काम धन जुटाने का, उसको वे चुटकियों में पूरा कर लेते हैं। तीसरे महा-सम्मेलन नारायणपेठ का दृश्य अब तक याद है। समाज पर पंडितजी के पवित्र व सरल जीवन, त्याग व निष्काम सेवा ने बहुत प्रभाव डाला है।

आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारणी के सदस्य तथा मंत्री के रूप में पिछले २५-३० वर्षों से पंडित नरेन्द्रजी के साथ काम करते रहने से उनके जीवन-दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता रहा और उनके त्यागी जीवन से बडी प्रेरणा मिलती रही। मुझ जैसे कितने ही नवयुवक अपने समय उनकी आकर्षण शक्ति से साथ होकर सेवा में जुटते गए।

पं. नरेन्द्रजी के साहस तथा उनकी निडरता के चर्चे घर-घर सुनाई देते हैं। निज़ाम के शाहीकाल में वे कभी झुके नहीं। कडे से कडा दण्ड मिला पर वे हंसते-मुस्कुराते सारी आपत्तियों को झेल गये। रज़ाकारों के भंयकर समय में भी वे पैदल तथा तांगे पर खुले आम घूमते फिरते थे। आज भी निज़ाम के शासन काल की वह घटना मुझे अच्छी तरह याद है जबकि पंडितजी प्रचार के लिए नागरकर्नूल आये हुए थे। रात का समय था पंडितजी के साथ हम सब श्री बालस्वामी एड्वोकेट के घर में बैठे हुए थे कि अरबों ने आक्रमण कर चारों तरफ़ से घेर लिया, रात भर शोर मचाते और आर्यजनों को मार डालने की धमकी देते रहे। किन्तु पडितजी के धैर्य और साहस को देखकर चुपचाप भाग गये।

पंडितजी की वीरता व साहस ने स्वयं मुसलमानों को चकित कर दिया था जब इत्तेहादुल मुस्लिमीन की एक विशाल सभा में पंडितजी उपस्थित थे और नवाब बहादुरयारजंग सरकार की अपनाई हुई नीति पर टीका

टिप्पणी करते हुए कह रहे थे कि तीन बालिश्त के नरेन्द्र ने सारे निज़ाम राज्य को हिला कर रख दिया है।

पण्डितजी निज़ाम के शासन काल में जिस निर्भिकता से बोलते और टीका-टिप्पणी करते थे उसका अनुमान उनके इन शब्दों से हो सकता है :- "हैदराबाद हिन्दुस्तान का सबसे बडा जेलखाना है।" १९४५ में हुशमतगंज (वर्तमान रामकृष्ण धूतगंज) की एक विराट सभा में आपने कहा था :- "हमारा पहला काम हैदराबाद के चित्रपट को बदलना है। जब हम इसमें सफल हो जायेंगे तो शासन की कोई शक्ति हमें आगे बढ़ने से नहीं रोक सकेगी। जनता की मांगों के आगे सरकार को झुकना तथा स्टेट कांग्रेस पर से प्रतिबन्ध हटाना पडेगा। "स्टेट कांग्रेस का मंच हो या आर्यसमाज का, पण्डितजी सरकार को खरी-खरी सुनाने में तनिक भी संकोच नहीं किया करते और न यह सोंचते थे कि परिणाम क्या होने वाला है। सर-मिर्ज़ा-इस्माईल राज्य के प्रधान मंत्री थे। श्री जयप्रकाश नारायण तथा श्रीमती अरुणा आसिफ़ अली को हैदराबाद आने की अनुमति दे दी गई। इससे सर मिर्ज़ा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने वालों ने बहुत शोर मचाया। वातावरण बडा विषैला और गम्भीर था। ऐसे में काँग्रेस की ओर से अरुणा आसिफ़ अली के भाषण का आयोजन किया गया। पैलेस टाकीज़ थियेटर में विशाल सभा हुई तो इसकी अध्यक्षता पं. नरेन्द्रजी ने ही की। हैदराबाद को नादर-शाही से मुक्ति दिलाने में पंडित जी के राजनैतिक भाषण ऐतिहासिक महत्व रखते हैं।

हैदराबाद में पोलिसएक्शन के पश्चात् जब स्वामी रामानन्द तीर्थ और पण्डितजी एक साथ जेल से छूटे तब जनता का जोश देखने का था। अपने इन क्रान्तिकारी महान् नेताओं को देखने के लिए सुलतान बाज़ार में निवास स्थान पर लोगों का कई दिन तक मेला लगा रहा। जेल से मुक्त होते ही पंडितजी निज़ाम के रज़ाकार-दौर से पीडित हिन्दुओं को जल-बन्धन से छुडाने के प्रयत्नों में लग गये। बाद में जिन मुसलमानों के साथ अन्याय हुवा और पंडितजो के सम्पर्क में आये उनकी भी आपने सहायता की। पंडितजो को जिन लोगों ने निकट से देखा है भलीभांति जानते हैं कि वे साम्प्रदायिक नहीं हैं किन्तु दूसरी ओर से साम्प्रदायिकता सर उठाने लगे और हिन्दु समाज को ही उसका निशाना बनाया जाय तो कदापि सहन नहीं कर सकते, डटकर सामने आ जाते हैं।

पोलिसएक्शन के साथ ही राज्य में जनरल जे. एन. चौधरी को मिल्ट्री गवर्नर नियुक्त करके सैनिक शासन लागू कर दिया गया। लोगों को विशेषकर मुसलमानों को भयभीत देखकर समस्त राज्य में "अमन सभायें" स्थापित की गयीं। इस काम में पण्डित जी तन-मन से जुट गये। इसी समय भारत सरकार से जो सिविल पदाधिकारी कर्मचारी यहाँ काम करने आये उनमें कुछ मनमानी करने लगे रिश्वत खाकर अपराधियों को छोड देने लगे तब इस अन्याय के विरुद्ध खुली आम सभाओं में पण्डितजी ने अपनी सरकार को चेतावनी दी। कडी कारवाही की धमकी पाकर भी पण्डितजी रुके नहीं बराबर टोकते गये। भारत सरकार की सिविल टीम के अध्यक्ष डी. एस. बरवले थे।

राज्य में श्री एम. के. वेलोडी के नेतृत्व में मंत्री-मण्डल बना तब पण्डितजी ने सभी प्रान्तों में भारत सरकार की अपनायी गई नीति के अनुसार हैदराबाद राज्य में पोलिसएक्शन से पूर्व के सभी कैदियों को जिन्हें लम्बी और अल्प अवधि के दण्ड दिये गये थे छोड देने का अनुरोध किया। और गृहमंत्री श्री शेषाद्री को कड़े शब्दों में लिखा कि हैदराबाद की जनता देश-भक्तों को जेल की सलाखों के पीछे अधिक समय तक बंद रखे रहने को सहन नहीं कर सकती। भारत सरकार ने स्वतन्त्रता संग्राम में पकड़े जाने वाले सभी बन्दियों को १९४७-४८ और ४९ में स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त पर छोड दिया था। केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल को भी अपने १३ पृष्ठ के पत्र में पण्डित जी ने पोलिसएक्शन के पश्चात् राज्य में उत्पन्न स्थिति एवं शासन की त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाया। पण्डित जी ने वेलोडी सरकार का ध्यान तुंगभद्रा योजना के अधीन ली जाने वाली भूमियों की ओर भी दिलाया कि गांव वालों को अधिक माविज़ा मिलना चाहिए। आप स्वयं इन देहातों को जाकर लोगों से मिल आये थे।

पं. नरेन्द्रजी १९५१ के प्रथम आम चुनाव के बाद पांच वर्ष तक हैदराबाद विधान सभा के सदस्य रहे। इस अवधि में एक समय ऐसा आया कि विरोधिदलों के संयुक्त मोर्चे people's democratic front ने राज्य के पहले कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित किया। दो तीन दिन तक बडी गर्मा-गर्मी रही। पी. डी. एफ़. के सदस्यों ने जिनके नेता श्री वी. डी. देशपांडे थे जोशीले भाषण दिए। साम्यवादी नेता श्री मख़्दूममोहीयोद्दीन ने अपने भाषण में कहा था कि कांग्रेस की पराजय निश्चित

है और हम देखेंगे कि मुख्य मंत्री श्री डा. वी. रामकृष्णराव जी कंधे पर वही पुराना काला गाऊन डाले हुए हाईकोर्ट की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए दिखाई देंगे। विरोधी पक्ष के भाषणों से वातावरण गम्भीर हो गया था। सरकारी बेंचों की ओर से भी मंत्रीगण और दूसरे सदस्य बोले, सब की दृष्टि पं. नरेन्द्र जी की ओर लगी हुई थी। प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री के उत्तर से पूर्व पंडित जी ने अपना भाषण आरम्भ किया और लगभग पौन घंटा बोलते रहे। अन्त में आपने किसी कवि की इस पंक्ति पर अपना भाषण समाप्त किया।

"फूँकों से ये चिराग़ बुझाया ना जायेगा"

तो बड़ी देर तक हाल तालियों की आवाज़ से गूँजता रहा। चूंकि कांग्रेस बहुमत में थी इस कारण अविश्वास प्रस्ताव रद्द कर दिया गया।

पं. नरेन्द्र जी ने राज्य विधान सभा में ये प्रस्ताव भी रखना चाहा था कि राज-प्रमुख की पदवी समाप्त कर दी जाय किन्तु संविधानिक बारिकियों तथा केन्द्रीय सरकार का विषय होने के कारण ये प्रस्ताव पेश न हो सका। पण्डित जी निज़ाम तथा अन्य राजा-महाराजाओं को राजप्रमुख बनाकर जनता के सर पर लादने का विरोध करते रहे क्योंकि प्रजातन्त्रवाद से यह बात मेल नहीं खाती थी।

पण्डित जी ने उस समय जब आचार्य विनोबा भावे ने तेलंगाना क्षेत्र के पोचमपल्ली गांव से श्री रवि रामचन्द्रारेड्डी की सौ एवकड भूमि स्वीकार कर भूदान यज्ञ आरम्भ किया था, निज़ाम महोदय को एक पत्र लिख भेजा कि ज़मींदारों से भूमि प्राप्त करने के तीन तरीकें हैं :– "१) बिना माविज़ा दिये भूमियां प्राप्त कर ली जाये। (२) माविज़े के साथ भूमियां ले ली जायें। (३) जमींदार स्वयं ही अधिक से अधिक अपनी भूमि वितरित कर दें। पहली बात संविधान से मेल नहीं खाती दूसरी बात समय के अनुकूल दिखाई नहीं देती किन्तु तीसरा तरीक़ा लाभदायक है अपनाया जा सकता है। पंडितजी ने अपने इसी पत्र में राजप्रमुख को याद दिलाते हुए कि "जैसा कि आपने राज्य विधान सभा के उद्घाटन के समय कहा था कि "हर वह वस्तु अच्छी है जिसका परिणाम अच्छा है" लिखा कि मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि भूमि बटवारे के आन्दोलन को आरम्भ कर अपनी अधिक से अधिक भूमि को भूमिहीन किसानों में बांटदें। पण्डित जी इस समय हैदराबाद नगर कांग्रेस

कमेटी के प्रधान थे। कांग्रेस को पण्डित जी ने बहुत सहयोग दिया। पण्डित जी हैदराबाद नगर में "बेताज के बादशाह" समझे जाते थे। आपके प्रयत्नों से विधान सभा की तरह नगरनिगम में भी अच्छे योग्य सदस्य चुने जा सके। आज भी लोग उस नगरनिगम को याद करते हैं जिसके प्रथम मेयर आंध्र पितामह माडपति हनुमन्तराव जी थे।

पण्डित नरेन्द्र जी एक सच्चे देशभक्त हैं। जहाँ उन्हें देश के अहित कोई बात दिखाई दी उन्होंने सरकार को ललकारा लोगों को जताया। पंजाब प्रान्त के निर्माण के समय जब १९७० में गडबड मची, अकालीदल की नीति और संत फ़तेहसिंह जी के आत्मदाह की धमकी के कारण वातावरण दूषित हो गया तब पण्डित जी ने देखा कि यह आन्दोलन न केवल राष्ट्रीय एकता में बाधक हो रहा है अपितु हिन्दू-सिख एकता के लिए हानिकारक है। संत जी को आपने एक लम्बा पत्र लिखा और आशा प्रकट की कि "जिस गुरु नानक देवजी ने एकता का पाठ पढ़ाया और गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने हिन्दुत्व को दिया था उन दोनों महापुरुषों की वाणी के समन्वय रूप को आप तथा सिखबन्धु अपने जीवन में साकार करेंगे।"

पण्डित जी उन नेताओं में से हैं जिन्होंने हैदराबाद राज्य के विभाजन के पश्चात् विशाल आंध्र के निर्माण का समर्थन इस राष्ट्रीय ध्येय को सामने रखकर किया था कि आंध्र व तेलंगाना के तेलुगु भाषा-भाषियों के मिलाप से पुनः "विशाल आंध्र" ऐतिहासिक रूप धारणकर समस्त देश के लिए शक्ति-शाली बनेगा। उस समय फ़जले अली कमीशन ने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन में तेलंगाना राज्य की घोषणा की थी। किन्तु जब पण्डित जी ने अनुभव किया कि आंध्र के सत्ताधारी तेलंगाना को बल देकर आगे बढ़ाने के बजाय स्वंय उसको हडप किये जा रहे हैं और सरकारी नौकरी आदि में बुरी तरह धांधली कर रहे हैं तो पण्डित जी आंध्र के सत्ताधारी नेताओं का कडा विरोध किया और कहा कि तेलंगाना के साथ आन्ध्र के इस अन्याय तथा दुर्व्यवहार को कदापि सहन नहीं किया जाना चाहिये। पण्डित जी का कहना है कि तेलंगाना वालों के अपने सभी अधिकार संघर्ष से ही सुरक्षित रह सकते हैं।

सदस्य राज्य विधान सभा
बहादुरपुरा, हैदराबाद
(आंध्र प्रदेश)

साहित्यकार नरेन्द्रजी

–मनोहर प्रसाद माथुर

पं. नरेन्द्र जी की मातृभाषा हिन्दी है किन्तु वे कई भाषाओं के रसिया हैं। संस्कृत द्वारा वैदिक शिक्षा गृहण की तेलुगु, मराठी, भी जानते हैं और उर्दू में तो दक्षता प्राप्त है। कितने ही उनके लेख हिन्दी, उर्दू पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं। अभी हाल उनकी पुस्तक "हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष" आर्य समाज स्थापना शताब्दी प्रकाशन के क्रम में निकली और गोविन्दराम हासानंद स्वर्ण जयन्ती पर दिल्ली से प्रकाशित हुयी। हैदराबाद के भूतपूर्व राज्य में आर्य समाज के कार्यों एवं बलिदानों का संक्षिप्त में एक सुन्दर इतिहास है। पंडित जी ने अपनी इस पुस्तक को "आर्य समाज के उन समुज्ज्वल हुतात्माओं और वीर सेनानियों के नाम जिन्होंने हैदराबाद के मानव-मुक्ति के पक्ष में उत्सर्ग होकर वैदिक धर्म के उद्यान को अपने रक्त अथवा पसीने से सींचा और उसे एक ऐसे लहलहाते उपवन में बदल दिया जिसकी शीतल वायु आज भी हैदराबाद के लाखों व्यक्तियों के लिए आध्यात्मिक एवं नैतिक शान्ति का कारण बनी" अर्पित किया। लगभग दो सौ पृष्ठ की इस पुस्तक में पूरा इतिहास जैसे सिमट कर आ गया है। पुस्तक में दिये गये चुने हुए चित्रों में "स्व. लौह पुरुष सरदार पटेल को निज़ाम का अभिवादन" ख़ास ऐतिहासिक चित्र है। सरदार ने कहा था: "आर्य समाज ने यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो तीन दिन में हैदराबाद में पुलिसएक्शन सफल नहीं हो सकता था।" हिन्दी की एक और पुस्तक 'हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष" जो आज से (१६) वर्ष पूर्व लिखी गयी इसमें पंडित जी ने जब वे राज्य विधान सभा के सदस्य थे, १९५३ में हैदराबाद में हुए अष्टम सार्वदेशिक आर्य महा-सम्मेलन तक का बहुत ही संक्षिप्त रूप में किन्तु बहुत अच्छे ढंग से विवरण दिया है। उर्दू में "दयानन्दे आज़म" नरेन्द्र जी की पुस्तक विशेष महत्व

रखती है। शायद ही इससे पहले किसी ने लिखी हो। (१६७) पृष्ठ की इस पुस्तक में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन को (१७) खण्डों में विस्तार से लोगों के दर्शन के लिए रखा गया। अपनी इस ऐतिहासिक पुस्तक को समर्पण करते हुए पंडित जी लिखते हैं :- "भटकी हुई इन्सानियत (मानवता) के नाम जिसकी रुहानी तस्कीन (अध्यात्मिक शांति) और अख़्लाक़ी नजात (नैतिक मुक्ति) के लिए तमाम उम्र सरगर्में अमल रहे और जाते हुए एक ऐसी शमा दर्खशां (जगमगाति ज्योति) रौशन कर गये जो सदा जलती और गुम करदा (खोई हुयी) राहों की रहनुमायी करती रहेगी। अक्तुबर १९५३ में यह पुस्तक हैदराबाद से प्रकाशित हुयी। नवम्बर १९५४ में हैदराबाद में हिन्दु-मुस्लिम तालूख़ात के शीर्षक से नरेन्द्रजी एम.एल ए. ने राज्य में हिन्दु-मुस्लिम संबन्धों पर प्रकाश डाला है। (७०) पृष्ठ की ये पुस्तिका हैदराबाद में ही प्रकाशित हुयी। इससे पूर्व "मुस्लिम एक़्तेदार का पसमन्ज़र' पुस्तिका लिखी जो साहित्यसदन, हैदराबाद ने प्रकाशित की। इसमें इस्लामी राज्य की एवं खुद मुख़्तारी की निराधार कल्पना का खण्डन किया गया है। ये पुस्तक उस समय लिखी गयी जब हैदराबाद में कोई कुछ लिखने या बोलने का साहस न कर सकता था।

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद द्वारा जो पुस्तकें प्रकाशित की गयी उनमें हिन्दी में "विनायकराव अभिनन्दन ग्रंथ" बडे आकार के ६२० पृष्ठों ३८ चित्रों का सजिल्द ग्रंथ बहुत सुन्दर ढंग से लिखा गया है। लेखों को एकत्रित करने तथा उसको कलाकारी ढंग से छपवाने में पंडित जी ने बडी मेहनत की।

पंडित जी एक अच्छे पत्रकार भी हैं। "वैदिक आदर्श" साप्ताहिक जो स्व. चंदूलालजी सपादक के नाम से निकलता था, पडितजी ही उसका संपादन करते थे। बडे अच्छे लेख निकलते थे। भाई वंशीलाल पुस्तकालय में अब भी इसकी जिल्दें पढ़ने को मिलेंगी। ये पुस्तकालय भी हैदराबाद के पुस्तकालयों में ख़ास माना जाता है, इसके लिये बढिया पुस्तकों के जमा करने तथा उसको सजाने का श्रेय भी पंडितजी को है। आपको साहित्य में बहुत रुचि है। सभा द्वारा निकलने वाले 'आर्य जीवन' के नरेन्द्रजी अब भी संपादक हैं। इसके कई बढिया विशेषांक निकल चुके हैं। पंडितजी की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है, कितनी ही पुरानी बातें याद हैं। उर्दू-फार्सी के बहुत से शेर सुना देते हैं। विचित्र एवं विशेष बात यह है कि अपनी आयु के (६७) वर्ष बिताने पर भी "नव-जवान" दिखायी देते हैं।

पण्डितजी के पत्र भी साहित्यिक रुचि लिये हुये होते हैं। हिन्दी में हों या उर्दू में। मनानूर में नज़रबन्दी के समय जो पत्र लिखे अपने बडे भाई राजेंद्र प्रसादजी के नाम वह भी महत्वपूर्ण है। एक पत्र में लिखते हैं "तीन साल के 'एकान्त वास' में एक साल का ज़माना ख़तम हो चुका। अब दो साल बाकी रहे हैं। ईश्वर के रहम व करम से यह दिन भी आसानी से गुज़र जायेंगे। इन्सान मुसीबत से परेशान होकर वीरान में ध्यान मग्न रहता है ताके सुकून हासिल हो। ये एक ऐसा मुकाम पाया है जहाँ ज़िन्दगी की घडियाँ पुरसुकून तरीके पर गुज़र रही है। ... "देहात ही एक मुकाम है जहाँ लोगों की जिन्दगी आलयशात (झंझटों) से पाक है ..."

इसी पत्र में अपनी छोटी बहन की बेटी, भान्जी सरला के लिये चंद बातें लिखते हैं :- सरला ! एकनाथ, गुरु (नाथ) और तुम हर गुरुवार को शाहलीबंडा समाज में पाबंदी के साथ जाया करो, परदा छोड दो, संध्या और हवन की आदत डालो। दूसरों के ठाठ-बाठ से प्रभावित होकर मां-बाप को आर्थिक परेशानी न दो। सादा पहनों और सादा खावो लेकिन विचार बुलन्द रखो। यही सभ्यता का श्रेष्ठ जौहर है। इसी जौहर से इन्सान-इन्सान बनता है। पढाई पर ध्यान दो। लक्ष्मीदेवी से तमाम बातें मालूम करावो। शर्मिष्ठा को भी हिंदी पढाने की कोशिश करो। [सरला दो वर्ष हुये और लक्ष्मीदेवी (तीसरी बहन की लडकी) इसी वर्ष स्वर्ग सिधार गयी। शर्मिष्ठा बडे भाई की ज्येष्ठ पुत्री का नाम है।]

१९६४ में जब राजकवि मुंशी द्वारका प्रसाद 'उफक़' लखनवी की जन्म शताब्दी दिल्ली, लखनऊ, कानपुर आदि की तरह हैदराबाद में मनायी गयी तो समारोह समिति के अध्यक्ष पं. नरेन्द्रजी थे और मैं मंत्री बनाया गया था तब मुझे पंडितजी के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुवा। इसमें उफक़ साहब कें सुपुत्र स्व. मुन्शी विश्वेश्वर प्रस दजी मुन्नवर भी सम्मिलित हुये थे। मैं पंडितजी के आदर्श आचरण एवं योग्यता से बहुत प्रभावित हुवा। मानव समाज ऐसे महान पुरुषों पर जितना गर्व करे कम है।

एडवोकेट,
'मनोहर भवन'
सोमाजीगुडा, हैदराबाद (आं. प्र.)

**

दुखियों एवं पीढ़ितों के सहायक

—वासुदेव कृष्णाजी नायक

सुख के साथी तो सब होते हैं किन्तु दुःख में साथ देने वाले मनुष्य बिर्ले दिखाई देते हैं। मानवता की सच्ची परख तभी होती है जब वह दुखियों एवं पीडितों की सहायता की कसौटी पर पूरी उतरे।

पं. नरेन्द्रजी को बहुत निकट से देखने के अवसर मिले। कांग्रेस में तथा समाज सेवा के अन्य क्षेत्रों में हम दोनों साथ साथ रहे है। कितनी ही बातें याद आती हैं और कितने ही दृश्य आंखों के सामने फिरने लगे। हैदराबाद के भूतपूर्व राज्य में जब सूखा पडा तब अकाल समिति द्वारा जो महायता कार्य आरभ किया गया। उसमे पंडितजी का बडा भाग रहा। इसी तरह जब भयंकर वर्षा के कारण लोग बेघर हो गये तो उनकी सहायता में भी वे आगे रहे। जब जनगांव और महबूब नगर में भारी वर्षा के कारण पुल टूट गये और ट्रेनें डूब गयीं तब जो हाहाकार मची उसकी याद आज भी आये तो मन को उदास कर देती है। देखते-देखते कितने मंगी-साथी बिछुड गये। गुरुकुल घटकेश्वर के आचार्य श्री बंसीलाल व्यास की जान इसी दुर्घटना में गई। लाशों को लाना और फिर उन्हें आदर-पूर्वक ठिकाने लगाना कैसा कठिन कार्य था पर आर्य समाज ने इस अवसर पर जो सेवा की और पंडित नरेन्द्रजी अपने स्वाभाविक साहस के साथ इस कार्य में जुटे, उससे सभी प्रभावित हुए। दुखी दिलों को जोडना नरेन्द्रजी को खूब आता है और उनकी सेवा का ढंग भी चुपचाप होता है। निष्काम सेवा उनके जीवन का आदर्श है। कोई मनुष्य इस संसार में निर्दोष नहीं किन्तु पंडितजी के त्याग व सेवा भाव ने मानवता के सच्चे रूप को हमारे आगे रखा। चरित्र बल से ही मानव प्रकाश देता है।

नानल नगर में अखिल भारतीय कांग्रेस महासभा के अधिवेशन के समय स्वागत समिति के महामंत्री नरेन्द्रजी भी थे। मैं और स्व. प्रानेशचारीजी भी। एक बडी जिम्मेदारी कंधों पर थी पर पंडितजी के जोश तथा परस्पर सहयोग से सभी प्रबन्ध सरल हो गये। पंडितजी की प्रवन्ध शक्ति भी अद्भुत है। कांग्रेस में स्वामी रामानन्दजी तीर्थ के विचारों से सहमत रहे। पहले जब निज़ाम से जिम्मेदाराना हुकुमत (Responsible Govt.) की मांग की ज़ाने लगी तो आपने इस आन्दोलन का समर्थन किया। हैदराबाद राज्य के तेलंगाना, मराठवाडा और कर्नाटक क्षेत्रों को भाषावारी प्रान्तों की रचना के समय अलग करके संबंधित प्रान्तों में मिला देने के सुझाव तथा आंध्र के साथ तेलंगाना को मिला कर विशाल आंध्र का रूप देने के प्रस्ताव को समझाने और जन समर्थन को संगठित करने में बडा सहयोग दिया और तेलंगाना वालों के साथ आंध्र के शासकों को न्याय व सद्व्यवहार के लिए नरेन्द्रजी प्रेरणा देते रहे। किसी अन्याय को उन्होंने कभी सहन नहीं किया। निज़ाम के शासन काल में भी वे न्याय के लिये संघर्ष करते रहे। जीवन सारा संघर्ष ही में बीता।

पंडित नरेन्द्रजी आर्य समाज के विशाल धार्मिक एवं सुधार आंदोलन में पूरी तरह जुटे रहने के साथ-साथ राजनीति पर भी गहरी दृष्टि रखते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी पंडितजी ने बहुत काम किया। केशव स्मारक पाठशाला, हिन्दी आर्टस् कालेज, ओरियन्टल कालेज की स्थापना में उनका बडा भाग रहा है और वे उसके सदस्य हैं। हिन्दी का प्रचार कार्य तो जैसे उनसे बंधा हुवा है। हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष रहे। हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष हैं। पंजाब के हिन्दी आंदोलन का बडी खूबी से संचालन किये। खादी में उनकी गहरी आस्था है। खादी बोर्ड के मंत्री रह चुके हैं। आंध्र राज्य विधान सभा का मैं १४ वर्ष सदस्य तथा ९ वर्ष उपाध्यक्ष रहा। इससे पूर्व हैदराबाद राज्य की विधान सभा के नरेन्द्रजी ५ वर्ष तक सदस्य रहे। दूसरी बार जब उन्हें टिकिट मिला तो उन्होंने अपने एक साथी को दे दिया।

पंडित नरेन्द्रजी ने गोरक्षा आन्दोलन को भी चलाया और दिल्ली के तेहाड जेल में दंड भुगत कर आये। कितनी ही बार उन्हें जेल होती रही

है। हैदराबाद में तो कई बार हो आये पर उनके साहस के आगे सभी दंड फीके पड गये। नरेन्द्रजी आगे ही बढते रहे पीछे कभी हटे नहीं। वीर पुरुष हैं और नैतिक स्तर बहुत ऊँचा रखते है। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उनके शुद्ध चरित्र से प्रभावित हुये बिना न रह सका।

प्रधान, हिन्दी अकादमी,
गौलीगुडा चमन,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

❋❋

काम की तलाश

—कृष्णदत्त

में आठवीं में पढता था। उन दिनों गुलबर्गे में रहता था। उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक उर्दू साप्ताहिक "वैदिक आर्श" निकला करता था। उसी के माध्यम से मैं पण्डित नरेन्द्र जी को जानने लगा था। उनके लेखों और भाषणों का विवरण पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि पण्डित जी बहुत ऊँचे-पूरे, बड़े डील-डौल के और बहुत ऊँची आवाज़ के व्यक्ति होंगे। ऐसी भी उस समय कल्पना हुई थी कि पण्डित जी की बडी-बडी मूंछें भी होंगी और वे सिर पर साफ़ा भी बांधते होंगे। उनके उस रूप की कल्पना के मेरे लिए दो आधार थे – (१) उनके जोशीले लेख और (२) स्व. पं. रामचन्द्र देहलवी या स्व. पं. लेखराम जी का आकार-प्रकार। इन्हीं दो बातों के आधार पर मैंने पण्डित नरेन्द्र जी के उस आकार-प्रकार की कल्पना की थी। मेरी कल्पना में उत्साहपूर्ण लेख लिखने वाले का रूप उसके सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता था। किन्तु जब मैंने वेद सप्ताह के सिलसिले में पं. नरेन्द्रजी

को गुलबर्गे में प्रत्यक्ष देखा तो एक बात के अतिरिक्त उनकी अन्य सभी बाते अपनी कल्पना के विपरीत देखीं। केवल उनकी ऊँची आवाज़ अपनी कल्पना के अनुरूप थी। शेष, छोटा-सा क़द, दुबला-पतला शरीर न सिर पर साफ़ा न चेहरे पर लंबी-लंबी मूँछें। पहली बार देखकर मैं हकबका सा रह गया।

१९३७ में जब उच्च शिक्षा के लिए मैं हैदराबाद में आया तो ऐसा कुछ संयोग हुआ कि पण्डित जी के साथ रहने का अवसर मिला। बरसों साथ रहे, साथ भोजन किया और साथ-साथ आर्य समाज का कार्य भी किया निश्चित ही सार्वजनिक कार्य में मुझे उनका नेतृत्व मिलता रहा और मैं उनके साथ एक स्वयं सेवक या कार्यकर्त्ता के रूप में रहा। तब से अब तक निरन्तर पण्डित जी का सानिध्य और सम्पर्क मुझे प्राप्त हो रहा है।

यों तो पण्डित जी में बहुत से गुण हैं, तभी तो आर्य समाज के माध्यम से पण्डित जी विगत तीन दशकों से भी अधिक काल से आर्य समाज का नेतृत्व करते आ रहे हैं। ऐसा नेतृत्व कुछ सद्गुणों के कारण ही किया जा सकता है।

पण्डित जी की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि वे युवकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। इसमें उनकी उत्साहपूर्ण वक्तृत्व-कला बहुत सहायक बनी है। निज़ामी शासन-काल में, जब कि शासन पर टीका-टिप्पणी करना जघन्य अपराध समझा जाता था, पण्डित जी अत्यन्त निर्भयता से और स्पष्ट शब्दों में शासन पर प्रहार करते थे। उन दिनों के उत्साहपूर्ण भाषणों ने केवल आर्य समाज को ही नहीं अपितु रियासत - हैदराबाद की अनेक सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं को भी बहुत से साहसी और कर्मठ कार्यकर्त्ता दिये हैं। और भी अच्छे और निर्भीक वक्ता थे, किन्तु उन लोगों के भाषण चाहे कितने ही जोशीले तथा उत्साहपूर्ण क्यों न हों, कानून की पकड में नहीं आते थे। परन्तु पण्डित जी ने कभी कानूनी जकड बन्दियों की परवाह नहीं की और निज़ामी प्रशासन पर सीधी और करारी चोट की। उसके फलस्वरूप उन्हें अनेकों बार जेल जाना पडा, मनानूर के काला पानी में सडना पडा, कई बार ज़बान बन्दी की पाबन्दी भोगनी पड़ी और हैदराबाद नगर में नज़रबन्दी में समय बिताना पडा। उनकी इसी निडरता का परिणाम

था कि वे युवकों के लिए आकर्षक हो गये थे और उन्हें "युवक हृदय सम्राट" की पदवी जनता ने दी।

पण्डित जी बिना कार्य के रह नहीं सकते। वे सदा कार्य करते रहना पसन्द करते हैं। मैं जब १९३७ में हैदराबाद आया था, तो स्व. अशोक कुमार, श्री खडेराव और मैं साथ-साथ ही रहते थे। उस समय पण्डित जी शहर में पैदल या सायकल पर घूमा करते थे। सायकल चलाते तो तेज़, चलते थे तो तेज़ – उनके किसी कार्य में मैंने कभी धीमापन नहीं देखा। तब हमने पण्डित जी की तेज़ी और सदैव कार्यरत रहने के स्वभाव को देखकर पण्डित जी का नाम "काम की तलाश" रखा था। वस्तुतः आज भी पण्डित जी में काम करने की इच्छा और तेज़ी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

पण्डित जी की सौन्दर्य-प्रियता एक कलाकार की सौन्दर्य-प्रियता के समान श्रेष्ठ कोटि की है। उनके रहन-सहन में सुव्यवस्था और सुरुचि पूर्ण साज-सज्जा वस्तुत प्रशंसनीय और श्लाघ्य है। हमने कभी भी उन्हें या उनके कमरे या कार्यालय को अस्त-व्यस्त नहीं देखा। उनकी इस सौन्दर्य-प्रियता के गुण की छटा सभा-सम्मेलनों और सार्वजनिक जीवन में सर्वत्र दिखाई देती है।

पण्डित जी बडे अच्छे संघटक और प्रबन्धक हैं। मैं तो उनकी अद्भुत प्रबन्ध-वृत्ति से बहुत प्रभावित हूँ। कम से कम साधन में काम को अधिक से अधिक सुन्दर, आकर्षक और उपयोगी बनाना पण्डित जी की प्रबंध वृत्ति की विशेषता है। कार्यालय को सुचारु रूप से चलाना, सम्मेलनों को आकर्षक ढंग से संगठित करना, बडे-बडे सम्मेलनों और समारोह की योजना बनाकर उसे कार्यरूप देना और उनके लिए पिण्डाल और नगर का निर्माण करने का नक्शा तैयार करना पण्डित जी के लिए बांए हाथ का खेल है। बडे-बडे सम्मेलनों के अवसरों पर मैदान में खड़े रहकर मिनटों में पण्डित जी जब पिण्डाल की कल्पना कर लेते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वे एक कुशल इंजीनियर हैं। इसी प्रकार किसी आन्दोलन के संचालन में भी पण्डित जी की कुशल प्रबन्ध-वृत्ति का परिचय मिलता है।

पण्डित जी में संघर्ष-प्रियता बहुत अधिक है। इसी गुण के फल-स्वरूप पण्डित जी अनेक बार सरकार के कोप-भाजन बने हैं। वस्तुतः

सत्रर्ष-प्रिय व्यक्ति ही महत्वाकांक्षी वनता है और जिसमें कोई महत्वाकांक्षा रहती है वही संसार में कुछ कर सकता है। मैंने अनेकों अवसरों पर पंडितजी को जान-बूझकर सघर्ष मोल लेते हुए देखा है। एक घटना मेरे आशय को प्रकट कर सकती है। १९४२ के आसपास का समय था। निज़ामी-शासन ने पण्डित जी पर भाषण-बंदी का प्रतिबन्ध लगाया था। वस्तुत: पण्डित जी के लिए यह बन्धन जेल के बन्दी-जीवन से भी अधिक कष्टदायक था। पण्डित जी किसी कारण इस बन्धन को ढोए जा रहे थे। सार्वजनिक सभाओं में भाषण देना बन्द हो गया था किन्तु युवकों की गुप्त बैठकें होने लगीं और पण्डित जी उन बैठकों में बोलने लगे। यहां तक तो ठीक था, पर सामने श्रोता बैठे हों और पण्डित जी आवश्यकता तथा अवसर प्राप्त होने पर भी भाषण न दें, यह बडा कठिन था। श्रावण मास था। पूर्णिमा का पर्व देवीदीनवाग में मनाया गया था। नगर के आर्यजनों से मैदान भरा पडा हुआ था। सभा का कार्यक्रम पूरा हुआ और पण्डित जी धन्यवाद देने उठे। लोगों के मना करने पर भी इससे पूर्व धन्यवाद तो उन्होंने अनेक बार दिया है। उनका तर्क था कि भाषण बन्दी है और धन्यवाद देना भाषण नहीं हो सकता। उस दिन पण्डित जी ने मानो निश्चय ही कर रखा था कि निज़ाम का कानून तोडेंगे। उन्होंने निरन्तर ४५ मिनट तक धन्यवाद दिया—वह धन्यवाद क्या था, अच्छा ख़ासा भाषण था, उसमें पर्व का महत्व था, शहीदों को श्रद्धांजलि थी, आर्य समाजियों को सक्रिय बनने का आह्वान था, सरकार पर टीका-टिप्पणी थी और वह सब कुछ था जो पण्डित जी के जोशीले भाषण में हो सकता है। हम सब ने सोंचा था कि पण्डित जी पकड लिये जाएंगे। किन्तु ऐसा कुछ हुआ नहीं। इस घटना से पण्डित जी के इस स्वभाव पर प्रकाश पडता है कि उन्होंने सार्वजनिक जीवन में किस प्रकार ख़तरे मोल लिये और किस साहस के साथ उनका मुक़ाबला किया। जब कोई व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्र में आगे बढ़ता है तो उसकी कुछ बातों का विरोध होता है। उसके प्रशंसकों के साथ-साथ निन्दक या विरोधी भी होते हैं। ऐसे विरोध के पीछे औचित्य होता है और अनौचित्य भी होता है। पण्डित जी के भी आलोचक हैं, विरोधी हैं और प्रतिस्पर्धी भी हैं। किन्तु पण्डित जी की एक विशेषता मैंने देखी कि उनका कोई प्रतिस्पर्धी, विरोधी, आलोचक या निन्दक जब किसी संकट में होता है तो पण्डित जी उसकी सहज सहायता अवश्य करते हैं, उसके बिगडते हुए काम को बनाते हैं,

उस पर आये हुए आर्थिक संकट का निवारण करने के लिए दौड़ते हैं। इसका एक अच्छा परिणाम यह निकला है कि पंडितजी के सार्वजनिक जीवन की कटु आलोचना करने वाला और उनके कार्यों का घोर विरोध करने वाला भी पंडितजी के साथ हो जाता है। विरोध करने वाले के साथ भी पंडित जी की सहज परोपकार-वृत्ति ने भी पंडितजी को बहुत बल दिया है।

आचार्य, हिन्दी आर्ट कालेज;
विद्यानगर हैदराबाद (आं. प्र)

**

धर्मवीर नरेन्द्रजी

लोचनदास हरिदास मदन

माननीय पं. नरेन्द्र जी ने अपना जीवन देश धर्म की सेवा में लगा दिया तो इससे समस्त हिन्दु समाज को बल मिला। हैदराबाद के निज़ाम राज्य में धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने वीरता एवं साहस के साथ मुकाबिला किया, कठिन यातनायें सही उससे, सभी धर्म प्रेमियों को प्रेरणा मिली और हम में जागृति आयी। पंडितजी के आदर्श चरित्र ने अनगिनत लोगों को प्रभावित किया। उनके जोशीले भाषण को जहां भी होते सुनने के लिय लोग उमड़ पढ़ते और जय जयकार मनाते थे। आज भी वे गोरक्षा, हिन्दी प्रचार तथा अन्य धर्म संबन्धी आन्दोलनों में निरन्तर मार्ग दर्शन करते आ रहे हैं। पं. नरेन्द्र जी का नाम जिस प्रकार हैदराबाद के सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास से जुड़ा हुवा है उसी तरह वे धर्म सेवा केलिये सदैव याद रहेंगे।

मंत्री, श्रीकृष्ण गो सेवा मंडल;
हनुमान टेकडी, हैदराबाद (आं प्र.)

जीवित शहीद

श्रद्धेय पं. नरेन्द्रजी

– सत्यप्रिय शास्त्री एम.ए.

संसार में बहुसंख्यक जन ऐसे हैं कि जिनका जीवनचक्र व्यक्तिगत धुरी पर ही आधारित होता है, परन्तु यह विश्व ऐसे व्यक्तित्वों से सर्वथा शून्य नहीं है, जिनका जीवन-प्रवाह मानव मात्र की हितैषिता के ध्येय का पूरक हुआ करता है, देश धर्म एव समाज के लिये आत्मोत्सर्ग करने वाले भी दो वर्गों में विभक्त हो जाते हैं, प्रथम वे होते हैं जो इस उत्कृष्ट ध्येय के निमित्त बिना किसी भय के अपने प्राणों को न्यौछावर करके 'शहीद' की कोटि में जा पहुँचते हैं. इसके अतिरिक्त दूसरे वे होते हैं जो कि अपने इन उदात्त आदर्शों की पूर्ति हेतु जीवन भर सघर्ष करते हैं और तिल तिल कर जलते हुवे सामान्य-जनों केलिये प्रेरणा-स्तम्भ का कार्य किया करते हैं, निःसन्देह पहला मार्ग पूजनीय तथा प्रशसनीय है, परन्तु मेरे विचार से दूसरा मार्ग कठिनतर है, इस जगती तल पर कोई दिलगुर्देवाला, साहस का पुतला ही इस मार्ग पर निरंतर चल पाता है, श्रद्धेय पं. नरेन्द्रजी के विषय में मैं जब कभी इस दृष्टि से सोचता हूं तो उन्हें इस द्वितीय श्रेणी में अग्रणी पाता हूं,

जीवन की उप-वेला में लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के चरणों में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का दृढ संकल्प हृदय में संजोये अन्धी साम्प्रदायिकता के खूनी पंजे में जकडी हैदरराबाद रियासत में देव दयानन्द का उद्घोष करने इस वामनावतार नें अभियान को आरम्भ किया, प्रकाश-अन्धकार, न्याय-अन्याय, दुष्टता-सज्जनता

का द्वन्द्व युद्ध ही तो शाश्वत देवासुर संग्राम कहा जाता है, उस रियासत में भी इस सतत सत्य की पुनरावृत्ति हुई जिसके उज्वल पहलु की एक महत्व-पूर्ण कडी श्री पं. नरेन्द्र जी ही रहे हैं,

अदम्य साहस के लिये लम्बे तगडे शरीर की ही आवश्यकता नहीं होती है विशालकाय पुरुष भी कायरता का प्रतिनिधित्व करते देखे गये हैं और इसके विपरीत मुट्ठी भर ढाँचे में भी अपरिमित साहस के दर्शन होते हैं। रियासत की मुख्य सडक पर निजाम की सवारी निकल रही है, सवारी के एक-एक मील आगे सिपाही मार्ग साफ कर रहे हैं, इस सवारी के आगे प्रजाजन का आना अपराध था, लेकिन यह क्या ? एक ठिगने कद का पुरुष धडल्ले के साथ विना परवाह किये सवारी की ओर वढ रहा है, इस अप्रत्या-शित व्यक्तित्व को देखकर निजाम पूछता है कि यह कौन है उत्तर में 'यही पं नरेंद्र है' सुनकर निजाम के मुख से निकल पडता है' इस डेढ बालिश्त के आदमी ने सारी रियासत में उथल-पुथल मचा रखी है। पाठक ! इसी से अनुमान कर सकते हैं कि उस धार्मिक तथा स्वातन्त्र्य युद्ध में इन्होंने कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की होगी ?

चढते यौवन में मनुष्य प्रायः भावुकता का शिकार होता है और इस कारण वह भावी यथार्थ का अनुभव न कर अनेक असाध्य प्रतिज्ञाओं के चक्रव्यूह में जा फंसता है। पं. नरेन्द्र जी भी अपने आचार्य के समक्ष आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर लौटे, जीवन के इस मार्ग में साहस के बडे-वडे धनी भी डगमगा जाया करते हैं, इस चिकने मार्ग पर कोई विरला ही अपने को संभाल पाता है, आपके सामने भी जब एक सुशिक्षिता, रूपवती, धनाढ्य देवी ने प्रणय का प्रस्ताव साग्रह उपस्थित किया, तब आपने 'जब तक मेरा हैदराबाद गुलाम है तब तक विवाह कर के सुख भोगने की मैं स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता' कहकर उस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। पाठक ! सोचें, क्या स्वर्गलोक की ऊंचाइयों को भौतिक मापदण्डों से नापी जा सकती है ! पुराणों के अनुसार तो रूपसियों ने ऋषियों ही नहीं देवों तक की तपस्याओं को भी भंग कर डाला था, आखिर यह तो मनुष्य ही ठहरा,

विपत्ति; मनुष्य के धैर्य परीक्षा की कसौटी हुआ करती है, विशेष कर आत्मीयजनों की ममता देश सेवा मे दुस्तर बाधा खडी कर

दिया करती है, निजाम ने भी एक समय पूज्य पण्डित जी को इनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों से चिढकर मन्नानूर (हैदराबाद का कालापानी) में बन्द कर दिया, मीलों तक जंगल हिंस्त्रक पशुओं का साम्राज्य, पढने-लिखने की कोई सुविधा नहीं. शायद वर्ष में एक पत्र लिखने की आज्ञा और वह भी कट छटकर पहुच पाता था, ऐसे मानसिक कष्टदायक एव उबाने वाले वातावरण में आपको एक दु:खान्त समाचार मिलता है कि नरेन्द्र ! तुम्हारी माता जीवन की अन्तिम श्वासें गिन रही हैं, केवल एक बार तुम्हें देखने की तमन्ना से उनकी आत्मा जीर्ण देह में अटकी पडी है, इसी के साथ निजाम का गुप्त सन्देश कानों में पडता है कि 'यदि तुम क्षमा-याचना करलो तो माता के अन्तिम दर्शनों का अवसर सरलता से मिल सकता है। भयानक भूकम्पों में वृक्ष धराशायी हो जाते हैं नदियों के प्रवाह पलट जाते हैं गगनचुम्बी इमारतें भी भूमिसात् ढाया करती हैं, केवल पर्वत ही होते हैं जो उस प्रलयंकर अवस्था में स्थिर रहकर अपनी असीम दृढता का परिचय दे पाते हैं; ठीक इसी भांति इन्सानों की जिन्दगी में दुविधाओं तथा डगमगा देने वाली अवस्थाओं में कितने धैर्य के धनी होते हैं जो ममत्व के बलशाली परदे को चीरकर अपने ध्येय के प्रति अटूट आस्था का परिचय देने में अपने को सशक्त सिद्ध कर पाते हों ? हमारा माथा गौरव से तब चमक उठता है जब हम अपने इस नायक को इस आमूल-चूल हिला देने वाले अवसर पर भी पर्वत की नाई दृढ-प्रतिज्ञ एवं सुस्थिर खडा पाते हैं अपने धर्म से गिर कर माता के अन्तिम दर्शन तक स्वीकार न किये, क्या यह कम गौरव की बात है ? दधीची के अस्थिदान की पुराणों ने बडी प्रशसा की है. दधीचि का वह त्याग अनुपम एव स्तुत्य है, इसमें कोई दोराया नहीं है लेकिन त्रस्त तथा शोषित मानवता के रक्षा कार्य में अपने स्वाभाविक मातृ स्नेह का परित्याग करने वाले इस कलियुगी निर्मोही दधीचि के आत्मोत्सर्ग का गान तथा मूल्यांकन करने वाला कोई वेद व्यास स्वतन्त्र भारत की पावन धरणी पर न जाने कब होगा ?

समय बदला, गुलामी का निविड अन्धकार छिन्न भिन्न हुआ, शहीदों की शाहदत रंग लाई, और १५ अगस्त १९४७ को जवाहरलाल नेहरू लाल किले से शताब्दियों की गन्दी गुलामी और साम्राज्यवाद के प्रतीक यूनियन जैक को उतार कर उसके स्थान पर स्वाधीनता का सन्देश वाहक तिरगा ध्वज लहरा रहे थे, राष्ट्र के अबाल-वृद्ध

नर–नारी स्वाधीनता के आनन्दोत्सव में मग्न थे, लेकिन ऐसे देश भक्तों के लिय अपने जीवन की सर्वाधिक आनन्दप्रद उन घड़ियों में भी प. नरेन्द्र जी क्रूर निजाम का जेलों मे पड़े हुवे उसकी अन्यायी अदालतों से मिलने वाले फांसी या आजीवन कारावास के दण्ड की बाट जोह रहे थे, इससे बढ़कर आश्चर्य तथा खेद का विषय और क्या हो सकता है कि आजादी रूपी दुल्हन की सजी सजाई डोली को अपने कन्धों पर उठाकर लाने वाले ये वफादार सेवक उसके द्वारपाल एव स्वागतार्थ मगल गान महोत्सव के अपूर्व आनन्द से भी बलात् वचित कर दिये गय थे, पं. नरेन्द्र जी अपने आप में एक जीवित शहीद हैं आपके जीवन का आधे से भी अधिक भाग हैदराबाद की जनता को निजाम के खूनी पंजे से मुक्त कराने के लिय स्वातन्त्रय संघर्ष करते हुवे नारकीय कारागारों मे व्यतीत हुआ, निजाम के पालतू गुण्डों द्वारा किये गय घातक प्रहारों से आपके पैर को टूटी हड्डी आज भी आपके तप-त्याग एव देश धर्म प्रेम की ज्वलन्त गाथा तथा निजाम उस्मान अली की अन्धी और क्रूर साम्प्रदायिकता की कलकमयी कहानी की प्रतीक हैं। स्वतन्त्र भारत का इससे अधिक बढ़कर और दुर्भाग्य क्या होगा कि जिन लोगों ने भारत माता के गले के तौख. पांवों की बेडियों और हाथों की हथकडियों को छिन्न–भिन्न करने के पावन लक्ष्य को लेकर अपनी उभरती जवानियों को आहुत कर दिया, जिन्होने स्वतन्त्रता देवी के पुनीत मन्दिर के निर्माण के लिये अपने को उसकी नींव के पत्थर के रूप में गलाकर रख दिया, आज वे ही सर्वथा उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं और अंग्रेजों के साथ मिलकर स्वाधीनता सेनानियों का पठो में छुरा घोंपने वाले अवसर वादी, बगुला भक्त आज तिलक, सावरकर और गान्धी के भारत के भाग्य विधाता बन वैठे हैं इससे बढ़कर और अधिक विडम्बना क्या हो सकती है ? आज का नेतृत्व तो एक कवि के शब्दों में यों है : "कौम का गम में खाते हैं डिनर हुक्काम के साथ "रज लीडर को बहुत है, मगर आराम के साथ" हमारा सौभाग्य है कि राष्ट्र की पुरानी तपीतपाई पीढी का दिग्दर्शन कराने वाली कुछ कड़ियाँ अभी भी विदयमान हैं, जिनमें श्रद्धेय प. नरेन्द्र जी तिलक एवं सावरकर युग के एक आग्नेय संस्मरण हैं, यद्यपि इनका अभिनन्दन बहुत समय पूर्व हो जाना चाहिये था, परन्तु 'देर आय दुरूस्त आये ऊर्दू की इस लोकोक्ति के अनुसार यदि प्रातः का भूला शोभ के घर आजावें तो उसे भूला भटका नहीं कहा जाता, पण्डित जी की महत्व पूर्ण सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये किया जा रहा यह अभिनन्दन अत्यन्त ही प्रशसनीय तथा स्तुत्य है

उनके अभिनन्दन के शुभावसर पर मैं हरयाणा प्रान्त के सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से उनका सादर अभिनन्दन करता हुआ हार्दिक बधाई देता हू, तथा अन्तर्यामी जगदीश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य पण्डित नरेन्द्र जी, स्वस्थ, सबल, दीघार्यु तथा नीरोग रहें जिससे कि आज की युवा पीढी उनसे इसी प्रकार मार्ग दर्शन प्राप्त करती रहे ।

'भूयश्च शरद : शतात्' !!

प्रधानाचार्य : दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय,
हिसार, (हरियाणा)

पूज्य पण्डित जी

– शंकरदेव वेदालंकार

बिद्यार्थी अवस्था में पूज्य पण्डित जी ने जो सहायता मेरी की थी वह मैं कभी भूल नहीं सकता । उस जमाने में मुझे वह दस रुपये प्रतिमास भेजते थे । वह दस रुपये आज के ५००/- रुपये के बराबर हैं । दस रुपये में मेरी सारी आवश्यवतायें पूर्ण हो जाती थी । मैं जिस आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहा था उस दृष्टि से तो उस दस रुपये की कीमत अमूल्य ही है । पूज्य पण्डित जी में संकट में सहायता प्रदान करने की तडप हमेशा बनी रहती है। देश और भारतीय सभ्यता के ऊपर जब भी संकट आया तो फौरन आगे हो गए । उस जमाने में मुझे पडितजी की सहायता न मिलती तो शायद मैं वह न बनता जो मेरी स्थिति या थोड़ा बहुत समाज में जो स्थान है । मेरी जीवन की सफलता का बहुत कुछ श्रेय पूज्य पंडित जी को ही जाता है ।

संसद सदस्य (लोक सभा)
शांहगंज, बीदर (कर्नाटक प्रदेश)

युवक हृदय सम्राट्

वेंकटलाल ओझा

निजाम राज्य देश का सब से बड़ा देशी राज्य था और साथ ही सबसे बड़ा मुस्लिम राज्य भी। जहां राजा तो मुसलमान था पर जनता हिन्दु थी। नवाब मीर महबूब अली खां के शासन काल में यहां हिन्दु-मुस्लिम एकता रही मगर उनके स्वर्गवास के बाद जब नवाब मीर उस्मान अली खां राजसिंहासन पर बैठे तो यहां का वातावरण धीरे-धीरे साम्प्रदायिकता से विषाक्त होने लगा। सरकारी नौकरियों में ही नहीं जीवन के हर-क्षेत्र में साम्प्रदायिकता फैलने लगी। अंग्रेजों ने भी इस विष को फैलाने में सक्रिय योग दिया। सर अली इमाम जैसे कट्टर साम्प्रदायिक व्यक्ति को यहां दीवान बनाकर भेजा जिसके कारण यहां बिहारी-मुसलमानों का वर्चस्व बढ़ गया। उसी से स्थानीय मुसलमानों की रक्षा के लिए निज़ाम को मुल्की कानून की घोषणा करनी पडी। सर अली इमाम तो कुछ वर्ष बाद यहां से चले गये पर साम्प्रदायिकता की जो विष बेल वे बो गये थे, वह फलने फूलने लगी जिसके कारण राज्य में पुस्तकालयों की स्थापना, पाठशालाओं की स्थापना राजद्रोह के तुल्य अपराध मानी जाने लगी यहां तक की मन्दिर पर शिखर भी नहीं लगाया जा सकता था अर्थात् नये मन्दिरों का निर्माण तो क्या पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार तक कठिन हो गया था। ऐसी विषम स्थिति में निजाम राज्य में आर्य समाज ने बहुत बड़ा कार्य किया। सारे राज्य में आर्य समाजों की स्थापना हुई। पाठशालाएं और पुस्तकालयों का श्री गणेश किया गया। व्यायामशालाएं स्थापित की गयी। यह सब निज़ाम सरकार की आंख में चुभ रही थी। जब रेजिडेन्सी बाजार निज़ाम को ब्रिटिश सरकार से वापस मिला तो सबसे पहले उसने आर्य समाज-सुलतान बाज़ार के पुस्तकालय पर अपना कोप उतारा। घंटों तलाशी हुई और महत्वपूर्ण पुस्तकें जो जब्त नहीं थीं वे भी उठाकर ले गये। जो भी बाहरी व्यक्ति यहां आता और आर्य समाज की सेवा करता उसे राज्य से निष्कासित कर दिया जाता। इसमें वेदमूर्ति, पं. श्रीपाद दामोदर सतवालेकर

प्रमुख हैं। यदि उन्हें निज़ामशाही ने राज्य के बाहर न निकाला होता तो सम्भव है वे स्थायी रूप से यहीं बस जाते जैसे कि उनके छोटे भाई यहां बस गये। स्वाध्याय मण्डल की स्थापना वे यहीं करते और "वैदिक धर्म" का प्रकाशन भी यहां से होता।

ऐसे क्षुब्ध वातावरण में बाहरी व्यक्ति के बजाय स्थानीय व्यक्ति को ही आर्य समाज के कार्य के लिये तैयार करने का निर्णय उस समय के आर्य नेताओं ने किया। इस कार्य के लिए जो युवक आये, उनमें श्री नरेन्द्र प्रसाद सक्सेना भी एक थे। लाहौर के उपदेशक महाविद्यालय में प्रशिक्षण के लिए इन्हें भेजा गया। वहां से आने के बाद आर्य समाज की सेवा में ही इन्होंने अपने को अर्पण कर दिया। यदि वे चाहते तो उनके लिए सरकारी नौकरी भी सुलभ हो सकती थी। पर आरामदायक और सुख चैन की नौकरी न कर सेवा का व्रत लिया। तब आज की तरह नेतागिरी आराम की नहीं थी। पग-पग पर सरकारी कोप तो था ही साथ ही परिवार और अपने कहे जाने वाले भी अलग कन्नी काटते थे। सामाजिक बहिष्कार तक उस समय करते थे। यह सब होते हुए भी वे अपने पथ से विचलित नहीं हुवे।

सेवा के बल पर निजाम राज्य के आर्य जगत् में ऐसे छा गये कि श्री नरेन्द्र प्रसाद सक्सेना से पंडित नरेन्द्र बन गये। इस नाम से निज़ाम सरकार कांपती थी। चौबीसों घंटे गुप्तचर छाया की तरह इनका पीछा करते थे जहां भी वे जाकर ठहरे उन्हें पुलिस तंग करती कि क्यों आये ? कब और कहां जायेंगे ? यहां किस-किस से मिले ? किससे क्या बात हुवी ? किसने कितना रुपया दिया आदि प्रश्नों की बौछार उस आतिथ्येय पर करते थे। कई बार कई अधिकारी इन्हीं प्रश्नों को दोहराते। कभी स्वयं आते तो कभी पुलिस चौकी उसे बुलवाते। यह सब होने पर भी न इनका कहीं जाना रुका और न किसी ने अपने यहां इनको ठहराने से इन्कार ही किया। हां एकाद बुज़दिल मिल जाय तो बात अलग है। इस तरह आर्य समाज के संगठन को उन्होंने सुसंगठित किया। मज़बूत बनाया साथ ही बड़ी कठिनाई से इन्हें "वैदिक आदर्श" नाम से उर्दू साप्ताहिक प्रकाशित करने की आज्ञा मिली थी। जिसका सम्पादन भी निर्भिकता के साथ इन्होंने किया। उस समय के सामाजिक क्रान्ति के अग्रगण्य लोगों के चित्र और चरित्र उसमें प्रकाशित किये। जिसका परिणाम यह हुआ

कि सरकार सावधान हो गयी और पत्र के प्रकाशन को बन्द करना ही श्रेयस्कर समझा।

१९३७ में कांग्रेस ने संघर्ष का मार्ग छोड़कर वैधानिक मार्ग पर चलने का निश्चय किया। देश के ११ प्रान्तों में से ८ प्रान्तों में कांग्रेस को बहुमत मिला था। अतः वहां कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बने। कल के विद्रोही सरकारी शासन चलाने लगे और अंग्रेज राज्यपाल उनके काम में हस्तक्षेप से विरक्त हो गये। यह आश्वासन तत्कालीन भारत मन्त्री लार्ड–जैटलेंड ने दिया था। तब कहीं कांग्रेस ने मन्त्रिमण्डल बनाया। इससे देश में एक नई चेतना की लहर फैल गयी। जागृति की एक किरण ने देशवासियों के अन्तर्मन को आलोकित कर दिया।

इसकी ज्योति देशी राज्यों में भी फैलने लगी। १९३५ के भारत अधिनियम के अनुसार ब्रिटिश भारत और देशी राज्यों को मिलाकर एक संघ के निर्माण की तैयारियां होने लगी। लार्डवेलिंगटन के स्थान पर नये वाईसराय बनकर लार्डलिनलिथगो आ गये थे। महात्मा गांधी से मिलने उन्होंने आरम्भ किया। हिन्दुओं की गौ रक्षा की भावना को पहचानकर उन्होंने सांड पालन की योजना देश के सामने रखकर सांड प्रतिपालक के नाम से वे प्रसिद्ध हुवे। देशी राज्यों ने संघ सरकार की स्थापना में अनेक रोडे अटकाये। पर लार्ड लिनलिथगो भी चतुर थे। भले ही संघ शासन स्थापित होने में विलम्ब हो पर उन्होंने संघ न्यायालय की दिल्ली में स्थापना कर दी।

अतः ऐसे युगान्तरकारी वातावरण में जहां जनता में नया जोश उमड़ रहा था वहां देशी नरेश चिन्ता के मारे परेशान थे। उनकी नीन्द हराम थी। जिसमें निजाम का तो और भी बुरा हाल था। उन्हें अपना आसन डोलता दिखाई दिया। अतः मरता क्या न करता की तरह वह आर्य समाज को कुचलने में अपनी सारी शक्ति लगा बैठे। चुन–चुनकर आर्यसमाज के कार्यकर्ता पकड़े जाने लगे। उनकी हत्या की जाने लगी। भला निज़ाम की दृष्टि से नरेन्द्र जी कैसे बचते। इनके भाषण पर रोक लगा दी गयी। इन पर पहला वार हुआ। पकड कर बिना मुकदमा चलाए ही इन्हें निजाम राज्य के कालेपानी–अन्दमान मन्नानूर के नाम से विख्यात जेल में रख दिया जहां आजकी तरह जाना सुलभ नहीं था न कोई बस वहां जाती थी। कहने को वह हैदराबाद के पडोसी जिले महबूब नगर में था। वहां का जलवायु इतना विषाक्त था कि बहुत कम लोग

बचकर वहां से जीवित आते थे। इन पर बहुतेरा दबाव डाला गया किसी तरह क्षमा मांगलें या आर्य समाज की सेवा से विरक्त होने का कमसे कम अश्वासन दे दें तो इन्हें छोडा जा सकता है पर ये भी धुन के धनी थे। किसी प्रकार भी दमन और दबाव के आगे नहीं झुके।

निजाम के ज्यों-ज्यों अत्याचार दमन बढते गये त्यों-त्यों लोगों में चेतना बढती गयी। हैदराबाद राज्य कांग्रेस की स्थापना के पूर्व ही उस पर प्रतबिन्ध लगा दिया गया जैसाकि कंस ने अपनी बहन देवकी सन्तान का वध करता था निजाम ने राज्य कांग्रेस को तो गैरकानूनी घोषित कर दिया, पर आर्यसमाज को ऐसा नकर सके क्योंकि यह एक धार्मिक संस्था थी फिर भी निजाम सरकार चुन-चुनकर लोगों को पकडकर जेल भेजने लगी। सत्यार्थप्रकाश के सार्वजनिक पठन पाठन पर उसने रोक लगा दी। सातवें समुल्लास के पाठ पर प० देवीलाल जी ओझा को एक वर्ष की सजा दे दी। अत: ओझाजी ने जेल के लिए अदालत में उपस्थित होने के दिन २४ अक्टुबर १९३८ को आर्य रक्षा समिति की स्थापना कर उसके प्रधान के रूप में सत्याग्रह की घोषणा कर दी। उद्घोषणा को देश की सभी आर्यसमाजों ने स्वीकार किया। ओ३म् की ध्वाजा ले लेकर रेल गाडियां भर-भरकर सत्याग्रह के लिए निजाम राज्य में आने लगी जिन्हें औरंगाबाद, गुलबर्गा आदि नगरों में रोक कर हजारों सत्याग्रहियों को निजाम शासन गिरफतार किया। राज्यकी सभी जेलें भरदी गयीं। कई जेलों का विस्तार हुआ। प्रमाणस्वरूप गुलबर्गा जल का विस्तार देखा जा सकता है, जहां आज एक कालिज है। इस आर्य सत्याग्रह का अपना ही एक इतिहास है जिस पर एक ग्रंथ लिखा जा सकता है।

बिल्ली के भाग से छींका टूटा। जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ। वह एक के बाद दूसरे देश को हडपने लगा। अत: अक्टूबर १९३१ में विश्वयुद्ध छिड गया। देशी नरेशों ने चैनकी सांस ली संघ शासन धारा का धरा रह गया। आर्य सत्यग्राह के समझौते के समय निजाम ने जो शर्तें स्वीकार की थि उनका परिपालन रुक गया।

मन्ननूर से नरेन्द्र जी को भेजकर ही निजाम चुप नहीं बैठे। वहां भी उनके साथ जोर ज्यादतियां और अत्याचार होते रहे हैं। अन्त में

निजाम को उन्हें छोड़ना ही पड़ा। फिर भी उनके पीछे तो निजामशाही हाथ धोकर पड़ी थी। गुलबर्गा में राजा नारायण लाल पित्ती की अध्यक्षता में चतुर्थ निजाम राज्य आर्य सम्मेलन हुआ। वहां २४ अप्रैल १९४५ को अन्तिम दिन दोपहर को स्वयं सेवकों और पुलिस में कुछ वाद विवाद हो गया। अतः पुलिस अधिकारी रात को पं० विनायकराव जी और नरेन्द्र जी को गिरफ्तार करने पहुंचे। अपार जनसमूह को देखकर पुलिस की हिम्मत नहीं हुवी कि उस समय उन्हें पकड सके। काफी देर तक इन दोनों के साथ पुलिस अधिकारी विलचन्द-नगर के एक कोने से दूसरे कोने में घूमते रहे। अन्त में अवसर पाकर इन दोनों को पुलिस अपने साथ ले गयी। विनायकराव जी को तो कम और नरेन्द्र जी को इतनी बुरी तरह से पीटा कि कई स्थानों से हड्डियां टूट गयीं। जब तक वे बेहोश नहीं हुए पुलिस वर्बता से उन्हें पीटती रही। सम्भव है पुलिस ने उन्हें मरा हुआ समझकर ही छोडा हो। इसी तरह संगारेड्डी में नरेन्द्र जी पर एक अरब ने गोली चलाई थी, सौभाग्य से गोली उनकी टोपी को कुछल कर चली गयी। टोपी गिर गयी और वे ईश्वर की कृपा से बाल-बाल बच गये।

इस तरह महज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि निजाम राज्य में आर्यसमाज की सेवा का व्रत लेना कोई हंसी खेल नहीं था। सदा कफन बांधकर चलना पडता था। कब मौत के मुंह में धकेला जा सकता है कोई नहीं जानता था। नवाब बहादुरयार जंग का उदाहरण हमारे सामने है। ऐसे विकट समय में नरेन्द्र जी सदा अकेले ही निजाम राज्य के इस कोने से उस कोने तक दौरा करते रहते थे। एक कम्बल उनके कंधे पर रहता था। गुलबर्गा की मरणान्तक पीटाई के बाद भी उनके उत्साह में कोई अन्तर नहीं आया। न कभी उन्होंने अपनी रक्षा के लिए कोई साथी साथ में रखा।

इनके भाषणों पर तो कई बार रोक लगायी गयी। इतना ही नहीं इन पर १९४६ में राज्य के बाहर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया, जो पुलिस कारवाई के बाद ही स्वयं उठा।

नरेन्द्र जी का जन्म रामनवमी २२ अप्रैल १९०७ ई० को हुआ। आज

भी तरुण की सत्त लगे रहते हैं। यही इनकी विशेषता है।

आज तो वे आर्य समाज के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता है। खेद इस बात का है कि आज नई पीढ़ी में ऐसे कर्मठ, त्यागी सेवाभावी नेता कहीं ढूंढे दिखाई नहीं पड़ते। ईश्वर उन्हें चिरायु करें और आरोगय रखे. जिससे वे आजन्म अपने सेवा पथ पर चलते रहें।

संस्थापक
नवभारत टाईम्स के
कसारहट्टा हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

अदालत संगठन शक्ति

जयचन्द्र जैन

मैंने पहली बार पं० नरेन्द्र जी को सन १९३६ में देखा। तब वह युवक हृदय सम्राट थे। उस समय निज़ाम की शान के खिलाफ, मुंह खोलना. घोर अपराध माना जाता था। तब पं० नरेन्द्र जी ने निज़ाम के अत्याचरों के विरुद्ध आवाज बुलद की। सोई हुई पीड़ित जनता को जागृत किया। नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए निज़ाम से लोहा लिया। निज़ाम का शासन उनसे भय खाता था इसीलिये मौका मिलते ही, उन्हें गिरफतार कर जेलों मे ठूस दिया जाता था। एक बार तो उन्हें "मन्नानुसार" के काले-पानी पर भी भेज दिया गया था।

पंडित जी उच्चकोटी के सरल, सुबोध, आकर्षक एवं तर्कयुक्त शैली के लोकप्रिय निडर और स्पष्ट वक्ता है। खरी-खरी बातें सुनाने मे वह किसी से भी नहीं डरते। उस जमाने में वह "इत्तेहादुल मुसलमीन के नेता नवाब बहादुरयाजंग के जवाब थे। पंडित जी के भाषणों में जादू का असर था। वह मुरदों में जान फूंकते थे। युवकों में स्वाभिमान को जगाते

थे। उनका भाषण युवकों में जोश भरता था और अत्याचारों से पीड़ित युवक, जीने मरने को तैयार हो जाते थे।

पंडितजी का व्यक्तित्त्व बड़ा आकर्षक है। एक बार जो उनसे मिलता है, उनका हो जाता है। उनके हृदय मे गरीबों के प्रति अपार स्नेह व सहानुभूति है। कहीं दंगा फिसाद हो या दुर्घटना हो तो पंडित् जी अपनी जान को जोखम में डालकर दौडकर वहां पहुंच जाते हैं और जहां तक बन पडे गरीबों को हर प्रकार से सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करते रहते हैं। गरीबों की पुकार को शासन के सामने लाना वह अपना धर्म समझते हैं।

पंडितजी ने अपना जीवन आर्य समाज को अर्पण किया है। उन्होंने ससारिक सुखों का त्याग किया और विवाह नहीं किया। आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत्त को धारण किया। वह सन्यासी न होते हुए भी सन्यासवृत्ति से सादा जीवन व्यतीत करते हैं। सदा खादी के स्वच्छ श्वेत वस्त्र व श्वेत टोपी परिधान करते हैं।

पंडितजी में अदुभुत संघटन शक्ति है। उन्होंने दक्षिण भारत में न केवल आर्यसमाजों का संगठन किया वरन हैदराबाद शहर कांग्रेस कमेटी एवं हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष होने के नाते मार्गदर्शन भी किया है। हैदराबाद की ऐसी कोई सार्वजनिक संस्था नहीं है जिसका उनसे सम्बन्ध न हो।

बडे-बडे अखिल भारतीय समारोह जैसे आर्य सम्मेलन, हिन्दी सम्मेलन, कांग्रेस अधिवेशन का शहर मे संचालन उन्होंने जिस खूबी से किया है, उसे कोई नहीं भूल सकता।

हैदराबाद में जितने भी आन्दोलन हुए उनमें पंडितजी सबसे आगे रहे हैं। आर्य समाज आन्दोलन, स्टेट कांग्रेस का आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन गोवध आन्दोलन, यहां तक की तेलंगाना आन्दोलन में भी वह सब से आगे रहे। इस महान् सेनानी की सेवाओं को हैदराबाद की जनता कभी भूल नहीं सकती। पंडित् जी आज ६९ वर्ष की आयु में भी युवकों का हृदय और जोश रखते हैं और हैदराबाद की सार्वजनिक गतिविधियों मे भाग लेते हैं।

ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्व, ऐसा लगनशील, परिश्रमी, कार्यकुशल, दूरदर्शी, व्यवस्था प्रेमी सदाचारी एव धार्मिक व्यक्ति जिसने अपने जीवन की- सम्पूर्ण साधना, समाज एव धर्म के लिए निस्वार्थ भाव से समर्पित कर दी हो, खोजने पर भी मिलना दुर्लभ है। हमारी कामाना है कि पंडित्जी इसी प्रकार जनता का मार्गदर्शन करने के लिए शतायु हो।

— — —

वीर पुत्रों के सहायक

काशीराम

आर्यसमाज के रंगमंच से पंडित् नरेन्द्रजी के वेद प्रचार ने वीर पुत्रों में भी धर्म के प्रति आस्था एवं जागृति उत्पन्न की। मैं और मेरे साथी विद्यार्थी उन दिनों बड़े उत्साह के साथ उनके भाषण सुनते थे। पंडित्जी नगर कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। वास्तव में आप और स्वामी रामानन्द जी तीर्थ स्टेट कांग्रेस के प्राण माने जाते थे। तब कई समारोहों मे पंडित् जी से मिलने के अवसर मिले फिर आदिम जाति सेवा संघ में जिसके पंडित् नरेन्द्र जी उपाध्यक्ष थे कार्य करने का सुअवसर मिला। उस समय पाड्दी जाति को जो वीर. पुत्र कहलाते हैं आदिम जाति में सदस्यता दी गयी थी।

आर्य समाज सुलतान बाजार के चुनाव की एक घटना याद आती है। पंडित् जी उन दिनों आर्य समाज मध्य दक्षिण के प्रधान थे। सुलतान बाजार समाज के स्थानीय वार्षिक चुनाव में पंडित् जी के समर्थक ग्रूप के विरुद्ध मुझे मंत्री बनने पर मजबूर किया गया। विरुद्ध ग्रुप के अध्यक्ष कैपटन् सूर्य प्रताप जी चुने गये थे। तब ग्रुपबाजी की तनातनी में मैंने देखा और मेरे साथियों ने भी महसूस किया कि पंडित् जी में ईर्षा या शत्रुता का कोई भाव नहीं, स्वभाव मे बडी कोमलता है। अपने विरोधियों से भी प्रेम रखते हैं। यह उनकी मर्यादा की विशेषता है। मै जब नगर निगम के चुनाव में आया. और उपमहापौर बना तब भी मुझको पंडित् जी का आशीर्वाद प्राप्त रहा।

एक बहुत पुरानी घटना की याद आती है पोलिस एकशन से पूर्व रजाकारों का आन्दोलन जोरों पर था; पंडितजी जेल में थे। नगर में हैज़ा भयंकर फूट पड़ा; इसी के कारण उनके बड़े भाई राजेन्द्र प्रसाद जा की मृत्यु हो गयी। तीन दिन बाद उन्हे पेरोल पर रिहा किया गया था। उस दिन उनके भाई की अस्थियों के चुनने का दिन था मैंने देखा कि पंडित जी पोलिस के एक अवंटी के साथ शमशान वाटिका की ओर चले आ रहे हैं। वही स्वाभाविक साहस और शान्त स्वभाव। नगर में उन दिनों सरकार की ओर से सैंकडों महाजर लाकर बसाये गये थे। भोजन की दुर्व्यवस्था व विकटता के कारण अचानक हैज़ा फूट पडा था। उस समय की पडितजी की सेवाओं को हैदराबादवासी कदापि नहीं भूल सकते।

मंत्री, वीर पुत्र हिन्दी विद्यालय
पुराना पुल, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

— ० ० —

सम्पदा के स्त्रोत "पं० नरेन्द्र"

—पं० कर्मवीर शास्त्री, एम०,ए०,

इस विश्व में जितनी भी अलौकिक एवं लुभावनी सम्पदाएं दृष्टिगोचर होती है उन सभी का मुख्य स्त्रोत, परम चेतन प्रभु हैं। अथर्ववेद मे बहुत सुन्दर वर्णन आया है-"उत्सो देव हिरण्य:" अर्थात् प्रभो! तू सम्पत्ति का स्त्रोत है, झरना है। इस कारण संसार का संपूर्ण आकर्षण उस परम पिता परमात्मा के बदौलत ही है। इसी प्रकार उसके लघु भ्राता जीव भी शक्तियों का अजस्त्र स्त्रोता है। इस चेतन जीव के कारण ससार के बडे-बडे स्मरणीय परिवर्तन होते हैं, क्या विचित्र एव अथाह शक्ति छिपी है, इस चेतन तत्व (आत्मा) में ? और इस अलौकिक सत्यता के दर्शन होते हैं, महापुरुषों के जीवन में। श्रद्धेय पं० नरेन्द्र के लघु देह में छिपी अपार कर्तव्य शक्ति को देखकर तो एक बारगी मनुष्य स्तब्ध रह जाता है, जहां कही

विशाल सम्मेलनों का प्रबन्ध करना हो, वहां अहर्निश इनकी कार्यशक्ति को देखकर बडे दमखल वाले युवक भी हैरान रह जाते हैं, शायद अधिक प्रयोग से तो मशीने भी घिस कर टूट जाती हैं, परन्तु उस से भी अधिक तीव्रता से सारे प्रबन्ध को सुचारू रूप से चलाना यही तो आपकी विशेषता है, शताब्दी के उपलक्ष्य में अब तक किये गये सम्मेलन उपरोक्त तथ्य को भली भांति सिद्ध करते हैं।

हमारे शास्त्रकारों ने "समः सर्वेणु भूतेषु" के शब्दों में मानवता की बुलन्दी का बखान किया है, इसका मूर्त रूप मुझें तो सर्वाधिक पं० नरेन्द्र जी के जीवन में देखने को मिला, आर्य समाज के छोटे से छोटे कार्यकर्ता से अथवा अपरिचित व्यक्ति से अथवा आर्यसमाज क्या है ऐसी जिज्ञासा लेकर आये हुए जिज्ञासु व्यक्ति से भी आप जितना मधुर, उत्तम तथा आकर्षक व्यवहार करते है जो यह बहुत कम लोगों मे पाया जाता है। आप से यदि कोई प्रथम बार भी मिलता है तो वार्तालाप मे यह अनुभव किये बिना नहीं रहेगा कि वह कितने वर्षों की घनिष्ट व्यक्तित्व की छाया में बैठा है। आप के इसी उत्कृष्ट व्यवहार से एक बड़ा भारी कर्मठ युवा वर्ग आप को प्राप्त है और इसी कारण आप को युवक हृदय सम्राट कहना सर्वथा उचित है।

फूल वहीं होते है, परन्तु माली को विशेषता यह है कि उन्हों से पृथक-पृथक गुलदस्ते बनाता है, किस फूल को कहां लगाने से सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है, यही माली की विशेषता है, श्रद्धेय पं० नरेन्द्रजी में कार्यकर्ता विद्वान् एवं धनिक रूपी फूलों को यथोचित स्थान पर आयोजित कर समाज निर्माण का गुलदस्ता तैयार करने की लोकोत्तर प्रतिभा है, मुझे स्मरण आता है कि १९६८ में दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिस्सार (हरियाणा राज्य) स्नातक बन कर घर के कार्य मे लग गया था। किन्हीं सूत्रों से मेरी उपस्थिति को पडितजी को ज्ञात हुआ, उनका पत्र मिला हिन्दी प्रचार करो, और समय पाकर वेद सप्ताह (श्रावणी पर्व) का कार्यक्रम पत्र मिला। "तथाऽस्तु" कहकर कार्यक्रम पर गया, उसी वेद सप्ताह प्रचार के दौरान श्यामवंशी भाई की जन्म स्थली हल्लीखेड़ा (कर्नाटक) मे कार्यक्रम हुआ लोगों में बड़ा उत्साह था, सम्मेलन प्रेरणा की। उन्होने पू० पडितजी को लिखा और वहां पर १७ दिन का वेद पारायण यज्ञ तथा एक बडा सुन्दर सम्मेलन सम्पन्न हुआ, सभी प्रबन्ध पर पू० पंडितजी की तीखी आंखे थी,

परन्तु श्रेय मुझे दे रहे थे। मैंने समझ लिया- "तुझे कार्य करने की प्रेरणा दे रहे हैं" तथा कुछ सिखा रहे हैं" तब से आज तक मेरे ऊपर पिता से भी अधिक छत्र-छाया है। मराठी वांगमय में बहुत बडी प्रसिद्ध लोकोक्ति है और वह यह है-" साधी रहणी उच्च विचार सरणी" यह उक्ति पू० पडितजी के जीवन में पूर्णतः चरितार्थ है। जून १९७२ की घटना है। कैन्सर रोग से मेरे चाचा को लेकर में हैदराबाद पहुंचा कुछ दिन निवास हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा के अतिथि भवन कक्ष में रहना पडा। जैसे ही हम सभा में सायकाल पहुंचे, रिम-झिम वर्षा हो रही थी, इतने में पंडितजी देखकर मुझे अपने पास बुलाये और कहने लगे कि आपके वृद्ध चाचा को नीचे ऊपर चढने उतरने से कष्ट होगा अतः आप नीचे के अतिथि भवन कक्ष में रहे "मै दूसरे स्थान पर रहता हूं-इतना कहना था कि अपना एक बैग और बिस्तर उठाकर सभा के बरामदे में बिस्तर लगाये और हम जब तक रहे तब तक वे बरामदे में ही रहे। सचमुच पं० नरेन्द्रजी का जीवन कुछ निराला ही है-'शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृत भोजनम्' यही आप के जीवन का सार रहा है, और है।

यह सारी घटना मैं अपने चाचा, भाई व भाभी को वहीं पर सुनाया, वे सुन कर आश्चर्यचकित रह गये, इतने बडे महापुरुष हमारे लिए बरामदे में रहते हैं। उन पर आर्य समाज का और भी गहरा प्रभाव पडा। और घण्टों बैठ कर पू० पडितजी से शंका समाधान कर लेते थे। इस घटना के परिणाम-स्वरूप आज वे अपने दो पोतों को अध्ययनार्थ गुरुकुल मे भेज दिये हैं। यह घटना है तो छोटी परन्तु गम्भीरता से देखने पर सादगी एवं उच्च विचार का और कर्मठ जीवन का पता चलता है न जाने ऐसी कितनी घटनाएं पू० पंडितजी के जीवन में घटी होगी, जिसके परिणामस्वरूप हजारों व्यक्तियों के जीवन को मार्ग-दर्शन मिला है, मिल रहा है और भविष्य में भी चिरकाल तक मिलता रहेगा।

कहते हैं कि "दूरतः पूर्वता रम्याः", पर्वत दूर से ही सुन्दर दिखाई देते हैं परन्तु निकट आने पर भद्दे नजर आते हैं, क्योंकि समीपता से उन्हें बारीकी से देख सकते हैं। अधिकांश पुरुषों के सम्बन्ध में भी निकट सम्पर्क होने पर हमारी उनके प्रति पूर्व निश्चित धारणा बदल जाया करती है परन्तु मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हू कि पं० नरेन्द्रजी इसके सवथा

अपवाद है, वर्षों तक उनके निकट रहने पर भी पूर्व निश्चित धारणा नही बदलती अपितु उनके व्यवहार से वह और पुष्ट होती जाती है, यह क्या जादू है मेरे विचार से पंडितजी के अन्दर प्रेम, न्याय, अधीनता, लक्ष्य के प्रति स्थिरता, कार्यदक्षता, अन्याय विरोध तथा साहस आदि जो गुण हं हमें पदे-पदे दृष्टिगोचर होते हैं। वास्तव में पं० नरेन्द्रजी मानवीय सम्पदा के गुणों के सागर है। यथा नाम तथा गुण हैं प्यारे प्रभु ने इस छोटी सी हस्ती में गागर में सागर भर दिया है। उन के निकट सम्पर्क मे आने वाला व्यक्ति इन गुणों के जाल में अनायास ही जकड़ जाता है, मैं जब कभी भी मिलता हूं तो किसी लघुता गुरुता का विचार किये बिना सम स्थिति में बातचीत करते हैं, यहां तक कि खुलकर हास-परिहास भी करते हैं, जिससे अगला अपनी लघुता और उनकी गुरुता को भूलकर उन से एकाकार हो जाता है, यह गुण करोडों में से किसी एक में मिलता है, और जिस में होता है वही सच्चे अर्थों में महापुरुष होता है, इस कारण प० नरेन्द्रजी यथार्थ में एक महानुभाव है और संसार में ऐसे व्यक्ति ही पूजे जाते हैं, किसी ने कहा भी है-"अदीनोऽक्रोधनोऽलुब्धस्तस्मात् सर्वत्र पूजितः" अर्थात दैन्य, क्रोध और लोभ को छोडने वाला सब जगह पूजा जाता है।

श्रद्धेय पं० नरेन्द्रजी ने जब से होश सम्भाला है तब से अपने जीवन को एक कर्मयोगी के रूप में प्रस्तुत करते आये हैं। कवि के शब्द मानों आप के जीवन में साकार रूप दिखा देते हैं।-

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिः चिरं गेहिनी,
सत्यं सूनरय-दया च भगिनी भ्राता मनः सयमः।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृत भोजनम्,
एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्मात् भयं योगिनः॥

आर्य समाज, नयाबांस
दिल्ली

—००—

हैदराबाद सत्याग्रह-संग्राम का एक अद्भुत रहनुमा

पण्डित नरेन्द्र

पद्मभूषण–डा. दुखनराम

देश जाति एव धर्म की विपन्नावस्था से उद्विग्न हो, ७ अप्रील, १८८५ ई० में पूज्यपाद स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपने गुरुदेव श्री विरजानन्द जी के आदेशानुसार संसार में वेदों के दिव्य संदेश के प्रचार प्रसार हेतू आर्य समाज की स्थापना की थी। तब से अब तक एक शताब्दी की इस अवधि में न जाने कितने राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि अनेक झंझावातों का सामना करते हुए समाज आज एक विशाल क्रान्तिकारी संस्था के रूप में खड़ा हो सका है। आज सार्वदेशिक सभा दिल्ली से देश विदेश के अनगिनत आर्य संस्थायें सम्बन्ध हैं और वैदिक धर्म एवं वैदिक संस्कृति के प्रचार में संलग्न है। इस लम्बी अवधि में समाज को पल्लवित, पुष्पित और फलित करने में भारत माता को अपने कितने लाड़लों से हाथ धोना पड़ा। कहना कठिन है किन्तु, यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हमारे कर्म, निर्भिक त्यागी और यशस्वी बलिदानियों की लम्बी परम्परा का सद्परिणाम स्वरूप आर्य समाज के इस विराट स्वरूप का दर्शन हो रहा है। महर्षि दयानन्द, पं० लेखराम, पं० तुलसी राम, अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द, पं० नाथूराम आदि से लेकर अब तक शहीदों की इतनी बडी कतार बन चुकी है, जिसका एक लम्बा इतिहास ही वर्णन कर सकता है। इस भांति आर्य समाज का इतिहास त्याग और बलिदान का इतिहास है, चतुर्दिक संघर्ष के मध्य यह समाज इतना अग्रसर हो सका है, यह आर्य जगत के लिये कम गौरव की बात नहीं है।

आर्य समाज के गौरवमय इतिहास में हैदराबाद रियासत का सत्याग्रह संग्राम अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह संघर्ष इसके इतिहास का सबसे बड़ा और कठिन संघर्ष था। ९० प्रतिशत हिन्दू जनता का शासक मुसलमान

था, जों मुल्लों और मौलवियों के हाथ का कठपुतला बन कर इस विशाल जन-समूह पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार के चक्र चला रहा था। हैदराबाद के निजाम ने अपने दुष्कृत्यों के सहारे रियासत से आर्य धर्म और हिन्दुत्व को मिटाने का मानो बीड़ा उठा लिया था। हिन्दू अपने धार्मिक कृत्यों से वंचित कर दिये गये, उनके वैदिक जीवन के कार्यकलापों पर अंकुश लगाये गये, उनकी संस्कारगत प्रथाओं पर रोक लगाये, तथा जुल्म और प्रलोभन के द्वारा इन्हें इस्लाम धर्म कबूल करने को मजबूर किया जाने लगा। यह वह जमाना था, जब शासन का अंकुश इतना कड़ा था कि प्रजा का मुंह खोलना मौत को आमंत्रित करना था। सत्य भी बगावत समझा जाता था और बगावतियों के सिर तोड़ने के लिये अनेक साधन और उपाय सत्ता के पास मौजूद थे। ऐसी असहाय स्थिति में मुल्ला-मौलवियों की बन आयी थी, इस्लाम प्रचार जोर पकड़ रहा था, परिणामतः १९३१ ई० में वेद धर्म रक्षार्थ हैदराबाद में आर्य समाज की स्थापना हुई। यह समाज अपने स्थापना-काल से ही हिन्दुओं का सन्मार्ग दिखलाकर इस्लाम प्रचार का मार्ग अवरुद्ध करने लगा। यहां तक कि कुछ इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले को पुनः धर्म परिवर्तन करवा कर हिन्दू बनाया गया, फिर तो कहना ही क्या? शासक के कान ऐसे भरे गये कि आर्य समाज को राजद्रोही संस्था समझा जाने लगा और उसके कार्यकलापों पर अंकुश लगाये जाने लगे। स्थिति इतनी दयनीय हो गयी कि प्रचार तो दूर, आर्य समाजियों के लिये अपने धार्मिक कृत्य और साप्ताहिक सत्संग कर सकना भी असंभव हो गया। राज्य की आज्ञा के बिना न मन्दिर बन सकते थे न अग्नि होत्र हो सकते थे, न मंदिरों पर ओ३म् की ध्वाजायें फहरायी जा सकती थीं, वार्षिकोत्सव हो सकता था, न सत्संग या व्याख्यान हो सकते थे। ये ऐसे आदेश थे जो मानव के जन्म सिद्ध अधिकारों पर कुठाराघात करते थे और आश्चर्य यह था कि इन कृत्यों के लिये मांगने पर भी राज्याधिकारी आज्ञा नहीं देते थे। भला ऐसी दुरस्थिति को कोई सच्चा आर्य धर्म का सेवक कैसे सहन कर सकता है? उसके सामने तो वेद के जाज्वल्यमान मंत्र प्रेरणा स्तम्भ की तरह अहर्निश ज्ञान-किरणों को बिखेरते होते हैं। आर्य वीर जानता है—

सूरिरसी वर्चोधा असि तनुपानोंऽसि।
आप्तुहि श्रेयां समवि सम क्राम॥

अर्थात् हे मनुष्य? तनिक अपनी शक्ति कों पहचानों? तूं शत्रु संतापक है, तू वर्चस्वी है, और प्रजाओं के शरीरों का रक्षक है। अतः तू अपने समान प्रतिस्पर्धा से आगे बढ़ और श्रेष्ठतम पद को प्राप्त कर।

वस्तुत: वैसे ही स्वराष्ट्र धर्म के सच्चे पुजारी निकले पं० नरेन्द्रजी। मानो उन्होंने अपने जीवन के लिये उपर्युक्त वेदमन्त्र को लक्ष्य बनाया, अपनी शक्ति को पहचाना, शत्रु संतापक बने, वर्चस्वी तो हैं ही, जिन्होंने वैदिक संपदा और मानवता की रक्षा करते हुए अपनें समान प्रतिस्पर्धी निज़ाम से आगे निकल कर एक श्रेष्ठतम आर्य धुरीण का पद पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।

सन् १९३८-३९ ई० के वे दिन मेरी आंखों के सामने है, जब हैदराबाद का सत्याग्रह आन्दोलन जीवन मरण का आन्दोलन बनकर हर आर्य समाजी को शहीद बनने के लिये आमंत्रित कर रहा था। प्रत्येक आर्य समाजी के अन्त:करण में वहां की घटनायें तूफान पैदा कर रही थी, और वे बलिदानी भावना से अंगड़ाई लेकर उस अहिंसक संग्राम में जुट जाने को मचल रहे थे। वे कातिलाना जुल्म के सामने घुटना टेकने वाले नहीं थे। वे तो अपने सिर पर कफन बांधकर उसकी बाजुओं के जोर को देखना चाहते थे।

सरफरोशी का तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है॥

सारे राष्ट्र में बलिदानी आर्य वीरों को संगठित किया जा रहा था। दल के दल आर्य वीर जुल्म से टकराने के लिये हैदराबाद पहुंच रहे थे। हैदराबाद की रियासत भी कठोर ज़ुल्मों के द्वारा उनके स्वागत में पीछे नहीं थी। सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया जा रहा था, जेलों में अमानुषिक यतनायें दी जा रही थी-न दाने का ठिकाना, न पीने का ठिकाना, ऊपर से मार-पीट और कठिन श्रम लेने की व्यवस्था, न जाने कितने लोगों का जीवन बेकार कर दिया गया, कितने लोग इस पुनीत कार्य में अपना शरीर त्याग दिये। किन्तु इस भयानक अत्याचार से आर्य वीरों के आगमन का वेग रुका नहीं। जैसे तूफानी वेग सामने के चट्टानों को परवाह किये बगैर उफनता, दहाड़ता, किनारों से टकराता, सामने पडने वाली शिलाओं को चूर-चूर करता क्षण-क्षण आगे बढ़ता जाता है। वैसे ही तूफान की भांति भारत के कोने-कोने से ये दल आ आकर रियासत के ज़ुल्मों की परीक्षा ले रहे थे, आखिर उनके जेल भर गये, उनके कातिलाने हाथ का जोर खत्म हो गये। तूफान के सामने अपनी छोटी हस्ती का एहसास हो गया, और छ: वर्षों के पत्राचार को ठुकराने वाली रियासती महीनों तक ज़ुल्म का चक्र चला कर हतप्रभ होकर बैठ गयी। आर्य समाज

की विजय पताका पुनः फहरा उठी, हिन्दू धर्म बच गया, प्रजा को मानवीय जन्म सिद्ध अधिकार मिल गये।

इस घटना चक्रों के साथ ही महर्षि दयानन्द के मानस पुत्र श्री पं० नरेन्द्रजी की सौम्य मूर्ति मेरी आंखों से कभी ओझल नहीं होती है। रियासत के अन्दर आर्य समाज की स्थापना, आर्यजनों को जागृत करना, धर्म के लिये बलिदान होने की प्रेरणा देना, तथा सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व करना ऐसे साहसी, विलक्षण, प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति से ही सम्भव था। आन्दोलन की सफलता दरअसल नेतृत्व की क्षमता पर निर्भर करती है, और उस अहिंसक आन्दोलन को ऐसा निर्भिक नेतृत्व मिला जिसने जेल को न केवल भयंकर यातनायें सही बल्कि जिसके कई अग सदा के लिये मार खा-खा कर नितान्त दुर्बल हो गये, फिर भी यह उनके ही बलबूते की बात थी कि हजारों हजार सत्याग्रहियों के लिये समुचित व्यवस्था करने में हैदराबाद का आर्य समाज सफल हुआ।

पं० नरेन्द्रजी के व्यक्तित्व को देखकर मुझे यजुर्वेद का मत्र स्मरण हो आता है।

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
अग्ना वः सन्तु बाहवोअना धृष्या यथासथ॥

अर्थात् हे वीर नेता पुरुषों आगे बढो, विजय प्राप्त करो। ईश्वर का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम्हारी भुजायें शक्तिशाली हों, जिससे तुम लोग शत्रु से कभी परास्त न हो सको।

सचमुच उनके जीव-क्रम को देखते हुए कहा जा सकता है कि उनके साथ इस मंत्र की भावना का शत-प्रतिशत उपयोग हुआ है। जीना उसी का सार्थक होता है, जिसने निज जाति और निज राष्ट्र तथा मानवता के लिये कुछ किया है। जीवन एक पर्वतारोहण है, कठिन से कठिन श्रृंखलायें बाधक रूप में सामने आती हैं, पर उच्चतम शिखर पर पहुंचने वाला ही जीवन का यथार्थ आनन्द प्रप्त करता है। एक अंग्रेज कवि ने कहा भी है: ....

Life is an uphill journey
And at the top lies glory.

परन्तु ऐसे दुर्गम मार्गों में अधिकतर यात्री हार मानकर बठ जाते हैं, और

जो हिम्मत करता है, बाजी मार जाता है। किसी उर्दू शायर ने ठीक कहा है ....

कदम रहता है साबित जिनका इस सख्तिये दौरा में।
बहादुर हैं वही जो सर किलाये फौलाद करते हैं।।

श्री पंडितजी के सफल जीवन पर हर आर्य जन को गर्व हो सकता है। उनका सम्मान करना, मानवता का सम्मान करना है। मैं भी श्रद्धा के दो पुष्प अर्पित करते हुए, परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि पण्डितजी दीर्घायु हों तथा न्याय हेतु सदा तत्पर रह कर आर्य जगत के विकास-विस्तार और-कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम-इस वैदिक प्रेरणा के व्यापक प्रचार प्रसार में अपना योगदान करते रहें।

एग्जिबीशन रोड,
पटना—१

— ० ० —

पारस स्वरूप पंडितजी

तेजनारायण जयस्वाल

तीन दशक पहले की बात है जब मैं लगभग सात वर्ष का था तब से मैंने पंडित् जी को आर्य समाज के विशाल मंच पर भाषण करते हुए देखा था। मैं आर्य समाज के चन्दे के लिए एक छोटी सी रकम लेकर मंच पर गया और पंडितजी मुझे गोद में उठा लिया था। यह मेरा पंडितजी से पहला अनजान सम्पर्क था। मेरा घर आर्य समाज सुलतान बाज़ार के सामने गलि में केवल पच्चीस गज़ पर होने के नाते मैं यदा कदा पंडितजी को देखता रहता था। कांग्रेस और आर्य समाज के सम्बन्ध में उनकी सरगर्मी की झलक देखता रहता था। दशहरा और होली जुलूस के समय पंडितजी की व्यवस्था औ उत्साह देखकर जनता में उमंग जागती थी। इसी लिए आपको नवयुवक हृदय सम्राट कहा जाता है।

सन् १९४९ में मुझे पंडितजी के बहुत निकट आने का अवसर मिला। उस समय से आज तक मैंने यह अनुभव किया कि पंडितजी से परिचित हर

व्यक्ति संकट के समय सबसे पहले पंडितजी को याद करता है क्योंकि वे बिना किसी भेदभाव के सभी की सहायता करते हैं। छोटे से छोटा व्यक्ति पंडितजी के पास जाने में संकोच अनुभव नहीं कर सकता। वर्ग ही नहीं समय का भी बन्धन नहीं है। दिन और रात के किसी भी भाग में पंडितजी से सम्पर्क स्थापित करने में किसी को संकुचाते हुए नहीं देखा गया। उनके द्वार सदा-सहायता के लिए खुले मिले और वे स्वयं सेवा के लिए तत्पर पाये गये। यही कारण है कि पंडितजी के चाहने वाले हर वर्ग मे है।

पंडितजी का रहन-सहन सीधा-सादा नफासित पसंद हैं। उनका छोटा सा कमरा और साथ का वरांडा जो आर्य समाज सुलतान बाज़ार की ऊपरी मंजिल पर था लगभग दो दशकों तक बहुत ही साफ़ सुथरा और प्रभावशाली रहा। ऐसी सफ़ाई और पाकीज़गी बडे-बडे आलीशान घरों और मिनिस्टरों के यहां भी देखने में कम आती है। पंडितजी उन लोगों में से हैं जिन्होंने कांग्रेस को देश सेवा और स्वतन्त्रता के लिए अपनाया था और जिसके लिए उन्हें जीवन का महगी कीमत चुकानी पडी। पंडितजी ने कांग्रेस से अलग होने के बाद बडे से बडे प्रलोभनों के लिए भी किसी दल को नहीं अपनाया। पंडितजी को किसी ने नेता नहीं बनाया। वे पैदाशी तौर पर नेता हैं और उनके सम्पर्क में आकर नेता बनने वालों की बहुत बडी संख्या है।

पंडितजी का स्वभाव चट्टान की तरह है। परन्तु पंडितजी पारस पत्थर है जिनके सम्पर्क में बिना किसी भेदभाव के लोहा सोना बन जाता है। लोहा सोना बनकर बाज़ार में बिकने के लिए चला जाता है और पारस अपनी जगह पर रह जाता है। पंडितजी के जीवन का गहराई से अध्ययन करने पर पता चलेगा कि वे जहां भी रहे अपने आस-पास के वातावरण को मोहक बना लिया, लोग और संस्थायें उनको बडे से बड़ा काम सौंप कर चैन की नींद सो जाते हैं और पंडितजी अपनी नींद और चैन हराम करके हर काम पूरा करते हैं।

पंडितजी बहुत संकोचा स्वभाव के है। उन्हें कई बार इसी स्वभाव के कारण भूखे रह जाते हुए देखा गया है। वे अपनी पसंद किसी पर नहीं लादते। दूसरों को इच्छा को प्रधानता देते हैं। उनका खान-पान और रहन-सहन का स्टैन्डर्ड बहुत ऊंचा और शालीन है। उन्होंने अपनी सुविधा के-लिए बहुतसी वस्तुए जमा कीं और फिर लोगों में बांट दी। उनके इसी स्वभाव का

लाभ उठाकर लोग उनकी बहुतसी चीजें माग भी लेते हैं। यह बात बहुत मामूली दिखती है परन्तु, उनकी उदारता और वैराग्य भावना का प्रतीक है।

सबसे बडी बात श्री पंडितजी को महानता के शिखर पर पहुंचाती है विद्यार्थियो की सहायता करना। बहाने से अपना खाना खिलाकर और फीसें देकर उन्होंने जिन विद्यार्थियों का सहायता की है वे आज सफलता के शिखर पर हैं और उनकी आत्मा ही इस बात की साक्षी है, क्योंकि आज का व्यक्ति सफलता के लिए जिस सीढी पर पैर रखकर जाता है उसे भूल जाता है फिर भी पंडितजी के एहमानों को मानने वालों की कमी नहीं है। इसी प्रकार कई लोगों की लड़कियों के विवाह के लिए पंडितजी ने आर्थिक सहायता की है। इन सहायताओं का आज के जीवन में बहुत महत्व है। संकट में धन का महत्व मालूम पड़ता है परन्तु पंडितजी ने धन को सदा तुच्छ समझा और आज भी उन्हें उनके पारिश्रमिक के रूप में जो भी मिला उसे लोगों में बांट दिया। आज उनकी सहायता के कारण ही कई घर बस गए हैं। यह उनके जीवन की सबसे बडी कमाई है।

मैं पंडितजी के व्यक्तित्व के इसी एक पहलू से सब से अधिक प्रभावित हुआ हूं कि पंडितजी ने अमीरी का त्याग किया और फकीरी में शाहीपनका सुख अनुभव किया। वे ऐसे पारस हैं जिसके पास रहने से लोहा सोना बन जाता है। इसी महान् गुण के कारण वे जहां भी रहता है उनका महत्व उजागर हो जाता है। आर्य समाज के लिए उनका जीवन समर्पित है परन्तु, उससे भी बढ़कर उनका जीवन मानव मात्र की सेवा के लिए समर्पित है। परमात्मा उन्हें हम सब के सिरपर सलामत रखे और हमें इस योग्य बना सके कि हम उन्हें कम से कम कष्ट दें। ❋

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
"सुषमा निवास", महर्षि दयानन्द मार्ग (सु.बा.) हैदराबाद (आ.प्र.)
अनवरूल उलूम कॉलेज

---o---

त्यागमूर्ति श्री पं. नरेन्द्रजी,

—छगनलाल विजयवर्गीय,

हैदराबाद के इतिहास में जहां निजाम के अत्याचारों का उल्लेख होगा वहां पं० नरेन्द्रजी के त्याग और बलिदानों का उल्लेख अवश्य होगा यह मेरी धारणा है। धर्मान्ध निजाम कट्टर साम्प्रदायिक मनोवृत्ति रखता था और अपने शासन में उसने हिन्दु जो उसके राज्य की बहुसंख्यक रियासत थी उस पर असंख्य, अमानुषिक अत्याचार किए। कई फरमान निकालकर अपने कट्टरपंथी होने के प्रमाण दिए। बहुसंख्यक हिन्दु जनता सदा–सदा के लिए अल्पसंख्यक मुसलमानों के गुलाम बनकर रहे यही निजाम की मनोकामना थी। लेखन और भाषण की स्वतंत्रता भी छीन ली गई थी। धार्मिक कृत्यों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिए गए थे मन्दिर बनाना, यज्ञशाला का निर्माण करना कानूनी जुर्म था। धार्मिक पर्व और शोभायात्रा निकालने पर पाबन्दी थी। कीर्तन, भजन के लिए भी आज्ञा लेना अनिवार्य था। हिन्दी का पढ़ाई और खादी पहनना विद्रोह माना जाता था। भाषण देने से पूर्व लिखित आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती थी। प्रकाशन पर भी इसा प्रकार के प्रि बन्ध थे। हिन्दु जनता, निराश्रित, निस:हाय और निष्क्रिय होकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई थी। किसी मे साहस नही था कि इन अत्याचारों का विरोध करे। आर्य समाज पर भी इन अत्याचारों की प्रतिक्रिया हु । आर्य समाज के नेता और कार्यकर्ताओं ने आवाज उठाई और हिन्दु जाति पर होने वाले अत्याचारो के विरुद्ध संग्राम शरू किया। दूसरी ओर राज्य के अतिरिक्त धर्मान्ध मुसलमान नेता जो अपने को शासक और हिन्दुओं को शासित समझते थे, राज्य के साथ मिलकर इन्होने हिन्दुओं पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। साम्प्रदायिक दंगे करना लुट खसोट करना, बलात धर्म परिवर्तन करना, महिलाओं का जबरदस्ती भगाकर ले जाना और इन सभी कार्यों में सरकार की पूर्ण मदद

रहती थी। सरकार झूटे केस बनवाकर निरपराध हिन्दुओं पर झूटे मुकदमें चलाकर अत्याचार करती रही और अपराधियों को सरकार प्रोत्साहित करती रही। इस काल में नवाब बहादुरयारजंग ने सब लोगों का कार्य बहुत जोर शोर से प्रारम्भ किया। जोर, जुल्म, लोभ, लालच, सरकारी भय बताकर अनगिनत भोले-भाले हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने का कार्य शुरु किया। इस काल में एकमात्र आर्य समाज ही ऐसी संस्था थी जो उपरोक्त अत्याचारों का विरोध करती थी। आर्य समाज को इस अवसर पर पं० नरेन्द्रजी जो गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त कर नगर आए थे इन्होंने धर्मान्ध मुसलमानों को ललकारा और उनकी सारी चुनौतियों को स्वीकार किया। चन्द्रविश्वेश्वर नाम रखकर हिन्दुओं को गुमराह करने वालों की पोल पं० नरेन्द्रजी ने खोली। हिन्दुस माज को सावधान किया। यहां मौलवियों, मुल्लाओं द्वारा हिन्दु धर्म पर हो रहे आक्षेपों का श्री रामचन्द्र जी देहलवी धर्मभिक्षुजी को बुलाकर शास्त्रार्थ करवा कर समुचित उत्तर देकर मुंह बन्द कर दिया।

बहादुरयारजग द्वारा चलाए जा रहे तबलीगी कार्य को पंडितजी ने अपने साथियों सहित उन स्थानों पर पहुंच कर शुद्धी का कार्य प्रारम्भ कर दिय और उनके कार्यों को रोका। बहादुरयारजंग घूमघूम कर भाषणों द्वारा मुसलमानों को भड़कता, वहां हिन्दुओं को आतकित करता था। पंडितजी भी उनहीं स्थानों पर जाकर उनके द्वारा बनाए गए वातावरण को खतम करते थे। पंडितजी के इन कार्यों को देखकर निजाम को हुकूमत परेशान हो गई और धर्मान्ध मुसलमान घबरा गए। पंडितजी के खिलाफ षडयंत्र रचाने शुरू हो गया, पडितजी क जबान पर पाबन्दी लगादी गई। आप को कई बार जेल भेजा गया और जेल में अमानुषिक अत्याचार किए गए किन्तु, सरकार के अत्याचार का गति जिस तेजी से बढती गई उससे कहीं अधिक तेजी से पंडितजी की ख्याति और कार्य आगे बढ़ते गए। गुलबर्गा में आर्य सम्मेलन के अवसर पर अत्याचारी पुलिस अधिकारियों ने पडितजी और उनके साथियों का पुलिस स्टेशन बुलाकर इतनी मारपीट की कि पडितजी मूछित हो गए। पडितजी के पांव की हड्डी तोड दी गई और आप को अपंग कर दिया गया और मरा हुआ समझ कर छोड दिया गया। किन्तु, हिन्दु समाज के सौभाग्य से पंडित जी बच गए। उनके पैर में दूसरी हड्डी बैठानी पडी। वह यातना आज भी पंडितजी को परेशान करती है। नबाब बहदुरयारजग जब

भाषण करते तो मुसलमानों को कहते कि ए मुसलमानों तुम एक बाल केश नरेन्द्र को वश में नहीं कर सकते ।

पंडितजी की सिंह गर्जना से सारे धर्मान्ध मुसलमान और निजाम-शासन घबराता था । राज्य द्वारा पंडितजी पर अत्याचारों की मात्रा बढती गई और एक दिन पंडितजी को मनानूर (निजाम राज्य का कालापानी जेल) भेज दिया गया । यह बात आर्य जगत के लिए असहनीय हो गई । आर्य जगत अपने इस प्यारे साहसी सपूत के साथ इस अत्याचार को सहन नहीं सका । केन्द्रीय संस्था ने चुनौति दी कि अब निजाम अपने अत्याचार बन्ध करे अन्यथा आर्य जगत अहिंसात्मक सत्याग्रह प्रारम्भ करेगा । निजाम ने बात अनसुनी की और सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और निजाम को आर्य समाज के समक्ष झुकना पड़ा और पंडित नरेन्द्रजी को छोडना पडा ।

बाद में रजाकार दौर आया । कासिमरिजवी के नेतृत्व में फिर अत्याचार प्रारम्भ हुए और इन अयात्चारों का मुकाबला भी पंडितजी ने निर्भयता पूर्वक किया । सरदार पटेल द्वारा हैदराबाद को निजाम शाही शासन से जो पुलिस कार्यवाही की गई उसमें पंडितजी का भी सहयोग रहा । पंडितजी ने अपना जीवन समाज के लिए अर्पण कर दिया । आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर सेवा में लगें हैं ।

पंडितजी कुशल संगठक हैं । आर्य जगत् के सगठन में आपका महान योग रहा है । पंडितजी के मार्गदर्शन में आर्य समाज मध्य दक्षिण के कई सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए, वहां अखिल भारतीय स्तर, अर्द्ध शताब्दी, मथुरा शताब्दी और अब आर्य समाज शताब्दी सफल हो रहा है ।

पंडितजी के हृदय में दीन दुखियों के लिए अगाध प्रेम है । दुखियों के दुख दूर करने मे पंडितजी सदैव आगे रहे । अपने कल की चिन्ता न करते हुए अपना सर्वस्व दीन, दुखियों को लुटाते रहे । आर्य समाज में अब पंडितजी एकमात्र आशा की किरण नजर आती है । समस्त आर्य जगत् की प्रबल इच्छा है कि पंडितजी को हैदराबाद की जनता अपने उद्धारक के रूप में देखती है और पंडित जी सदैव हैदराबाद की जनता में नव-स्फूर्ति का संचार करते रहे हैं ।
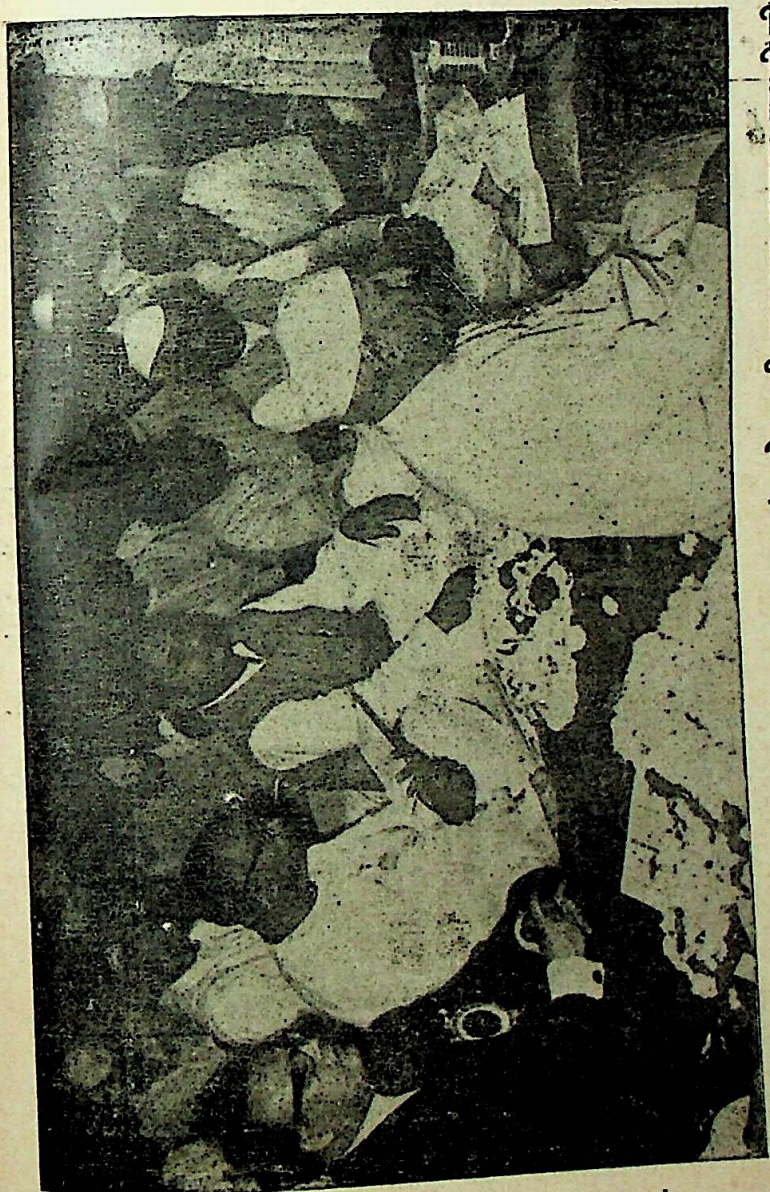
दशम आर्य महासम्मेलन—हैदराबाद के मंच पर पं. नरेन्द्र जी महात्मा आनन्द-स्वामी जी आदि के साथ।
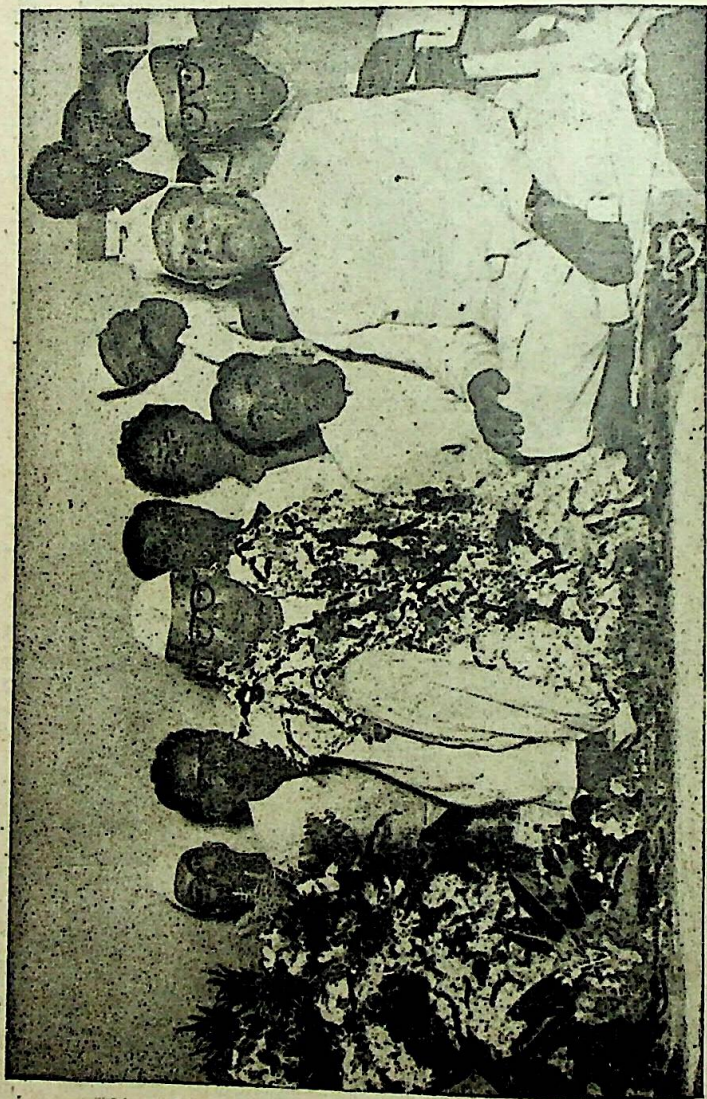
स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर पं. नरेन्द्र जी, स्व. विनायक राव जी विद्यालंकार आदि के साथ

पंडितजी बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा काम करने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं। पडितजी सदव आर्य समाज के और हिन्दुसमाज के विरोध में कही गई बातों का अपने वक्तव्य द्वारा उचित उत्तर देते हैं। आपकी लेखनी में वह शक्ति है कि सामने वाले निरुत्तर हो जाते है। आज आर्य जगत् में पडितजी का स्थान सम्माननीय माना जाता है और आर्य जगत आपसे भविष्य में मार्गदर्शन की आशा लगाए हुए है। हैदराबाद को गौरव है कि निजाम के अत्याचारों का मुकाबला करने वाले रजाकारों से राज्य को बचाने वाले और अन्त में हैदराबाद के उद्धारक के रूप में पंडितजी आज हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

अनन्य हिंदी सेवक : पं. नरेन्द्रजी

–रामविलास मोदाणी

अदम्य उत्साह एवं साहस के धनी पं० नरेन्द्रजी एक कुशल संगठन-कर्ता भी हैं। हैदराबाद राज्य के स्वतंत्रता आन्दोलन एवं आर्य समाज के क्षेत्र में आपने जहां अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं से अपना अलग इतिहास निर्मित किया है, वहां हैदराबाद के हिन्दी जगत को भी आपने ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व सेवाएं प्रदान की है।

राष्ड्र-भाषा हिन्दी की उन्नति और प्रचार-प्रसार से ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। इस सिद्धान्त में अटूट श्रद्धा एवं विश्वास रखने वाले पं० नरेन्द्रजी एक प्रभावशाली वक्ता, लेखक एवं सम्पादक भी हैं। हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, हिन्दी अकादमी, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी विद्यार्थी संघ, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी सम्मेलन आदि संस्थाओं के माध्यम से आपने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य में अपूर्व योगदान दिया है।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष एवं अन्य महत्वपूर्ण पदों पर रहकर आपने राष्ट्र भाषा हिन्दी को घर-घर पहुंचाने, हिन्दी साहित्य की वृद्धि एव हिंदी साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं के साथ आदान-प्रदान, कार्य में भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

सन् १९४९ में संपन्न अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के ३७ वें हैदराबाद अधिवेशन में आप राष्ट्र भाषा परिषद के स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९६६ मे संपन्न हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद के रजत जयंती समारोह के स्वागताध्यक्ष तथा सन् १९६८ में आयोजित आन्ध्र प्रदेश हिंदी सम्मेलन के स्वागत मंत्री के रूप में आपने अपनी कार्यकुशलता एवं संगठन शक्ति का परिचय देते हुए अल्प समय में ही उन्हें सफल बनाने में सहयोग दिया।

आन्ध्र प्रदेश हिंदी विद्यार्थी संघ के संरक्षक एव परामर्शदाता के रूप में हिंदी सम्मेलनों, कवि सम्मेलनों एव हिंदी दिवस समारोह के आयोजनों का हैदराबाद में आरंभ करवाने का श्रेय आपको ही है। राज-भाषा विधेयक के विरोध में जन-मानस को तैयार करने में भी आप अग्रणी रहे।

आर्य समाज द्वारा सन् १९५६-५७ में सच्चर फार्मूले के विरोध में पंजाब में चलाए गये हिन्दी आन्दोलन के आप ही सयोजक थे। इस में भाग लेने के लिए देश भर से सत्याग्रही जत्थे भेजे गये थे। सन् १९५८ में तृतीय अंग्रेजी भाषा सम्मेलन हैदराबाद के विरोध में जो आन्दोलन चलाया गया, उसके आप ही मुख्य परामर्शदाता थे। इस आन्दोलन के फलस्वरूप स्व० चक्रवर्ति राजगोपालाचार्य जी द्वारा उद्घाटित यह सम्मेलन संपन्न भी न हो सका और अंग्रेजी को सविधान के आठवें शेड्यूल के अंतर्गत देश की १५ राजभाषाओं में सम्मिलित कराने के लिए चलाया गया अखिल भारतीय आन्दोलन ठप्प होकर रह गया।

आन्ध्र प्रदेश सरकार के जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित आन्ध्र प्रदेश मासिक पत्रिका को अंग्रेजी, उर्दू एवं तेलुगु के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रकाशित करवाने के लिए जो समिति गठित की गई थी उसके प्रमुख सदस्य के रूप में आपने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप आन्ध्र प्रदेश सरकार को 'आन्ध्र प्रदेश' मासिक को हिन्दी में भी प्रकाशित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। हैदराबाद नगर में केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की

स्थापना की मांग को लेकर जब-जब भी अधिकारियों के सम्मुख प्रतिनिधित्व किया गया उसमें आपका पूर्ण समर्थन एवं सक्रिय सहयोग प्राप्त रहा।

सन् १९६१ एवं सन् १९७१ की जनगणना के समय हैदराबाद निवासी समस्त उत्तर भारतीय लोगों से मातृ भाषा के कालम में केवल हिन्दी मातृ-भाषा लिखवाई जाय तथा जिनकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं हैं वे द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी ही लिखवाए, इस विषयक आन्दोलन में भी आपने स्थान-स्थान पर जन सभाओं को सबोधित कर जन साधारण को प्रशिक्षित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-दक्षिण तथा विद्यार्य सभा के अंतर्गत पुस्तकालयों एवं वाचनालयों की स्थापना में सहयोग देकर हिन्दी के पाठकों की वृद्धि का कार्य किया। साथ ही प्राच्य महाविद्यालय, केशव-स्मारक विद्यालय तथा अन्य हिन्दी माध्यम की शिक्षण सस्थाओं की स्थापना, संचालन एवं उन्नति में योग देकर हिन्दी शिक्षा कार्य को आगे बढ़ाया।

हैदराबाद के आर्यों को साधना और संघर्ष, के लेखक एवं आर्य जीवन पत्रिका के प्रधान सम्पादक पं० नरेन्दजी का नगर की लगभग सभी प्रमुख हिन्दी संस्थाओं एवं प्रवृत्तियों से संबंध रहा है। जिनके माध्यम से आपने राष्ट्र-भाषा हिन्दी की उन्नति में प्रमुख सहयोगी बनकर अनन्य हिन्दी सेवा का गौरव प्राप्त किया है।

आशा है अन्य हिन्दी सेवी सज्जन भी आपकी हिन्दी निष्ठा से प्रेरणा ग्रहण कर राष्ट्र भाषा हिंदी की श्री वृद्धि में इसी तरह सहायक होंगे।

चप्पल बाजार, हैदराबाद

लोकोत्तर

'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ।।'

बाहर कठोर भीतर मृणाल यह रूप बडों का होता है ।
हो वज्ररूप बाहर उनका अन्तस्थ दयामय होता है ।।
है रीत जगत की ही ऐसी लोकोत्तर कब जाने जाते ?
बाहर का रूप सभी जाने अन्तस की थाह नहीं पाते ।।
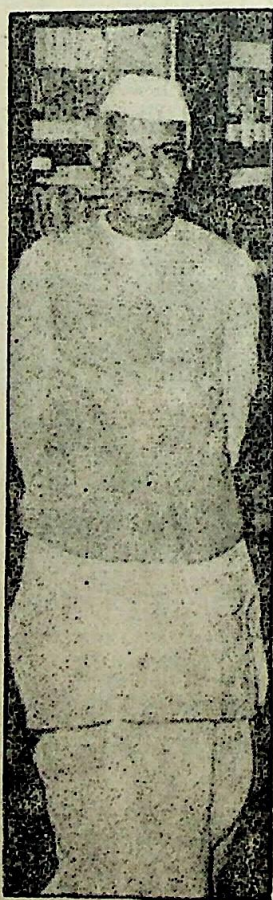
आत्मजयी

वामन-काय उदार – हृदय
उत्साह – अगाध – निकुंजन ।
कार्यकुशल – नीतिज्ञ–विवेक –
विचारवान जन – रंजन ।।

पाप-कुटिल–अन्याय–पाशविक–
अत्याचार – प्रभंजन ।
सत्य – सनातन – आर्य–धर्म–
आमोदित – क्रम–अनुरंजन ।।

धर्म – कर्म – कर्त्तव्य–परायण
सेवा – कार्य – निमज्जन ।
साहस – धैर्य अदम्य–शौर्य–
अम्लान–कीर्ति हित–सज्जन ।।

आशापुंज अपूर्व प्रेरणा-स्रोत
अचेतन – जन – जन ।

स्नेहासिक्त नयन नित तत्पर
करने को नीराजन ॥

दीन–हीन असहाय–अज्ञ का
शत आश्रुत आक्रन्दन ।

दीपशिखा बन प्रकटित भुवितल
लक्ष–कोटि आनन्दन ॥

राम – रूप प्रतिभा – अनूप
आह्लादित 'केशव'–नन्दन ।

क्षमा – दया – दाक्षिण्य – धाम
हे आत्मजयी जग – वन्दन ॥

– विजयवीर विद्यालंकार
प्राच्य महाविद्यालय, नारायण गुडा,
हैदराबाद – आ. प्र.
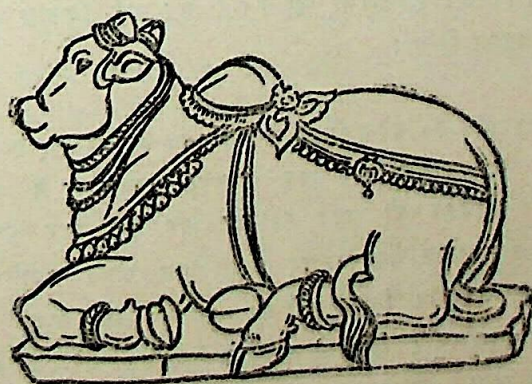
आदर्श पुरुष : पं. नरेन्द्रजी

—सत्यनारायण गुप्त

श्वेत वसन के पोशाक में भारतीय सभ्यता के प्रतीक, विशाल कंधों पर स्वाभिमान से भरा गोल चेहरा, स्वदेशाभिमान से फूली छाती और निष्काम सेवा-भाव की प्रबल उत्कण्ठा से गर्वोन्नत ललाट एक ऐसी मूर्ति सामने प्रस्तुत करता है जिसने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। जिसकी भावना और कामना के पीछे निहित सामाजिक उत्थान ही जीवन का लक्ष्य रहा है। ऐसे प्रखर व्यक्तित्व के धनी आदर्श पुरुष पं० नरेन्द्रजी एक कर्मयोगी साधक की भाँति निरन्तर कर्म को प्रधानता देते रहे।

वे सदैव कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते रहे। एक ओर उन्होंने निज़ाम के निरंकुश शासन से जीवन की बाजी लगा कर सामना किया और उसके द्वारा किए गए अनेक अत्याचारों, अन्यायों के विरुद्ध न केवल आवाज बुलन्द की, अपितु जनता में नवजाग्रति उत्पन्न कर निजाम के शासन को समाप्त करने में बहुत बड़ा योगदान दिया तो दूसरी ओर उन्होंने जनता में आत्मनिर्भरता व आत्म-बल, का संचार कर उन्हें विकास और प्रगति के मार्ग पर अग्रसर किया।

आदरणीय पं॰ नरेन्द्रजी का मेरा परिचय लगभग २५ वर्षों से रहा है। विद्यार्थियों और नवयुवकों से वे बहुत ही स्नेह तथा प्यार से व्यवहार करते हैं। हमारे निवेदन को सहर्ष स्वीकार कर एक बार राष्ट्रीय हिन्दी वाचनालय-पुस्तकालय, चेलापुरा पर ध्वजारोहण करने पधारे थे। यहीं से उनसे मिलने का और निकट आने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। इसके पश्चात तो अनेकों बार हिन्दी के कार्यों के लिए पं॰ नरेन्द्रजी से मार्ग-दर्शन प्राप्त होता रहा। आन्ध्र प्रदेश हिन्दी विद्यार्थी-संघ के वे संरक्षक तथा

परामर्शदाता कई वर्षों तक रहे। संघ की प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए पंडितजी तन, मन, धन से सदैव सहयोग देते रहे। उन्हींके बहुमूल्य परामर्श पर हिन्दी की अनेक समस्याओं को सुलझाया गया।

केन्द्रीय सरकार में जिस समय डा० बी० गोपाल रेड्डी, सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे, उस समय उन्होंने आकाश वाणी' के लिए एक नीति अपनाई थी कि 'हिन्दी का सरलीकरण' किया जाय। इस सरलीकरण के नाम पर भाषा का स्वरूप ही विकृत किया जा रहा था। उस समय हैदराबाद नगर से भी आन्ध्र प्रदेश हिन्दी विद्यार्थी-संघ के तत्वाधान मे पंडितजी के निर्देश पर कड़ा विरोध प्रकट किया गया। अन्तमें जनता की भावनाओं की विजय हुई।

सन् १९६० तथा १९६५ में 'राजभाषा विधेयक' का बहुत ही जोरदार शब्दोंमें विरोध किया गया। १९६७ में आन्ध्र प्रदेश हिन्दी सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। उस समय ससद के पितामह डा० सेठ गोविन्ददास हैदराबाद पधारे थे, सम्मेलन उनकी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। पंडितजी उसके स्वागत मंत्री थे और मैं इस सम्मेलन का स्वागत संयुक्त मंत्री था। पूरे संम्मेलन की रूप-रेखा स्वयं पंडितजी ने बनाई थी और इस कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न करवाने में उनका बहुत बड़ा योगदान था।

जन-सम्पर्क में विभाग के द्वारा हिंदी भी 'आन्ध्र प्रदेश' का प्रकाशन, उस्मानिया विश्व विद्यालय में बी. ओ. एल, में एम. ओ. एल परीक्षाओं का सचालन, हिन्दी, तेलुगु और उर्दू माध्यम द्वारा 'उस्मानिया मेट्रिक' परीक्षा का आरम्भ, करवाने में हिन्दी विद्यार्थी संघ को आपने न केवल समर्थन किया अपितु सक्रिय योगदान भी दिया। दक्षिण में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे।

हिन्दी दिवस, राजेन्द्र जयन्ती, प्रेमचन्द दिवस, कवि सम्मेलन, साहित्यकारों आदि के स्वागत समारोह, हिन्दी विद्यार्थी सम्मेलनों आदि के आयोजन में आप हमेशा आगे रहकर, हम लोगों को प्रोत्साहित करते रहे और अर्थ तक की व्यवस्था वे स्वयं करते थे।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के अध्यक्ष के नाते भी उन्होंने हिन्दी की बहुत बडी सेवा की है। जब भी 'दक्षिण भारत में हिन्दी' का इतिहास लिखा जाएगा पं० नरेन्द्रजी का उल्लेख स्वर्णाक्षरों में आदर के साथ अंकित किया जाएगा।

परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना है कि पं० नरेन्द्रजी को स्वस्थ जीवन तथा दीर्घायु प्रदान करे। जिससे समाज और राष्ट्र को उनका यशस्वी नेतृत्व प्राप्त होता रहे।

चेलापुरा, हैदराबाद-२
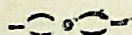
-○•○-

पं. नरेन्द्रजी - एक संघर्षमय जीवन

—मुनीन्द्र

सूर्य के ताप और प्रताप का पूरा और सही अनुभव वही बता सकता है, जिसने उदय से अस्त तक की उसकी पूरी यात्रा का प्रत्यक्ष दर्शन किया हो। वैसे ही किसी कर्मवीर व्यक्तित्व की पूरी झाँकी वही प्रस्तुत कर सकता है जो उसकी पूरी जीवन-यात्रा का प्रत्यक्ष द्रष्टा ही नहीं, सहभागी भी रहा हो।

पं० नरेन्द्रजी को जानने और उनके बारे में सुनने का अवसर मुझे सन १९५० के बाद ही मिला, जब वे अपने दौर का मध्यान्ह पार कर चुके थे। युवाकाल में उनके संघर्ष की सफल परिणति भारत में हैदराबाद रियासत के विलय के रूप में हो चुकी थी। साम्प्रदायिकता और प्रशासन का जो गठबन्धन निजाम के शासन-काल में था, वह समाप्त हो चुका था। सामने दुश्मन की चुनौती हो तो पराक्रम सिर पर चढ़कर बोलता है। संघर्षशील जीवन को जब सफलता मिल जाती है, तो स्वभावतया वह विश्राम और भोग की तरफ झुकता है। लेकिन संघर्ष जिसके जीवन का धर्म बन गया हो, वह संघर्ष के कार्य के नये अंश चुन लेता है।

प्रत्यक्ष सम्पर्क के पूर्व में विभिन्न स्रोतों से, जिनमें उनके परप प्रशंसक और कट्टर विरोधी भी हैं, नरेन्द्रजी, की शौर्य गाथा, सुन चुका था। तब वे आर्यसमाज की ओर से कोई साप्ताहिक पत्रिका निकालते थे। और मैं कमर्शियल प्रिंटिंग प्रेस का काम देखता था। पत्रिका का काम विनयकुमार देखते थे, लेकिन कभी-कभी इसी सम्बन्ध में प्रेस में आ जाते थे। अभिवादन से लेकर बातचीत और व्यवहार में मधुरता, शालीनता एवं सौष्ठव की प्रतीति होती थी कि कभी-कभी लगता था कि बहुत औपचारिकता के कारण ऐसा होगा, क्योंकि निजाम के दौर में जो आदमी मुंह से हमेशा आग के गोले बरसाता रहा हो, जीवन में इतनी कठिनाइयाँ झेलता रहा हो, वह इतना मिष्टभाषी और शालीन हो सकता है, इसकी कल्पना मैं नहीं कर पाता था।

वे कई वर्षों तक हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष भी रहे। संभवत उन्हीं के अध्यक्षता काल में सभा की रजत-जयंती भी मनायी गयी। एक बार मैंने फोन पर उनसे कहा कि आप रजत-जयंती के अवसर पर हिन्दी पत्रों पुस्तकों की एक अच्छी प्रदर्शनी करवा सके तो लोगों को मालुम होगा कि हिन्दी ने कितनी प्रगति की है। उन्होंने इस सुझाव की बहुत सराहना की, और कहा कि इसका पूरा विवरण बनाकर भेजिए, उसे क्रियान्वित किया जाएगा। तीन-चार दिनों में मैंने पूरी योजना टाइप करवा के भेज दी। तत्काल उनका प्राप्ति स्वीकार किया गया और आश्वासन कि उस योजना को क्रियान्वित किया जायगा। वह नहीं हुआ, अलग प्रसंग है। यहां उसके उल्लेख का तात्पर्य इतना ही है कि जब कोई नया सुझाव उनके सामने रखा जाता है तो उसका वे स्वागत करते हैं, उसमें कोई काट या तर्क करके सामने वाले का हौसला पस्त नहीं करते।

संभवतः १९६७ में एक हिन्दी सम्मेलन हुआ था, जिसमें सेठ गोविन्द-दास जी ने भाग लिया था। उस सम्मेलन के अवसर पर मैं थोड़ा और भी निकट सम्पर्क में आया। बात और विवाद में से काम की चीज पं० नरेन्द्रजी तुरन्त पकड़ लेते हैं। संगठन-शक्ति भी उनमें गजब की है, और उसका शायद यह अर्थ है कि वे किसी काम को छोटा नहीं मानते। स्वयं करने को तत्पर रहते हैं। सभा, सम्मेलन में छोटी से छोटी बात का ख्याल रखकर उसकी व्यवस्था कर देते हैं। उनकी कर्मशीलता और संगठन शक्ति का लोहा उनके घोर निन्दक भी मानते हैं।

सौंदर्य बोध उनमें गजब का है। दैनिक व्यवहार, कार्यालयों के संचालन तथा सभा स्थलों की साज-सज्जा अथवा प्रचार-सामग्री की रूपरेखा तैयार करना सब में उनके सौन्दर्य बोध की झलक मिलती है। शुद्ध साहित्य में भी उनकी रुचि है। लगता है, वे राजनीति और समाज सेवा में न पड़ते तो ऊँचे साहित्कार होते। यद्यपि वे कट्टर आर्य समाजी हैं, लेकिन उनमें प्रशंसकों में ऐसे मुसलमान भी हैं, जो अपनी जगह कट्टर हैं। प्रशंसा का मूल कारण है कि वे विरोधियों के तर्क और दृष्टिकोण का भी आदर करते हैं।

अपने साथ काम करने वालों का वे काफी ख्याल रखते हैं। उनके सुख-दु:ख में शामिल रहते हैं। अपने परिवार के सदस्य के रूप में उनसे व्यवहार करते हैं। उनका अपना कोई परिवार नहीं है, लेकिन रक्त सम्बन्धी से जो परिजन माने जाते हैं उनके प्रति भी उनका व्यवहार बड़ा आत्मीय है। समय निकाल कर उनसे मिलते हैं, उनका दु:ख-सुख बांटते हैं, लेकिन उनमें लिप्त नहीं होते। आत्मीयता और निर्लिप्तता का यह सयोग उनके व्यक्तित्व का एक विशिष्ट पक्ष है।

आयु की दृष्टि से सत्तर के पास पहुंच रहे हैं लेकिन उनमें कल्पना शक्ति और संगठन शक्ति का इतना अक्षम्य भंडार है कि अभी उनसे बड़े-बड़े कार्यों की अपेक्षा सब लोग करते हैं। आर्य समाज-स्थापना शताब्दी समारोह के वे अखिल भारतीय संचालक हैं। इस रूप में उनका कार्य क्षेत्र सारा देश हो गया है। लगभग डेढ़ दो वर्ष से वे प्राय: उस काम से बाहर ही रहते हैं। लोग उनके सम्पर्क में हैं—निकट से या दूर से सभी चाहते हैं कि पंडितजी हैदराबाद में ही रहें, और यहां के सामाजिक कार्यों को दिशा गति प्रदान करें। मैं भी उनमें हूँ, जो पंडितजी को हैदराबाद में बांधे रखना चाहते हैं।

सम्पादक :
हैदराबाद समाचार साप्ताहिक, हैदराबाद
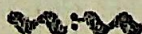
पं. नरेन्द्र जी के प्रति

दिवकर पाण्डेय

नर नहर !
तप:पूत,
औघड़ दानी ।

साहस के प्रति रूप,
शक्ति के स्रोत,
तुम्हारी वाणी से भयभीत–
नराधम अब तक नत मस्तक ।
तुम शिव !
विष के घट कितने ही पी डाले ।
पर, जिनको गण समझा –
वे भस्मासुर निकले ।
भाग्यनगर का हर कण
तेरा आभारी है ।
लेकिन, हमसे चूक हो गई –
क्षमा करो, बलिदानी ।
तुम दिल्ली के ही लायक थे,
सारा देश तुम्हारा ।
अब तो हम सिर धुनते हैं –
पाया, रत्न गँवाया ।

भूली बिसरी बात –
याद आती है –
कभी किसी शायर ने
चुपके से गाया था –
'चली जा मेरी महबूबा –
तेलंगाने से चली जा ।'

हुसेनी आलम, हैदराबाद.

पं. नरेन्द्रजी : एक पत्रकार के रूपमें

—हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

स्वाधीनता के पूर्व निजाम हैदराबाद के सार्वजनिक क्षेत्र में विशेषकर तेलंगाना, मराठा वाडा और कर्नाटक जिलों में एक ऐसे व्यक्ति की क्रान्तिमय वाणी गूंजती आ रही है जिन का आज भूरी-भूरी प्रशंसा कितने ही शब्दों में किया जाए उनके लिए कम ही है। पं० नरेन्द्रजी के नाम को मैं अपने बाल्यकाल से ही आर्य समाज क्षेत्र में ही नहीं अपितु सार्वजनिक क्षेत्र में भी उतन ही आदर के साथ सुनता आ रहा हूँ जितना कि आज कई गुणा सार्वदेशीय स्तर पर प्राप्त है। मुझे पंडितजी को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला केवल उन्हें एक पत्रकार के रूप में। यदि कोई कहे कि एक धार्मिक संगठक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं संग्राम-सेनानी को पत्रकारिता से क्या सम्बन्ध है? केवल मैं अपनी दृष्टि से यही कहूँ कि कोई पत्रकार बौद्धिक जगत् का एक जीता-जागता क्रान्तिकारी ही को नव समाज के न्यायिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपनी लेखनी का प्रयोग व वाणी को जनता तक पहुँचाने में सफल होता है। पंडितजी में यह गुण कूट-कूट कर भरे पडे हैं। उनके विचारों में जनता की अभिव्यक्ति मिलती है। वे न केवल धार्मिक विचार पर ही सोचने में अपना व्यक्तित्व नष्ट नहीं करते लेकिन कभी किसी न किसी सामाजिक, राजनैतिक विचारों से वे घिरे रहत हैं। यदि कोई भी उनके चिंतन करने की विधि का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करें तो पता चलेगा कि वे एक साथ सर्वांगीण बौद्धिक विकास के प्रतीक हैं। उनमें क्रान्तिकारी बौद्धिक विकास के सम्पूर्ण विशेषताएँ विद्यमान है। प्रेस व पत्रकारिता जन आन्दोलन को सचेत करने के लिए ही नहीं अपितु जनशक्ति के आधार को मूल्यांकन देना होता है। पंडितजी में वे सभी गुण विद्यमान है जो एक पत्रकार मे अपने विचारों को जन जन के हृदय तक पहुँचाने की क्षमता रखते है। वे कभी न कभी कुछ पत्र-पत्रिकायें ही नहीं छोटे से छोटा बडे से बड़ा ग्रन्थ प्रकाशन करवाने की धुन उनके मस्तिष्क में योजता बगी रहती है। उनके निर्देशन में मेने कई पुस्तकें प्रकाशित होते देखा है। वह भी इतने

कलात्मक ढंग से कि कभी यह कल्पना नहीं की जा सकती व पंडितजी एक कलाकार का हृदय ही नहीं रखते अपितु कलाकार बनने का सपना उनमें बाल्यकाल में ही जागृत हो चुका था। मैंने एक बार प्रेस में बैठे-बैठे ही पूछा' पंडितजी आपको पत्रकारिता के गुणों के साथ ही साथ ये साज सज्जा रंगों की परख करने की प्रेरणा कहाँ से मिली ? तत्काल उन्होंने उत्तर दिया-मैंने तो बचपन में ही ड्राइंग की परीक्षा पास की थी।' इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वे कितनी बारीकी से प्रत्येक विषय पर सोंचने व समझने का प्रयत्न करते हैं। पंडितजी जहां कमल के समान कोमल हृदय रखते हैं वहाँ उनकी जिह्वा में तापों को भी दहका देने की क्षमता है। वास्तव में पंडितजी में एक मानों में एक विवेचक व पत्रकार होने की क्षमता विद्यमान है। यदि वे आज भी सामाजिक ऊहा पोह और ऊबड़खाबड़ के दायरों से हटकर चिंतनशील पत्रकार के रूप में कोई कार्य प्रारम्भ कर दे तो मैं समझता हूँ कि उनकी वाणी तो क्या लेखनी की शक्ति को भी सार्वभौम प्रशंसा मिलने की सम्भावना है। पंडितजी के विषय में जिन-जिन बौद्धिक गुणों की प्रशसा की जाय पाठकों के लिए बहुत कम ही है। अतः उनके विषय में कुछ भी हमने नहीं जाना। मैं केवल आर्य जीवन के सम्पादन करते समय उनके निकट में बैठकर विचार करते देखा तो केवल एक ही दृष्टि कोण रहती कि हिन्दू समाज ही नहीं आज का सम्पूर्ण मानव समाज अन्याय अत्याचार और अभावों से दबा अपने को घुटन की ओर बढ़ाया जा रहा है और उसका निदान क्या है और कैसे क्या यह एक मात्र अभिरुचि पत्रकारिता लोक कल्याण के कार्यों में सशक्त हो सकती है ? प्रेम के विषय में नेपोलियन की उक्ति प्रसिद्ध है कि-चार विरोधी पत्रों का भय एक हजार बैनेट के भय से भी बड़ा होता है। नेपोलियन का यह कथन इसीलिए सत्य है कि पत्रकारिता लोकप्रियता की अभिव्यक्ति की एक कला है। जिससे जन-साधारण में जागरण की आशा बंधी रहती है। पंडितजी ने आर्य समाज के क्षेत्र में ही चेतना व प्राण फूंकना नहीं चाहते हैं वरन् वह एक ऐसे समाज का संगठन चाहते हैं जहां सर्वसाधारण को न्यायिक उपभोग समान रूप से उपलब्ध हो सके।

आदरणीय पंडितजी के व्यक्तित्व के विषय में जो कुछ भी गुण-गान करें बहुत कम है। परमात्मा से कामना करते हैं कि वे अपनी दीर्घायु तक जनता जनार्दन की सेवा करते रहें।

पं. नरेन्द्रजी प्रेरणा के स्त्रोत

—ठा. सरदार सिंह एम.ए., एल एल-बी.

आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के हैदराबाद के मंच से महात्मा आनन्द स्वामी जी ने जब आर्य जनता को यह सूचना दी कि हैदराबाद के प्रख्यात आर्य नेता श्री पं० नरेन्द्रजी वैदिक धर्मानुसार जीवन के चतुर्थ एवं प्रमुख, कल्याणकारक, सन्यास आश्रम में शीघ्र ही प्रविष्ट होने वाले हैं, तब उनका सम्पूर्ण कर्मठ एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, बिजली की भाँति सभी के मस्तिष्क को चकाचौंध कर गया। पं० नरेन्द्रजी के तप और त्याग से परिपूर्ण जीवन का चित्र हम सबके समक्ष प्रस्तुत है। पं० नरेन्द्रजी का जीवन और गत हैदराबाद के चार-पांच दशकों का इतिहास एक है।

पंडितजी सदा ही आर्य जगत तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए अपने अद्‌भुत साहस त्याग और बलिदान से युक्त निस्वार्थ सेवा कार्य के कारण प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश का प्रत्येक नागरिक और अन्य भारत वर्ष के आर्यजन पंडितजी को भली-भाँति जानते हैं और वे उनके लिए गौरव एवं श्रद्धा के विषय है। आन्ध्र प्रदेश की स्थापना से पूर्व हैदराबाद के निजामशाही दौर में वह राष्ट्र प्रेमी तथा हिन्दू-धर्म-विरोधी तत्वों के विरुद्ध अपने दृढ़ संघर्ष के कारण बालक, युवा एवं वृद्ध सभी के प्रिय और आदर्श-पात्र रहे हैं। स्वाधीनता के लिए समस्त भारत वर्ष में, ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में आन्दोलन छिडा हुआ था तब हैदराबाद राज्य में तत्कालीन मुस्लिम-राज्य-प्रशासन द्वारा आर्य-हिन्दुओं पर ढाये जाने वाले अत्याचार तथा अन्य सामाजिक एवं राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाले नेताओं में 'पं० नरेन्द्रजी अग्रणी रहे हैं। हैदराबाद राज्य की तत्कालीन पीढी के लोगों के मन, मस्तिष्क और हृदय पर सबसे अधिक अंकित होने वाले व्यक्तियों में केवल

दो व्यक्ति और उनके व्यक्तित्व हैं—श्री पं० नरेन्द्रजी और स्व० विनायक-राव विद्यालंकार।

पं० नरेन्द्रजी अपनी तरुणावस्था से ही क्रान्तिकारी विचारधारा एवं संघर्षमयी जीवन के कारण हैदराबादी जनता विशेष कर नवयुवकों के नेता रहे हैं। नवयुवकों में उस समय 'उन्होंने जो धार्मिक' सामाजिक और राजनीतिक चेतना एवं स्फूर्ति उत्पन्न की और स्वयं उदाहरण स्वरूप हर प्रकार की यातनायें सहकर मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में जो उन्होंने पहल की उसी के कारण वे उनके हृदय सम्राट कहलाये। बीसवी शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक में, जो निजाम युग में आर्य समाज का महत्वपूर्ण संघर्ष काल रहा है, तब मैंने 'अपनी बाल्यावस्था में' पंडितजी को, ध्रुवपेठ आर्य समाज के तत्वावधान में आयोजित होने वाले साप्ताहिक कार्यक्रमों में शेर की तरह दहाड़ते देखा है। ध्रुवपेठ का, जो उस समय आर्य समाज और हिन्दू शक्ति का प्रतीक बना हुआ था, कोई ऐसा नवयुवक और घर नहीं था जो उनकी ललकार पर बलिदान देने के लिए तत्पर न रहा हो। उसी समय मैं भी पंडितजी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ था। आगे भी विद्यार्थी जीवन में पंडित के आर्य समाज के क्षेत्र द्वारा किए गए क्रान्तिकारी कार्यों से प्रभावित होने का अवसर प्राप्त हुआ। किन्तु उन्हें निकट से देखने और उनकी सगठन शक्ति को समझाने का अवसर मुझे कुछ हदतक उस समय मिला जब प्राच्य महाविद्यालय नारायण गुडा हैदराबाद में मेरी प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति उन्हीं की प्रेरणा एव कृपादृष्टि से हुई और महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष तथा महाविद्यालय के संरक्षकके रूप में उनको मैंने, देखा। पंडितजी प्राच्य महाविद्यालय के कुछ संस्थापकों में से प्रमुख संस्थापक हैं और उसकी स्थापना १९५६ से कई वर्षों तक १९७१ तककुछ सक्षिप्त अवधि को छोड़ कर प्रबन्ध समिति के, अध्यक्ष भी रहे हैं। १९६० से महाविद्यालय के उपाचार्य तथा आचार्य के पद पर रहने के नाते उनके जीवन के सक्रियरूप को और अधिक निकट से देखने का अवसर मिला। आर्य समाज और उसका कार्य-क्षेत्र पंडितजी का जीवन है। आर्य समाज तथा अन्य सार्वजनिक सेवा कार्यों के अतिरिक्त हिन्दी भाषा के प्रचार तथा उसके साहित्यिक अध्ययन-अध्यापन के प्रति उनकी निष्ठा एवं प्रेम को देखकर मुझे हैरानी हुई। प्राच्च महाविद्यालय के अतिरिक्त वे हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा द्वारा

हिन्दी प्रचार एवं विकास के लिए कार्यरत रहे हैं। इस प्रकार उनकी संगठन शक्ति, कार्य कुशलता तथा उनका कर्मठ प्रतिभाशाली जीवन, अनेक व्यक्तियों की तरह मेरे लिए आदर्श और प्रेरणा का स्रोत है।

प्राच्चमहाविद्यालय के प्रत्येक कार्य में अब तक के उनके मार्गदर्शन एवं सहयोग के सम्बन्ध में जितना भी कहा जाय कम है। किन्तु अब आर्य-समाज से सम्बंधित उनके कार्य क्षेत्र के अधिक विस्तृत हो जाने के कारण गत कुछ वर्षों से उनके मार्ग दर्शनको सक्रिय रूप से प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है। क्यों कि आन्ध्र प्रदेश के अतिरिक्त अब उनकी सामाजिक गतिविधियों का क्षेत्र बम्बई, दिल्ली बल्कि समस्त भारतवर्ष हो गया है। उनका सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित रहा है और अब वह पूरी तरह से स्वयं आर्य समाज के पर्याय हो गए हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के संयोजक के रूप में आर्य जगत में जो स्फूर्ति और चेतना व्याप्त कर रहे हैं वह सर्व विदित है।

प्राच्च महाविद्यालय, नारायण गुडा हैदराबाद, जो उस्मानिया विश्व-विद्यालय के हिन्दी प्राच्च भाषा के पाठय-क्रम, एन्ट्रेंस, डिप. ओ. एल., बी. ओ. एल., तथा एम. ओ. एल., के अध्ययन के लिए गत १९ वर्षों से चल रहा है, और हिन्दी महाविद्यालय नल्ला कुण्टा हैदराबाद के बाद समस्त आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी माध्यम का दूसरा महाविद्यालय है, पंडितजी की हिन्दी सेवा तथा उनके संस्थापक एवं अध्यक्ष के रूप में प्राप्त हुए विशिष्ट मार्गदर्शन तथा सहयोग के लिए, उनके प्रति सदा कृतज्ञ रहेगा।

आचार्य
प्राच्च महाविद्यालय,
नारायण गुडा, हैदराबाद

जुनूबी हिन्द के जांबाज सपूत पं. नरेन्द्र जी की ताजीम में

ले. मुंशी बशेषवर प्रसाद
'मुनव्वर' लखनवीं

सपूत देश के जांबाज आर्य-वीर नरेन्दर
दक्कन के रहबर मुमताज़ आर्य–वीर नरेन्दर

मुजाहदान में सरफ़राज़ आर्य–वीर नरेन्दर
हजार बाअसे सदनाज़ आर्य – वीर नरेन्दर

खुदा के फ़ज्ल से गिनती है बाकमालों में
शुमार आपका है कौम के ज़ियालों में

सुखन, सुखन, सुखन, इन्तेखाब आपका है
कदम कदम कदम कामयाब आपका है

रविश अजीम चलन लाजवाब आपका है
हर एक काम शरापा रुबाब आपका है

सफर हजार किये जिन्दगी की राहों में
अमल के हुस्न की तौकीर है निगाहों में

बने गुलाम न दुनिया के रह के दुनिया में
तमाम उम्र गुजारी समाज सेवा में

घुलाई जान गमे मुल्क के मुदावा में
रहे किसी से भी पीछे न धरम रक्षा में

हबीब खल्ख की बेपेश वो पस है आपकी जात
नजर नजर में मसीहा नफ़स है आपकी जात

नसीब दौलते-ईमान व आगही है कमाल
दिलो-दिमाग में वेदों की रोशनी है कमाल

फरिश्ता खूं हैं तबियत में सादगी है कमाल
उजूद बर रह सुलह व आशती है कमाल

समाज की ही मोहब्बत का ध्यान रहता है
खयाल देश के हितका हर आन रहता है

सहर है शाम है निष्काम भाव से सेवा
पै अनाम है निष्काम भाव से सेवा

कबूले आम है निष्काम भाव से सेवा
बलन्द नाम है निष्काय भाव से सेवा

तमाम जज्वा व तासीर जात आपकी है
रिफाए मुल्क की तसवीर जात आपकी है

वो गुल हैं आप हसीं जिनका हर चमन में हैं जिकर
वो शमा आप हैं जिनका हर अंजुमन में है जिकर

बरंगे गोहर आलीसा अदन में है जिकर
तमाम हिन्द में है गलगुला दकन में है जिकर

वो नाम पाएँ कि, फख्रे दवाम बन जाए
समाज देश के प्यारों में आबरू पाएं

नशान आप से बापू का है बलन्द अब भी
महर्षि का भी परचम है अरजुमन्द अब भी

है आप से मुनियों का वाज़ व पन्द अब भी
सुपुर्दे फल्क है तहरीरे दिल पसन्द अब भी

हर एक लफ्ज में जोरे कलाम मिलता है
मुफीदे—मुल्क जो है वो पयाम मिलता है

बशौके गोहर नामूस व आबरू लेगा
हर एक समरए अरमान ओ आरज़ू लेगा।

कदम बढ़ाके सरे आसमां को छूलेगा
कभी न आपके अहसान मुल्क भूलेगा

रखेंगे हम पे निगह आप आर्य-वीर नरेन्दर
करेंगें दिल में जगह आप आर्य-वीर नरेन्दर

गौ-भक्त पं. नरेन्द्रजी

—रामेश्वरलाल हेड़ा

नवयुवक हृदय सम्राट पं० नरेन्द्रजी ने जहां स्वाधीनता आन्दोलन, आर्य समाज, हिन्दी प्रचार-प्रसार, सामाजिक सुधार आदि के कार्यों द्वारा जनता-जनार्दन की सेवा कर अक्षुण्ण कीर्ति अर्जित की है वहां गौ-माता की सेवा में भी-वे-पीछे नहीं रहे हैं।

एक सच्चे आर्य समाजी के नाते गौरक्षण एवं गौसंवर्धन के कार्यों में सदा आगे-आगे रहे।

सन् १९६६ में अखिल भारतीय स्तर पर जो गौरक्षा आन्दोलन चलाया गया उसमें भी आपने सक्रिय भाग ही नहीं लिया बल्कि एक मास का कारावास भी आप को भुगतना पड़ा

पंडितजी के हृदय में आर्य जाति एवं संस्कृति की रक्षा व उत्थान के लिए जितनी तड़प है उतनी ही गौवंश की रक्षा एवं उत्थान के लिए भी है।

मैं पं० नरेन्द्रजी की दीर्घायु की कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें स्वास्थ्य के साथ-साथ जन साधारण एवं गौमाता की सेवा हेतु चिरायु प्रदान करें।

कोका बाजार, हैदराबाद।
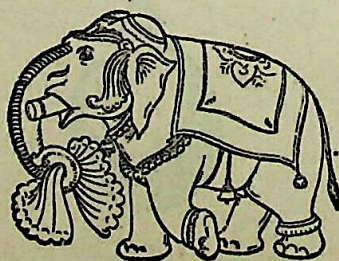
PANDIT NARENDER

THE IRON MAN OF HYDERABAD

Published by :

CHAGANLAL VIJAYVARGIYA

Convenor, Pt. Narender Commemoration Committee, Hyd'bad

Contents

*

A REBEL TO THE CORE

Swami Ramananda Tirth

Pandit Narendraji's yeomen Services to the nation are innumerable. His life is a sago of sacrifice and suffering. It was no easy job to take cudgels against the oppressive feudal regime of the Nizam. From his early days he was inspired by the urge to liberate oppressed and the suppressed people of the erestwhile Hyderabad State. As such he was the Probably the first victim on whom the heavy hand of the Nizam's regime fell.

He is an ardent devotee of Arya Samaj. He has dedicated his whole life for the propagation of the ideals of Arya Samaj and spared no pains to further its cause. He is gifted with a powerful oratory which can move the masses to the depths. Thousands have admired him and are ready to pay homage to his manifold services. Pandit Narendraji has struck me most amongst the Arya Samaj leaders. I came into contact with him long-long ago. He is a rebel to the core and expresses his sentiments and thoughts without fear. Bold in spirit he instills the same into others. The Government of those days counted him as their opponent No. 1. It is no exaggeration to say that he gave the masses of Hyderabad a feeling of self-respect and a will to preserve it at all costs. I still remember vividly how he was Spirited away one evening to Mannanur and detained there for more than an year or so.

His advocacy of the underdog is proverbial. He is up against every form of inequality and injustice. Daridrinarayana is the object of his worship. He is a deeply religious soul. Service of the suffering humanity is the form he has chosen to worship Almighty.

PANDIT NARENDRAJI
A BRAHMACHARI TO SANYASI

L.N. Gupta I A S (Retd)

I had the good fortune to come in contact with Pandit Narendraji even when we were both young and in our twenties. In 1927 I had just returned from the Benaras Hindu University full of youthful zeal for public activities. Some of the young men of Charkaman including Sri Dharnidhar Sanghi and myself had started the Agarwal Navyuwak Sabha, which ran a Library and a Reading Room and organised public lectures on social reforms by eminent speakers from Hyderabad and outside. Pandit Narendraji by then was occupying a fairly prominent place in the public life of the youth of Hyderabad. He used to help our Sabha and participate in our functions and give guidance and support to our other activities. After a couple of years I drifted into Government service and my interest in public life became of a secondary nature. Pandit Narendraji, however, became entirely absorbed in social work and became a whole-time worker of the Arya Samaj. He soon flowered into a good organizer and a powerful speaker, and became a well-known figure in the public life of Hyderabad.

Pandit Narendraji dedicated himself to the cause of Arya Samaj and has remained a Brahmachari His is a life like the old Rishis imbibing in himself the high ideals of a true Arya Purusha. He is a selfless soul but still his modesty is remarkable. The years do not weigh heavily upon him and inspite of his sixty and odd years, he maintains a boyish look, youthful energy and the simplicity of a child. His image of over 40 years back is still fresh in my memory, and his present looks

do not betray any change in that ever fresh and vibrant image. He can still put in 20 hours of work in a day and can move freely in any type of transport, indifferent to his physical comforts. All this indefatigable energy. I can ascribe to his Brahmacharya and to the purity of his soul.

Pandit Naredndraji has, in no sense, isolated himself from active family life. He has a big house-hold of relations, friends and every body else whom he has helped in one way or, the other. He is always solicitous of thier health, welfare and happiness. There are countless young men and women whom he has put on useful careers. He is thus also a Grihathi but not the married type with children of his own, His is a Grihatha of the Vasudheava Kutumbakam type.

Pandit Narendraji is also a Vanaprasthi in the true sense of the term. His public life is an open mirror, wherein are reflected the vast glories of his social and political work. He has always fought against injustice and falsehood and has undergone severe sufferings. including imprisonment for upholding the righteous causes and in helping the down-trodden.

From 'Vanaprastha' to 'Sanyasa' has been a natural step for Pandit Narendraji. He does not call himself a Swami but he possesses all the virtues and qualities of a Sanyasi. He has no attachment for any worldly belongings luxuries or even comforts I do not think he possesses anything which he can call as his own Every minute of his daily routine is taken up in the work of the Arya Samaj or in the service of the people. His courage, ability, eloquent oratory and wide knowledge are assets which he utilises unsparingly for the various causes, which are dear to him.

He is an ardent lover of Hindi and his service to the cause of Hindi is only next to that of Arya Samaj. He has great political acument and made a fine legislator. But he lacks in

the unscrupulous art of wire-pulling which has unfortunately become an indispensable instrument of a successful politician in our country. If we had more politicians like Pandit Narendraji the gulf between politics and statesmanship will not have been so wide.

To sum up, Pandit Narendraji imbibes in himself all the virtues of a Brahmachari, A Grihathi, Vanaprasthi and a Sanyasi. He is thus an ideal Arya Purusha. **May he live long to serve the Arya Samaj, the cause of Hindi, his people and his country :**

FRIEND OF THE POOR

Dr. G S. Melkote.

Pandit Narendraji is a Byword in every household in the erst-while Hyderabad State and the present Andhra State and is well known figure even outside Andhra. Small in stature wiry in limbs, calm and cool, but when roused, is a giant in action emitting fire from his eyes and bold words from his mouth. His oratory keeps the public spelt bound and he has known to act on what he speaks. He has roused the Youth of Hyderabad to action against all wrongs and has suffered immensely for the Public Cause. He is a friend of the needy and has silently given his all for them. No one will deny the fact that but for his all round contribution in the social and political field in Hyderabad, the present Hyderabad could not have been what it is today.

PANDIT NARENDERJI

AS I KNOW HIM

— Harish Chandra Heda

Pandit Narendraji had been an idol of youths for a long time. In Arya Samaj Section he was called, "Yuvak-Hriday-Samrat", an uncrowned king ruling over the hearts of youth. Fiery and fearless oratory created this impression. His life was a symbol of sacrifice, He has retained both these attributes and even now it is a treat to hear him on a Pubiic Platform.

We knew each other life long. We entered Public life at almost the same time. However it is surprising that rarely we worked together and I am happy to note that we never crossed each other We were working more or less on parallel Platforms. I belonged to that section of congress, which was not anti Arya Samaj and he belonged to that section of Arya Samaj, which was not anti-Congress.

We started our Public lives in twenties. His rise was like a meteor. He plunged into organising Arya Samaj. He extensively toured Hyderabad State. No other leader has so vast an area as he did. His arrest and long internment at Mannanur was a climax.

He gave his best years to Arya Samaj. He did join the Congress and worked in the organisation from 1942 to 1957 in different capacities. He held various positions. He was a force in Congress, but I would like to remark that he was lost in the size of organisation. Moreover, he could not bring in the entire cadre of Arya Samaj to the fold of Congress.

In the last decade he has entered the wider field of Arya Pratinidhi Sabha. This is proper place for him. Here his knowledge of vedas and organisational acumen would be further Sharpened.

He led a life of celibacy. By not entering 'Vanprastha' and then 'Sanyas Ashram', I think he has set a nice example. Colour or mode of the dress is not important. Important thing is the way of life. In that sense he is a sanyasi and therefore evokes all the more respect from the Persons of my type.

We were together in jail in the last quarter of 1947. It was then that I came into close contact and watched him as a person. He was popular and was seen everywhere. We were about twentyseven in ward No. 15. Swamiji, Ramkishan Dhoot, B. Ramkishan Rao K.V. Ranga Reddy. Dr. G.S. Melkote. Dr. M. Chenna Reddy, B. S. Mahadev Singh, Birdhi Chand Chaudhari and many others. He would join every activity. He was regular in spinning and Gandhian Study hour. He was equally regular in P.T Class conducted by Dr. G.S. Melkote, and Volley ball game in evening. He was very helpful. Thus I would see how jolly he was. He was a great conversationist. He would brighten up the atmosphere. He was able to keep three groups together, that were formed amongst us One group was led by Swamiji and Dr G.S. Melkote. Another consisted of Ramkishan Rao, K.V. Ranga Reddy, Dr M. Chenna Reddy and myself, while the third was woven round the personality of B.S. Mahadev Singh. These were not warring groups and there was never a difference of opinion. They were formed more or less on the basis of temperament.

In jail we were treated well as first class detenues. We had very good time. Ramkishan Rao celebrated the completion of reading 'Sundarkand' of Ramayana. There was a big feast Food, we got cooked by our women-colleague detenues

in another ward. Narenderji was the chief person on such occassions to see that everybody had a good treat. K Venkat Ranga Reddy provides us good pickles and other niceties for our meals. He was in charge of Kitchen. His affectionate and lovable nature kept us very happy.

Narenderji was our newspaper He would get all the news and spread among us He was friendly with watch and ward and had developed contacts with the outside world. Birdhi Chandji assisted him in this task. He would get us news papers also.

Condition of other political prisioners became concern to us. We got more and more news about the bad treatment meted out to them Swamiji called a meeting and we unanimously decided to jointly undertake an unlimited fast. This fast was to precede by asking the authorities to provide us the same food as was given to the most ordinary political prisoners, who were undoubtedly our colleagues or followers. The letter was written by Swamiji and from the next day we got the most horrible food. The sight of that coarse and rotten food would dampen us, but Narenderji would cheer up everybody. I was fond of good food and good quality. so, he joked and said to me, "what would happen to you, Hedaji ?" I replied in the same mood, "Panditji, I have good reserve, let us look after the weak," saying this I pointed to him and swamiji (who were lean). He was quick to retort, 'humble man live longer than those, who boast'. We had a big laugh and jolly roar created, sweetened the dal, and yellow jawar bread in our plates. As the days passed, health of some of us started failing Dr. G. S. Melkote and Dr. M. Chenna Reddy insisted that such persons should revert to the oldd iet. But I and Narenderji were happy that we both were able to carry the struggle till the end The end was not very far. Before the end of the week the government yielded to our demands and we were back to the old diet.

Before I conclude this short picture I would like to refer to a general question: Will the leaders like pandit Narenderji get their proper place in the history, that would be available after 50 years? And I doubt it very much. The task generally is entrusted to research scholars, by Government. And they would be at a handicap. They will go by the records available to them. The revolutionaries, the agitators and organisers do not leave any record behind. It is the constitutionalists that leave abundant records. He shines by making representations, issuing statements, etc. Their activities though few and far between appear well knit. Time gap is never observed. The formers' responsibilities for bringing the change in the situation are over-looked This thought impels all the more to express my regard and esteem for the person, like panditji and his life full of zest and action.
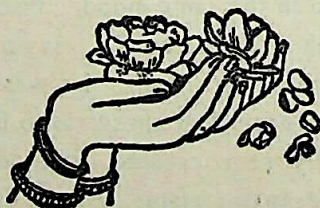
PATRIOT NARENDERJI

—Dr. M. Chenna Reddy

Pandit Narenderji is a scion among Hyderabad freedom fighters a rare soul full of compassion, faith and love 66 years old Pandit led an exemplary life, served the people with devotino and sincerity; defied the tyrannical authority with non-violence, never weavered from his goal and never compromised on the ideology.

Born in a feudal state under humble circumstances. he represented the restless spirit of the people at a time when the Nizam's authority and power remained supreme. His life is a mirror of the political, social and cultural history of the State.

An indomitable fighter, a crusader. a harbinger of national, integrity, promoter of communal harmony among the two great communities of Hindus and Muslims, a patriot, Narendraji is a household word. Never did he aspire, for position, never did he waver from his political goal however arduous the path had been He is a true arya Samajist. An Arya Samajist is he who respects the teachings and Paigambers of other religious faith Love and brotherly feelings to all human beings is his motto. Service to the people is service to God is his mission.

As an inspiring speaker, he establishes a rapport with his audience. He never used vulgarity to meet arguments Chaste in his expression, clear in his views, passionate in his ideal and courageous in his approach, Narenderji commanded the confidence of his friends and respect from his enemies.

As a student I always admired the life of Narenderji for his courage. When he was spirited away by the Nizam's police to Mannanur (Local andamans) the entire national world was moved. A simple, shortish, fragile Narenderji was a nightmare to the police, a terror to the all-power Ithihadul muslameen and its high priest BhahadurYar Jung.

To honour Narenderji is to honour ourselves. What better monument can there be than for the younger generation to emulate the spirit of his inspiring record of service. He was continuously in the forefront, courting arrest, facing lathies of police and galvanising the public opinion.

Indeed it is a pity that such a stalwart is not honoured in our own State. Narenderji is well known in international aryan league. The erosion of clean political and public life with the intrusion of sycophants and power-mongers, had supplied the stream of public weal. But then a few people like Narenderaji stood out as a shining example of catalyst inspiring the younger generation I have had occasion to hear also the fine speeches of Narenderji for the cause of responsible government, a movement started by the Hyderabad State Congress. His strident voice and his emotions moved lakhs of people.

After the formation of Andhra Pradesh Narenderji devoted most of his time for Arya Samaj. What was a loss to the Congress is a gain to Arya Samaj, where he devoted his heart and soul into the International Aryan league as its vice-president. I salute this freedom fighter, a crusader and a humanist.

LIFE OF DEDICATION AND SACRIFICE

— P. V Narsimha Rao

Pandit Narenderji is the product of the National Struggle. I remember vividly how we, as High school and College Students were swayed and roused to action by his impassioned orations in the late Thirties and early Forties. Since then, I have always considered Pandit Narenderji as one of the persons who inspired me and thousands like me. His life of dedication, Sacrifice, Utter selflessness, Simplicity and dare-devil boldness will remain unparalleled for a long time to come and he will continue to be adored by thousands of youth. To all of us, he represents of the best in human character.

PANDIT NARENDERJI

— Kodati Naraian Rao

I remember and heard about Sri Narenderji some where in 1935. He was not Pandit Narenderji yet. He left 'Raiyat' the nationalist Urdu weekly edited by Sri M. Narasinga Rao, just some time ago I joined it. Since then I am in regular touch with Pandit Narenderji and his devotion towards Arya Samaj. He was responsible to inspire the youth and bring them into the field of Arya Samaj. It is not the art of making speech of Mr. Narenderji or his oratory that attracted the young hearts but the emotion, sacrifice and the fearlessness of Sri Narenderji which inspired the youth.

Though he joined the State congress at a later stage. Yet his contribution to struggle launched by it was not small. He was the unquestionable leader of the youth in the city.

He was legislator for some time but could not continuc for a long. Perhaps like most of us, he also felt that he was misfit to the changed circumstances.

However if the history of freedom struggle is written properly, Pandit Narenderji's name will occupy an important place in it.

AN IDEAL MAN

— Dr Ram Niranjan Pandeya

The concept of an ideal man, which I cherish in my heart, applies to Pandit Narenderji in total. His name fulfils its worth in his personality. He is Indra of men. The best man.

Once it so happened that a young man began chasing a riksha on which a lady was sitting. This young man was also at the same time singing a song which a Cinema hero sings for his beloved In this frolic mood the young man ultimately caught hold of that riksha and sat on the driver's seat after pulling the pullar down.

This cinema scene was enacted on the road of Arya Samaj Bhavan, Sultan Bazar where Panditji puts up. On that market road none ventured to intervene. Panditji saw this from the first floor of the Arya Samaj Mandir, He rushed down. went near the riksha, slapped the young man and pulled him down. This way he facilitated the riksha-pullar to escort that lady to her destination and warned the young man never to repeat that type of gundaism.

In this action of punishment to that young man in haste Panditji hurt his elbow which got struck against a door shutted, it took many days to heal up. Panditji told us that he did this in flesh of a moment and did not realise that the young man could also have retaliated. But the power of justice was with him and in his old age also he could punish a young man and could teach him a lesson for life.

Panditji is harder than a diamond and softer than a flower. Even in this old age he can punish strong and stout young men for their wrongs and has got a soft and tender heart for small children and good people. He bends down in respect and reverence to good people who are even younger to him in age.

Panditji is a leader of national repute. He took up the cause of the national language Hindi and gave to the Central Government a good fight for the same. Likewise he has got a burning zeal to protect mother cow from being slaughtered. In this direction also panditji did a lot to convince the Central and Provincial Governments to stop Cow-slaughter.

From his early young age Panditji is fighting against evil in all the fields of society. He is a very successful speaker who speaks with conviction, courage and force. From the platforms of Congress, Arya Samaj and from many other literary and religious platforms he has delivered historic speeches which could enthuse real life and spirit in his audience.

Panditji is a well read scholar on a wide range. He has got a very good grip over the vedic and ancient Indian History and Culture. On these sides of knowledge he can speak with confidence and competence. He is an ideal man having all humanly qualities in his personality.

THE MAN BEHIND THE SCENE

Madhusudhan Chaturvedi

The dignified personality of Pandit Narenderji has always attracted me. I happened to be the editor of "Arymitra' a Hindi Weekly published from Agra. Those were the days of satyagrah against the religious repression in Hyderabad. People from North and West came to participate in the struggle for the resteration of religious freedom. They faced all sorts of dangers They were imprisoned for various terms and were seldom supplied with any courteous amenity available to prisoners in civilized countries. They were flogged or lathi-Charged: when they tried to march in any procession. Their meetings were banned and disturbed by armed policemen. Yet the struggle continued. People, who returned from Hyderabad generally met the Editor of Arymitra and gave graphic descriptions of their sufferings during the struggle. And they all talked about one man who was organising the whole show at great risk to his life. It was Pandit Narenderji, the man behind the scene.

Providence brought me to Hyderabad in 1940. The image of one man was already formed in my mind. I had published some books in Agra which were popular among the students there. I wanted their introduction in Hyderabad too. I did see him. He was different from the image formed in my mind He was lean and thin but clad in pure white Khadi. When he spoke, he had the strength of about 200 Arya Samajs spread all over the state of Hyderabad The meeting was short, but the result was a deep regard for the person, which has never lost its depths in spite of the elaps of so many years.

The Second world war brought changes all over India. Freedom, which had been merely a dream for the past so many years, seemed nearly won. Independence was declared for India at last in 1947, but Hyderabad had no joy unlike the rest of India, struggle for freedom has yet to be fought Two men were generally seen together No person of eminence was such, whom they could not see. They travelled day and night, visiting places and persons. Even the political Agent of India Mr. K.M Munshi was accassible to them. Their soul aim in life was to save Hyderabad from the probable blood shed. It was a great joy to them when H.E.H. the Nizam surrendered, and their one aim succeeded. One of them was Pandit Narenderji,

It was at Kazipet Railway station that I met Narenderji, on my return from foreign tours. His zeel for the service of Arya Samaj was stile unabated He was travelling from place to place to strengthen the samajas, Organised under his care and supervision. His devotion to the cause of samaj has won confidence of the masses for him

Hyderabad became a part of India and Assemblies were formed with elected representatives. Pandit Narenderji was not in the Assembly, but he had the power to select candidates for the Assembly and to see that they were elected.

With the formation of Andhra Pradesh. there was no dimenition in the popularity and status of Pandit Narenderji. He has always been the man behind the scene in so many programmes and policies of the state. His statements on various occasions inspire and guide the masses

Once I had an invitation to speak in Ved-saptah, organised by Agapura Arya Samaj. Being a Chaturvedi by name, much is expected from me, though my programme for the stredy of Vedas has always been postponed for some future date. Per chance, we had published an article of a learned scholar Pandit

Giridhar Shama in 'Kaipana' a month back and I had read it with attention, so I agreed to speak.

The meeting was presided by pandit Narenderji. The gist of what I was going to speak, was supplied to the audience by the president, while introducing the speaker. Only then I could realize the depth of learning and the command over the Vedic love of Pandit Narenderji. He was really Pandit Narenderji and the title of Pandit given to him was fully justified, when he spoke on this occasion.

Hindi Akadamic Organised a seminer and invited His Excellency Syt. S.N, Agarwal the Governor of Gujarat to address it. I was the secretary of the Akadamic in those days and felt very uneasy about the whole affair. I met Pandit Narenderji and told him how I was feeling. With only a few words, he filled me with courage, and when the occasion came, His Excellency was received the red carpet, suitable to the occasion. No body knew how it all happened, because the man behind the scene never came forward.

On innumerable occasions I have seen Pandit Narenderji lending a helping hand, where he feels the need. His orations inspire people, no doubt, but he does much more by remaining behind the scene.

THE 'LITTLE' SHER-E-HYDERABAD

— *V. H. Desai*

To write about a man who mesmerised the people of his time by his mass appeal and played a notable part in the Freedom Movement is rather an exciting task may, an impossible assignment, if he has no enough material before him. I am thankful to the Editor of the present Souvenir for inviting me to write about that personality whose contribution to the Freedom Movement in the erstwhile Nizam's State was not only unique but unparalleled.

Pandit Narenderji was undoubtedly 'Sher-e Hyderabad" when the Freedom Movement in the erstwhile Nizam s State was taking its roots, with the emergence of State Congress. Under the banner of Arya Samaj, this great 'little, Lion' was in the forefront at a time when the then State Congress was banned even before it was born under the leadership of the late Govind Rao Nanal in the thirtees.

My first eye-witness of the performance of Pandit Narenderji as an orator comparable to the Late Bahadur Yar Jung was in the year 1946, when the Nightingale of India - Sarojini Naidu presided over a public meeting at the Hashmat Ganj flanked on either side by Pandit Narenderji and Bahadur Yar Jung, in her bid to promote Hindu - Muslim unity in the unpredictable State of H.E.H the Nizam. I was then a scribe, representing a local Daily, commissioned to report the proceedings.

Panditji's Voice

I still remember when Sarojini Naidu spoke of the "two lions". whose love and admiration for the gracious lady was

something between a Mother and her two sons, each following his own path. Then followed Bahadur Yar Jung. He, while paying rich tributes to the "Mother", struck to his guns in calling the people of Hyderabad to accept the suzereinty of H.E H. the Nizam even after India attained Independence.

The last to speak was pandit Narenderji. When he stood before the mike, there was dead - silence and the people, as one man, rose to their feet, when his oration touched their heart. The thunderous cry of "Pandit Narenderji Zindabad" still echoes in my ears.

In Jail

However, my first acquaintance with Pandit Narenderji was in the European ward of the Central Jail in Chanchalguda. With the arrest of the state congress leaders, the Nizam's Government was hunting for the man behind the big-headlines in the National Dailies, published from the rest of the Country. The last battle of Indian Freedom Movement was being fought under the aegis of the Hyderabad State Congress, with Swami Ramananda Tirtha at its helm. Pandit Narenderji was one of the members of the State Congress working committee who was put behind the bars. He was after Swami Ramananda Tirtha signalled the banner of revolt on 7th August 1947 by hoisting the National Flag. A week hence, the rest of the country was preparing to celebrate its Independence Day 15th August 1947; but to the people of erstwhile Nizam's State, the Independence Day was still a far-fetched goal.

I was arrested on November 22, 1947 along with M. Narsing Rao, Editor "Raiyat". After a few days in police lock-up, I was taken to the European ward in the Central Jail of Chanchalguda, where the entire State Congress "Cabinet" was detained.

During the few days of my stay in Jail, my affection and regard for Panditji grew and we started coming closer to each

other till I was transferred to the Gulbarga Jail after a four months detention. During this period, it was my proud privilege to organise a mini-Parliament; with a regular Ministry installed. At my suggestion, Panditji agreed to become "Information Minister". But this "Coalition Government" had its own set-back. when "Panditji tendered his resignation and I was "inducted" as "Information Minister" with his blessings' - he became the Leader of Opposition

Panditji always had been a source of inspiration to me. His childlike attachment to me is still green in my memory. It was a day for our "send-off" to Gulbarga jail - We were nine detenus altogether. who were ordered to be transferred to Gulbarga jail at short notice. When Panditji heard this news, he was stunned Before we could be ready. a "guard of honour" was accorded so all of us and when Panditji embrassed me, in an affectionate farewell. tears started rolling over his cheeks, I too could not control. Then he started crying like a child. He confessed soon after that he never cried like before Why was he so much attached to me, I I still do not know and I have, even to this day, never asked him about the incident.

After Police Action

After Police Action in September. 1948. we became really free; having won our freedom at long last! I was released nearly a week after 17th September 1947 - the day of the surrender of the Nizam's Forces to the Indian Army When our "Special Train": bedecked with national flags. steamed into Hyderabad thousands of people waiting at the platform greeted us and the first person to greet me was. Pandit Narenderji. That was Pandit Narenderji ! !

To me, Pandit Narenderji was not merely a leader of the masses but a leader who inspired his people. More than being a leader, he is humane to a fault. A great orator in

Panditji could not however become a successful politician after the dawn of Independence. A man of independent views, with strong likes and dislikes over men and matters, he never found himself lonely within the Congress hierarchy. But the people who knew him do admire his courage of conviction; and salute him for the yeoman services he had rendered for their emancipation.

The People of erstwhile Hyderabad State shall never forget the 'little" Sher-e-Hyderabad, for all he did for them in their hours of trials and tribulations.

VETERAN CONGRESS LEADER

— P. Narsa Reddy

Sri, Pandit Narenderji was a veteran Congress Leader of erstwhile Hyderabad State since my student days. He was our Leader in the struggle for the formation of a responsible Government in the State. He had raised the banner of revolt against the despotic rule of the then Nizam of Hyderabad and fought for the merger of the State with the Indian Union. He was interned for 14 months in Mannanoor for taking up this cause. He was a close associate of the late Swami Ramanand Thirth. A powerful speaker and a devoted worker. He was a source of inspiration to one and all. His sacrificing nature could be understood from the point that inspite of all this public work, he gave the opportunity of coming to the Assembly on Congress ticket in favour of Sri Gopal Rao Ekbote purely on the ground that the latter was an Advocate and a good political worker and hence he would contribute to the Assembly more than himself.

A GREAT SOCIAL WORKER AND FREEDOM FIGHTER

— *Sri Venkatachalam*

"Nothing Short of true desh bhakti, which consists of the hankering after self and Power in favour of the unremunerative yet important and sacred task of working for the Welfare of our countrymen, can save us Genuine and selfless devotion for our desh ought to be the dharma, the noble mission of life of every one of us and in the service of our country we should spare neither money nor life".

These exhilarating words are of Lalalajapat Rai. the lion hearted patriot of india, who cheerfully sacrificed his life fighting for the freedom of his motherland.

Panditji is not only a Freedom fighter, he is a missionary of rare resoluteness and rectitude and whose lashing impress of his heart warming ideals and outstanding work on the social. educational. religious, economic and political life of our country leave remarkable footprints for coming generations to be followed His personality is all pervading in the country's life

It is impossible to think of a single public movement in which Panditji is not to be found. His love of service is insatiable.

He was born on APril 15 in Hyderabad. His father Shri Keshava Pershadji (alias Shamburaja) was a cultured and spirited person. He is a great admirer of Swami Dayanand Saraswathi.

In the early 20th century' Hindu society was full of superstitions and illiteracy. To introduce reforms in the degenerated beliefs and superstitions of Hindu society, to introduce reforms was his mission of life.

He was a fairly steady and intelligent student and used to participate in the discussions on religious and political subjects. His passion for reading books is one of his richest assets he possesses in his life. During the Pre Razakar period he was engaged in the political struggle of the former state of Hyderabad. but he never neglected the religious, social, educational or economic side of the State. He is a devout Hindu and feels Proud of that. His work for the Arya Samaj brought a great renaiscance of religious beliefs in the State in particular and in India in general. He believes that the fundamental task of a religion is the development of human personality.

Pandit Narenderji is a great social worker in the former State of Hyderabad (new Andhra Pradesh) and in other States of india He is among the first to collect funds for any good cause, be it famine relief work, orphanages, or any political or religious field.

He is actively associated with State Library movement and his services in this field are singularly eminent. His association with all the Arya Samaj Schools and Hindi Prachar Sabha and its activities are simply amazing He may be mentioned as a journalist for the reason that his contribution of articles on various topics of national integration and solidarity are well known to one and all of us. He is a believer in Hindu muslim unity while disliking bigotry and fanaticism of any people, be he a Hindu, a muslim or of any other community.

He courted imprisonment by boldly facing the Challenges of Br.tish beaurocracy. He stood the unwarranted test of

police excesses. He believes that unity is our heritage. His simplicity is very charming. His lucid and forcible speeches command great respect from listeners. Problems of our country are more complicated, more momentous than the problems in any other country. Of languages the most wonderful conglomeration is here. In Europe. political ideas form national unity. In Asia, religious ideas form the national unity. Swami Vivekananda has said that there must be the recognition throughout the length and breadth of this land of Rishi. What he meant by one religion is that Hinduism has certain common grounds, common to all our seats hower varying their conclusions may be however different their claims may be, So within the limitation, the religion of ours admits of a marvellous and infinite amount of liberty to think and live our own lizes. Panditji may be described to realise race-difficulties linguistic difficulties, social difficulties, national difficulties, all of which melt away before the unifying power of religion. Religious ideal is the Keynote of Indian life. Panditji is conscious of this ideal and works in the line of least resistance and believes it to be the highest ideal. He believes that our life blood is spirituality, and that if it flows strong and pure and vigorous, everything is right According to him there is a fundamental truth that if the religious ideal is strong, everything is right political, social and any other material defects, even the poverty of the land, will all be cured.

Language problem has, of late, assumed tremendous importance. It has created a crisis of the first magnitude between the north and south of our motherland. Panditji has been closely associated with the problem of Hindi as an all-India medium of inter course for several years now. Eight decades ago, when the urge to nation hood began to be articulate both the Sanskrit knowing and the English-building up a national medium out of this non - regional language. Swami Dayanandji Saraswati, the founder of the Arya Samaj was the first who used Hindi to carry his message to the to

masses in all. Parts of the country. Panditji. followed was the first to suit in Hyderabad. Shri T.T. Krishnamachary as the spokesman of the South. while accepting Hindi. was emphatic in his view that English should not be dropped as the official language till south accepted Hindi in its placc.

When the Constitution of India was inaugurated on 26th January 1950 fifteen years period was provided to prepare the country for the change over, Panditji may be mentioned as a staunch champion of this change over in the country.

PANDIT NARENDERJI

— *Ibrahim Ali Ansari*

Pandit Narenderji. a Veteran Congress Leader of erstwhile Hyderabad State was the backbone of the struggle for formation of responsible Government in the State. He fought relentlessly against the opressive Ruler the Ex-Nizam of Hyderabad and for the merger of the State with the Indian Union. He was one of the top and acknowledged leaders of the State. His rich experience sterling character and above all, indomitable courage will be immense value for the country as a whole.
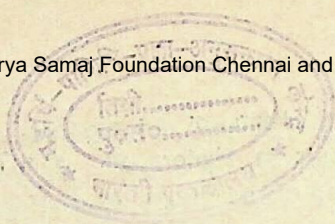
EXTRACTS FROM PANDIT NARENDERJI'S SPEECHES DURING NIZAM'S REGIME

1. "Our first step is to alter the map of Hyderabad. When we are successful in it no force of Government can check our onward march. (Applause) Government had to bow down before the demands of the people and lift the ban on the State Congress". The pangs of child-birth (reference: Reform Scheme) have started after Mr. Jinnah's arrival. A good nurse in his person had been engaged. But it cannot be said whether the child will be born dead or alive"............ We are asked to be faithful to Government and H.E.H. I proudly declare that I can ill afford to remain loyal when a secret Firman signed by Kazim Yar Jung can be given to Jinnah and when after the death of Bahdur Yar Jung the Ruler himself secretly guides the Ittehadul Muslmin How can I be faithful in the circumstances? I shall of course, remain a rebel. (Shehrewar 13, 1355 Fasli, Hashmat Gunj).

2. Likening the State Congress to a dead lion brought to life, he observed "one set the bones in position, another covered it with skin and yet another breathed life into it, with the result the evils, tyrannies, sins and Fascist mentalities devour not the Muslims but the tyrannies of Hyderabad which are being perpetrated on the peopje of Hyderabad" These Reforms are absolutely no good. They are being given us as a ding-doll is given to a prattling child. But those days are gone. The child has now grown up into an intelligent adult and is not to be so easily pleased or appeased. Far from accepting the ding-doll, he now wants to have the power of gifting away such dolls transferred to his hands. The Govern-

ment is perhaps desirous of appeasing the subjects with the present of a sugar or ding-doll. The people shall, however, continue to insist on their rights. Struggle has become inevitable. Every one of you has to play a soldier's part in it. "(Shehrewar 18, 1355 Fasli, Secunderabad).

3. "The objective — the sole objective — of the Hyderabad State Congress is the establishment in Hyderabad of the People's Government, of Responsible Government which would enable us to create strength and allay unrest of the people who on account of despotic rule are living in a State of helplessness and distress. We want to sweep these thing away and make Hyderabad a heaven where the people can. without distinction of nationality, of creed. colour or race, caste or community live in bliss".

"The State Congress never aimed, nor will ever aim. at establishing Hindu Raj in Hyderabad. The aim of the State Congress is clearly to have in Hyderabad neither Hindu Raj nor Osmanistan but the — People's Raj".

In 1906, attempts were made by the British Government to woo and seduce the Indian Muslim Community and a deputation was sent through Aga Khan. The Hyderabad Government is employing the same tactics here Parties are being created which are fed not on popular but on Government's canned milk. I would ask the Hindus and Muslims of Hyderabad Government, which is trying to sow the seeds of party dissenssions".

(Mehir 2. 1355 Fasli. Dhoolpet)

4. "On this day (9th August. 1942s a new chapter in India s may in the werld's revolutionary history was written in golden letters. This day gave a new direction to our lives and revolutionised our thoughts" Gentlemen; You know full well that our British masters came to India with a pair of scales in their hands, at the time when the Mughal Empire

was breathing its last. The very green grass on which these fellows stepped was scorched. The harm wrought by their pair of scales was comparatively far less than the damage which the sword of the Muslims caused from Arabia to Spain and China and from Spain to the last corner of fndia"-

In the wake of their advent into India came poverty. India lost her arts and sciences, darkness and ignorance began to spread. They collected India's wealth and exported it partly to America and partly to England, with the result that we were impoverished. In their efforts to gain a firm footing, they promoted class hatred and enmity.

They excited feelings of hatred among the Hindus and Muslims and instigated the Muslims to abuse Shivaji and the Hindus to call Aurangzeb a tyrant. That is how they began sowing seeds of dissention which they had brought with them from England and fed them with the manure of their diplomacy, of which Akhand Hindustan and Pakistan are the fruits". i had recently been out in the districts. They asked me about the State I live in. I told them that I live in Hyderabad, not in the constitutional State of Hyderabad, not under the Nizam's Government nor in Osman Ali Khan's Raj but in Police RyJ and under Policc tyranny. There is no constitutional Government in Hyderabad. From the days ef Asif Jah the First upto-date there has been and even uuder the rule of Asif Jah the Seventh there is, Poiice Raj in every corner of Hyderabad. "The slogan of 'Quit Kashmir' has reached our ears This is the only slogan which he have heard. We too must adopt and raise the same slogan. That is what a Prominent Indian has taught us to do. Some days ago my friend Mr. M.A. Jinnth had come here. "I call him my friend because I regard no-body as my enemy. He made a long speech at the Darus Salam. After having spoken of a few things here and there, he taught the audience Internal and International geography. Some youngsters made irresponsible speeches on the occasion." "What I mean is that the present autocracy of

Hyderabad should yield place to successful Responsible Government. Come let us rally round the State Congress banner in the spirit of 'Do or Die' and march ahead. No power, nor even the Hyderabad Government can in that case hamper our progress. Victory shall be yours" (Mehir 3, 1335 Fasli, Raghunath Bagh, Sultan Bazar.)

"I would rather picture Krishna as holding a flute in one hand and a sword in the other. These two things represent the teachings of Krishna's life. This flute symbolises his message of love and sword. of annthilation of Imperialism and on enemies". He who loves is constructive in outlook; Krishna's teachings is that of the flute; the other is that of the sword. which is meant to be wielded for the destruction of Imperialist Kings and of those who are out to cut loving men and the land into piaces. When the springs of love were in full play, Krishna taught the practice of love. A time came when he declared that the sword alone would avail. He wielded his Sudarshan Chakra (an offensive weapon of the boomear type and laid how imperialism and despotism".

The message of Krishna's flute breather love. It teaches both Hindus and Muslims to love each other. The Muslims, however are puffed up under the inelrhation of Pakistan" (Mehir, 13, 1335 Fasli, Sultan Bazar)

A MISSIQNARY OF SAMAJ

(An article written before Polic Action in Hyderabad.)

Baji Krishna Rao

One of the most sensational events in the history of the Hyderabad State in recent times was the arrest and internment of Pandit Narenderji, tbe famous missionnry of the Aryasamaj, carried out suddenly and with dramatic effect on Saturday last. At about 11 O' Clock on that day when Panditji was at

the residence of Pandit Vinayakraoji, Mr. Raghavendra Rao, Inspector, C.I.D Police, Hyderabad called on him and drew him into conversation about a copy of a newspaper which the latter (the Inspector) wanted a typical piece of Police tactics- and persuaded him to go out with him a few yards outside the house near to a lane in which there stood a motor car, not observable from the house. An Internment Order was shown and Panditji was placed in the car and spirited away to an unknown destination News of the incident spread like wildfire in the City and people heard of it with a shock and surprise. They began speculating about the place of detention of the Panditji In the evening of the next day, i.e, Sunday, a policeman came and asked for and took away the 'prisoner's' bedding and such other belongings. Already there were proceedings for being in possession of prescribed literature pending against him. Evidently, it was thought that some more drastic action than the probable rusult of the proceedings was considered necessary by the Administration. It could not be a case of deploration from the state, as the Panditji is a pucca Mulki - no Mulki is deported. It would be only a case of internment at the State Penal Settlement at Mannanoor near Lingal, in the Mahaboobnagar District; and it was so. Hindu shopkeepers observed a hartal which was only for a part of the day, as the police did not allow it to be longer. Some boys who took part in organising the hartal were subjected to typical treatment at the hands of the police, but the details are not at present available rumour was set about the next day (Monday) that Panditji had been set free and had returned to the metropolis It turned out to be false. It was the shadow of the coming events of Panditji being required as a defence witness in the Dhulpet Murder Case, now pending in the High Court. On Wednesday an application was made in the High Court for his being produced as a witness, and, orders have not been passed on it as yet. The arrest and internment form an important topic of conversation every where. It cannot be a topic of criticism in the State; and as the Go-

vernment is under no obligations to assign reasons for the step the public has to grope in the dark in knowing the purpose and policy of the Government in taking the step.

The following sketch of the life and work of the Panditji is therefore of interest as relating to a topic of the day and may be expected to be read by interest ;-

Birth and Education

Pandit Narender who is aged about 30 was born in a respectable Kayastha famila of the Saksean clan having their respecetral residence in Shah Ali Banda, Hyderabad City. His aged parents are living. His father is a Mansabdar of the Government. There are brothers and sisters. His elder brother, Mr Rajendra Prasad Saxena is an employee of the Government. Young Narendra studied upto the Matriculation standard with Urdu as his first language. During the latter end of his scholastic career he came under the influence of the Aryasamaj. One of the unbudgeted by-products of Urdu being the language of the State is that Hindu boys and girls in schools and colleges throughout the State get their minds saturated with the doctrines and aims and objects of the Aryasamaj the output of literature written by its members in Urdu being large and enthusiastically read by all classes of Hindus including the young men and women Pandit Narenderji is a typical product of this process After completing his education in Hyderabad, Panditji made up his mind to dedicate his life to the service of the Samaj by qualifying himself and working as one of its preachers. According by went to Lahore, joined the Aryasamaj Theological College for training missionaries and studied Aryan theology and learnt polemics of propaganda. On his return to Hyderabad about 10 years ago he joined the missionary staff of the Samaj and has been rendering meritorious services to the Church. He has chosen to live a Brahmacharian's life. If so that the commitments of family life might not be a handicap in carrying on his duties as a misssonary.

As Journalist, Author and Speaker

He conducted for about two years acting as editor, the Vedic Adarsh (in Urdu) till its publication was stopped by the

Government. He has written a number of books in Urdu, one of which "The light of the Veda in the Kuran" was prescribed by the Government. He is one of the best writers in Urdu in the State. As an orator he has no equal.

An Austere Arya

Pandit is extraoridinarily simple in his habits. Slim and short he has not the advantage of a tall stature and bulky body to add to the infiuance of his personality. Yet he has one of the most inspiring personalities and it is magnetic. He wears Khadhi dhoties, kurta and a Gandhi cap. He has the look of a martyr in him and has staff martyrs are made of.

As Missionary of the Samaj

He has rendered yeomen service to the cause of the Samaj by preaching in all the 16 districts of the State. The intelligent of the state. young and old adore of him and "worship" him here.

Panditjee's Loyalty

The write was present when gagging order to be in force for one year constained in His Exalted Highness Firman-e-Mubarik was served on Panditjee at the last anniversary meeting of the Secunderabad Aryasamaj. It conveying the news to the audience Panditjee said in a pathetic tone which was the last occasion of his adoressig them during the one year beginning from that day and that he would have to keep his lipes sealed. and our Soverign's had commanded him to do so, and that he submitted to the Sovereign's will as he would to the Divine will. The sentiments expressed breathed the spirit of deep and devoted loyalty to the person and minds of all who heared the announcement. And it is this Arya of Aryans who has been arrested and interned in Penal Settlement of the State.

Hartal

The Hindu shopkeepers in Hyderabad City observed a hartal to express their sarrow at the fate that overtook Panditjee, but the police made it the hartal a partial one and the shop were made to re-open. Some young members who went about calling on people to suspend business of all kinds and observe the hartal were "handled" by the police. The details of the manner of "handling" have not been obtained yet from a reliable source.